माहनामा

फ़ैज़ाने मदीना

FAIZAN E MADINA

फ़रमाने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

आंखें बन्द कर के रज़ा के पीछे पीछे चलते जाइए اِنْ شَآءَ اللّٰه ग़ौसे पाक के दामन तक पहुंच जाएंगे और ग़ौसे पाक अपने नानाजान, रह़मते आ़लमियान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़दमों तक ले जाएंगे।

मख़्लूक़ात में ग़ौरो फ़िक्र की क़ुरआनी तरग़ीबात 03
बचत मगर किस चीज़ की ? 19
इमामे अहले सुन्नत की महारत इ़ल्मे ह़दीस के दो पहलू 33
मदीनए मुनव्वरा के तारीख़ी व मुक़द्दस मक़ामात 40
बच्चों में स्क्रीन का बढ़ता हुवा रुज्ह़ान 47

नीन्द न आने का रूहानी इलाज

जिस को दर्द वग़ैरा के सबब नीन्द न आती हो तो उस के पास

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

कसरत से पढ़ने से उस को اِنْ شَآءَاللّٰه الکریم नीन्द आ जाएगी नीज़ अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की रहमत से मरीज़ जल्द सेहतयाब भी हो जाएगा। (मरीज़ को पढ़ने की आवाज़ न जाए इस की एहतियात कीजिए। (बीमार आबिद, स. 26)

यरक़ान (Jaundice) का रूहानी इलाज

يَاحَسِيْبُ

300 बार पढ़ कर पानी पर दम कर के 21 दिन तक पिलाने से اِنْ شَآءَاللّٰه الکریم यरक़ान से शिफ़ा हासिल होगी।

(बीमार आबिद, स. 30)

(नोट : वज़ीफ़े के अव्वल आख़िर में तीन तीन बार दुरूद शरीफ़ पढ़ना है)

गुमशुदा को बुलाने का रूहानी इलाज

एक बड़े काग़ज़ के चारों कोनों पर

يَاحَقُّ

लिख कर आधी रात को या किसी भी वक़्त दोनों हाथों पर रख कर खुले आस्मान तले खड़े हो कर दुआ कीजिए। اِنْ شَآءَاللّٰه الکریم या तो गुमशुदा फ़र्द जल्द वापस आ जाएगा या उस की ख़बर मिल जाएगी। (मुद्दत : ता हुसूले मुराद - मेंडक सुवार बिच्छू, स. 21)

क़र्ज़ से नजात का अ़मल

हर नमाज़ के बाद सात बार

सूरए कुरैश

पढ़ कर दुआ मांगिए।

पहाड़ जितना क़र्ज़ होगा तब भी اِنْ شَآءَاللّٰه الکریم अदा हो जाएगा। अ़मल ता हुसूले मुराद जारी रखिए।

(फ़ैज़ाने रमज़ान (मुरम्मम) स. 112)

(नोट : वज़ीफ़े के अव्वल आख़िर में तीन तीन बार दुरूद शरीफ़ पढ़ना है)

माहनामा
फ़ैज़ाने मदीना
Monthly Magazine
FAIZANE MADINA (HINDI)

ब फ़ैज़ाने नज़र
सिराजुल उम्मह, काशिफ़ुल गुम्मह,
इमामे आज़म फ़क़ीहे अफ़ख़म हज़रते सय्यिदुना
इमाम अबू हनीफ़ा नोमान बिन साबित رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه

ब फ़ैज़ाने करम
आला हज़रत इमामे अहले सुन्नत
मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह
इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه

माहनामा फ़ैज़ाने मदीना धूम मचाए घर घर
या रब जा कर इश्क़े नबी के जाम पिलाए घर घर
(अज : अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه)

PRINTER, PUBLISHER, EDITOR AND OWNER
HAMJANI SHABBIRBHAI RAJAKBHAI
BUTVALA'S CHAWL,
NR. CENTRAL WARE HOUSE,
DANILIMDA, AHMEDABAD-380028.
(GUJARAT)

PLACE OF PRINTING
MODERN ART PRINTERS
OPP : PATEL TEA STALL,
DABGARWAD NAKA,
DARIYAPUR, AHMEDABAD-380001.

bookmahnama@gmail.com

कुरआनो हदीस — मख़्लूक़ात में ग़ौरो फ़िक्र की कुरआनी तरग़ीबात (क़िस्त : 01) — 3
मस्जिद को ठिकाना बनाना — 6
फ़ैज़ाने सीरत — हज़रते सय्यिदुना इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام (चौथी और आख़िरी क़िस्त) — 9
फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत — सफ़र के महीने में क़ुरबानी का गोश्त इस्तिमाल करना कैसा ? मअ़ दीगर सुवालात — 13
दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत — अजीर पर छुट्टी या ताख़ीर का माली जुर्माना लगाना कैसा ? मअ़ दीगर सुवालात — 15
मज़ामीन — काम की बातें — 17
बचत मगर किस चीज़ की ? — 19 — पेशानी पर मेहराब — 21
सायए अर्श दिलाने वाली नेकियां (क़िस्त : 01) — 22 — इस्लाहे ख़ल्क़ और उसूले हिदायत — 24
बुज़ुर्गाने दीन की सीरत — हज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا — 27
हज़रते साइब बिन यज़ीद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا — 29 — आला हज़रत की हाज़िर जवाबी — 30
इमामे अहले सुन्नत की महारत इल्मे हदीस के दो पहलू — 33 — अपने बुज़ुर्गों को याद रखिए — 36
सेहत व तन्दुरुस्ती — रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ग़िज़ाएं (सरीद) — 38
मुतफ़र्रिक़ — मदीनए मुनव्वरा के तारीख़ी व मुक़द्दस मक़ामात — 40
क़ारेईन के सफ़हात — नए लिखारी — 42
बच्चों का "फ़ैज़ाने मदीना" — बड़ों की इज़्ज़त कीजिए / हुरूफ़ मिलाइए ! — 45
दस्ते मुबारक की बरकत — 46 — बच्चों में स्क्रीन का बढ़ता हुवा रुजहान — 47
इस्लामी बहनों का "फ़ैज़ाने मदीना"
उमूरे ख़ानादारी की तरबियत — 49 — इस्लामी बहनों के शरई मसाइल — 51

(क़िस्त : 01)

मख़्लूक़ात में ग़ौरो फ़िक्र की क़ुरआनी तरग़ीबात

क़ुरआने करीम में अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की वहदानिय्यत और क़ुदरते कामिला का बयान कई त़रह़ से हुवा है ? इसी बयान की तफ़्हीम के लिए कई अ़क़्ली दलाइल के ज़रीए मख़्लूक़ात में ग़ौरो फ़िक्र की दावत भी दी गई है। मख़्लूक़ाते इलाही में ग़ौरो फ़िक्र की अहमिय्यत व ज़रूरत और फ़वाइदो समरात नीज़ ग़ौरो फ़िक्र न करने पर वईदात का बयान गुज़श्ता मज़मून में हुवा। ज़ैल में इस ह़वाले से लिखा जा रहा है कि क़ुरआने करीम ने मख़्लूक़ात में ग़ौरो फ़िक्र करने पर किस किस अन्दाज़ में उभारा है ? ख़ास त़ौर पर मुन्किरीने क़ुदरते इलाही को अल्लाह के क़ादिरे मुत़्लक़ होने का यक़ीन ह़ासिल करने के लिए जो मख़्लूक़ात के मुशाहदे की तल्क़ीन की है, उस का अन्दाज़ क्या क्या है ? यहां येह फ़र्क़ वाज़ेह़ रहे कि मख़्लूक़ात में ग़ौरो फ़िक्र करने पर उभारना अलग मौज़ूअ़ है जब कि मुख़्तलिफ़ मख़्लूक़ात में से हर मख़्लूक़ के बारे में क़ुरआनी तालीमात जानना अलग मौज़ूअ़ है। ज़ैल में हमारा मौज़ूअ़ अव्वलुज़्ज़िक्र है।

क़ुरआने करीम ने मुख़्तलिफ़ मख़्लूक़ाते इलाही के ज़िक्र से ग़ौरो फ़िक्र पर उभारा है जिन में आस्मान, ज़मीन, नबातात, ह़ैवानात, रात दिन और दीगर कई मख़्लूक़ात शामिल हैं। हम इसे 11 निकात के तह़त बयान करेंगे :

1. आस्मानो ज़मीन की तख़्लीक़ में ग़ौरो फ़िक्र पर उभारना।
2. मराह़िले तख़्लीक़ में ग़ौरो फ़िक्र पर उभारना।
3. साए की तख़्लीक़ में ग़ौरो फ़िक्र पर उभारना।
4. परिन्दों की तख़्लीक़ में ग़ौरो फ़िक्र पर उभारना।
5. ज़मीन और नबातात की तख़्लीक़ में ग़ौरो फ़िक्र पर उभारना।
6. रात और दिन की तख़्लीक़ में ग़ौरो फ़िक्र पर उभारना।
7. तख़्लीक़ व तक़्सीमे रिज़्क़ में ग़ौरो फ़िक्र पर उभारना।
8. निज़ामे आब और खेती की तख़्लीक़ में ग़ौरो फ़िक्र पर उभारना।
9. अल्लाह की क़ुदरत व इख़्तियारात में ग़ौरो फ़िक्र पर उभारना।
10. चौपायों की तख़्लीक़ में ग़ौरो फ़िक्र पर उभारना।
11. ज़मीनो आस्मान की नेमतों की तख़्लीक़ में ग़ौरो फ़िक्र पर उभारना।

1 आस्मानो ज़मीन की तख़्लीक़ में ग़ौरो फ़िक्र पर उभारना

क़ुरआने करीम ने कई मक़ामात पर आस्मानो ज़मीन की तख़्लीक़ में ग़ौरो फ़िक्र करने पर मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ में उभारा है, चुनान्चे

सूरतुल आराफ़ में फ़रमाया :

﴿اَوَ لَمْ یَنْظُرُوْا فِیْ مَلَكُوْتِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَیْءٍ ۙ وَّ اَنْ عَسٰۤى اَنْ یَّكُوْنَ قَدِ اقْتَرَبَ اَجَلُهُمْ ۚ فَبِاَیِّ حَدِیْثٍۭ بَعْدَهٗ یُؤْمِنُوْنَ(۱۸۵)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : क्या उन्हों ने आस्मानों और ज़मीन की सल्त़नत और जो जो चीज़ अल्लाह ने पैदा की है उस में ग़ौर नहीं किया ? और इस बात में कि शायद उन की मुद्दत नज़दीक आ गई हो तो इस (क़ुरआन) के बाद और कौन सी बात पर ईमान लाएंगे ?[1]

येह आयते मुबारका वाज़ेह़ दावते तफ़क्कुर दे रही है कि क्या अल्लाह की वह़दानिय्यत और क़ुदरते कामिला के मुन्किर आस्मानों, ज़मीन और अल्लाह करीम की दीगर मख़्लूक़ात में ग़ौर नहीं करते, ताकि वोह उन के ज़रीए अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत व वह़दानिय्यत पर इस्तिदलाल करें क्यूंकि इन सब में अल्लाह तआ़ला की वह़दानिय्यत और ह़िक्मत व क़ुदरत के कमाल की बे शुमार रौशन दलीलें मौजूद हैं।

सूरए यूनुस में फ़रमाया :

﴿قُلِ انْظُرُوْا مَاذَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ देखो आस्मानों और ज़मीन में क्या क्या है।[2]

इस आयत में भी ज़मीन व आस्मान में अल्लाह तआ़ला की मख़्लूक़ात पर ग़ौरो फ़िक्र करने पर उभारा गया है, गोया फ़रमाया गया : ग़ौर करो कि आस्मानों और ज़मीन में तौह़ीदे बारी तआ़ला की क्या क्या निशानियां हैं, ऊपर सूरज और चांद हैं जो कि दिन और रात के आने की दलील हैं, सितारे हैं जो कि तुलूअ़ और ग़ुरूब होते हैं और अल्लाह तआ़ला आस्मान से बारिश नाज़िल फ़रमाता है। ज़मीन में पहाड़, दरिया, दफ़ीने, नहरें, दरख़्त नबातात येह सब अल्लाह तआ़ला के वाह़िद होने और उन का ख़ालिक़ होने पर दलालत करते हैं।[3]

कुफ़्फ़ारे मक्का मरने के बाद जी उठने के मुन्किर थे, क़ुरआने करीम ने इस अ़क़ीदे को बहुत बार और कई असालीब से बयान करते हुए ग़ौरो फ़िक्र पर उभारा है, चुनान्चे सूरए बनी इसराईल में है :

﴿اَوَ لَمْ یَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ قَادِرٌ عَلٰۤى اَنْ یَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ وَ جَعَلَ لَهُمْ اَجَلًا لَّا رَیْبَ فِیْهِ ؕ فَاَبَى الظّٰلِمُوْنَ اِلَّا كُفُوْرًا(۹۹)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और क्या वोह नहीं देखते कि वोह अल्लाह जिस ने आस्मान और ज़मीन बनाए उन लोगों की मिस्ल बना सकता है और उस ने उन के लिए एक मीआ़द ठहरा रखी है जिस में कुछ शुबा नहीं तो ज़ालिम नहीं मानते बे ना शुक्री किए।[4]

सूरतुल अह़क़ाफ़ में फ़रमाया :

﴿اَوَ لَمْ یَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ وَ لَمْ یَعْیَ بِخَلْقِهِنَّ بِقٰدِرٍ عَلٰۤى اَنْ یُّحْیِۦَ الْمَوْتٰى ؕ بَلٰۤى اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ(۳۳)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : क्या उन्हों ने न जाना कि वोह अल्लाह जिस ने आस्मान और ज़मीन बनाए और उन के बनाने में न थका क़ादिर है कि मुर्दे जिलाए (ज़िन्दा करे) क्यूं नहीं बेशक वोह सब कुछ कर सकता है।[5]

अ़क़ीदए आख़िरत के बारे में ग़ौरो फ़िक्र पर उभारने के लिए आस्मानो ज़मीन की तख़्लीक़ पर ग़ौर करने का फ़रमाया :

﴿اَوَ لَمْ یَتَفَكَّرُوْا ؕ فِیْۤ اَنْفُسِهِمْ ؕ مَا خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ وَ مَا بَیْنَهُمَاۤ اِلَّا بِالْحَقِّ وَ اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ وَ اِنَّ كَثِیْرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَآىِٕ رَبِّهِمْ لَكٰفِرُوْنَ(۸)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : क्या उन्हों ने अपने दिलों में ग़ौरो फ़िक्र नहीं किया कि अल्लाह ने आस्मानों और ज़मीन और जो कुछ उन के दरमियान है सब को ह़क़ और एक मुक़र्ररा मुद्दत के साथ पैदा किया और बेशक बहुत से लोग अपने रब से मिलने के मुन्किर हैं।[6]

इन आयात में ज़मीनो आस्मान की तख़्लीक़ और इस तख़्लीक़ से अ़दम थकावट का ज़िक्र करते हुए मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा करने की ताक़त व क़ुदरत की जानिब तवज्जोह मब्ज़ूल करवाई गई है और ग़ौरो फ़िक्र पर उभारा है कि जब अल्लाह तआ़ला ने किसी मिसाल के बिग़ैर पहली बार में आस्मान और ज़मीन जैसी अ़ज़ीम मख़्लूक़ बना दी और उन्हें बनाने में वोह हर थकावट से पाक है तो वोह ख़ालिक़ो मालिक जब आस्मानो ज़मीन बना सकता है क्या वोह मुर्दों को ज़िन्दा करने पर क़ादिर नहीं जो कि ज़मीन व आस्मान बनाने से ज़ाहिरन लोगों के एतिबार से कहीं आसान है, क्यूं नहीं, वोह ज़रूर इस पर क़ादिर है।[7]

ज़मीन व आस्मान की तख़्लीक़ात में ग़ौरो फ़िक्र करने और इस से नसीह़त व बसीरत पाने वालों को अ़क़्ल मन्द फ़रमाया गया है :

﴿اَفَلَمْ یَنْظُرُوْۤا اِلَى السَّمَآءِ فَوْقَهُمْ كَیْفَ بَنَیْنٰهَا وَ زَیَّنّٰهَا وَ مَا لَهَا مِنْ فُرُوْجٍ(۶) وَ الْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَ اَلْقَیْنَا فِیْهَا رَوَاسِیَ وَ اَنْۢبَتْنَا فِیْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍۭ بَهِیْجٍ(۷) تَبْصِرَةً وَّ ذِكْرٰى لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِیْبٍ(۸)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो क्या उन्हों ने अपने ऊपर आस्मान को न देखा हम ने उसे कैसे बनाया और सजाया और उस में कहीं कोई शिगाफ़ नहीं। और ज़मीन को हम ने फैलाया और उस में मज़बूत़ पहाड़ डाले और उस में हर बा रौनक़ जोड़ा उगाया। हर रुजूअ़ करने वाले बन्दे के लिए बसीरत और नसीह़त के लिए।[8]

यहां कुफ़्फ़ार को ग़ौरो फ़िक्र पर उभारा गया है कि जब काफ़िरों ने मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा किए जाने का इन्कार किया उस वक़्त क्या उन्हों ने अपने ऊपर आस्मान को न देखा जिस की तख़्लीक़ में हमारी क़ुदरत के आसार नुमायां हैं ताकि वोह इस बात में ग़ौर करते कि हम ने उसे कैसे ऊंचा और बड़ा बनाया और सुतूनों के बिग़ैर बुलन्द किया और इसे रौशन सितारों से सजाया और उस में कहीं कोई शिगाफ़ नहीं, कहीं कोई ऐ़ब और कमी नहीं। तो जो रब तआ़ला इतने बड़े आस्मान को बना सकता है और ज़ाहिरी अस्बाब के बिग़ैर उसे बुलन्द कर सकता और उस में सितारों को रौशन कर सकता है और इतने त़वील व अ़रीज़ आस्मान को किसी शिगाफ़ और नुक़्स व ऐ़ब के बिग़ैर बना सकता है वोही रब तआ़ला मुर्दों को दोबारा ज़िन्दा कर दे तो इस में क्या बईद है ?[9] और क्या उन काफ़िरों ने ज़मीन की त़रफ़ नहीं देखा कि हम ने ज़मीन को पानी की सत़ह़ पर इस त़रह़ फैलाया कि पानी में घुल कर फ़ना नहीं होती वरना मिट्टी पानी में घुल जाती है और ज़मीन पर बड़े बड़े पहाड़ खड़े कर दिए हैं ताकि ज़मीन क़ाइम रहे और इस में हर सब्ज़े, फलों और फूलों के जोड़े उगाए जो देखने में ख़ूब सूरत लगते हैं तो जो रब तआ़ला ज़मीन को पैदा फ़रमा सकता, पहाड़ों के ज़रीए़ उसे क़ाइम रख सकता और उस में नश्वो नुमा की क़ुव्वत पैदा कर सकता है तो मुर्दों को दोबारा ज़िन्दा कर देना उस की क़ुदरत से कहां बईद है।[10]

﴿اَلَمْ تَرَوْا كَیْفَ خَلَقَ اللّٰهُ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًاۙ(۱۵) وَّ جَعَلَ الْقَمَرَ فِیْهِنَّ نُوْرًا وَّ جَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا(۱۶)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : क्या तुम ने देखा नहीं कि अल्लाह ने एक दूसरे के ऊपर कैसे सात आस्मान बनाए ? और उन में चान्द को रौशन किया और सूरज को चराग़ बनाया।[11]

इस आयत में भी बहुत ख़ूब दावते तफ़क्कुर है कि क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह तआ़ला ने एक दूसरे के ऊपर कैसे सात आस्मान बनाए और इन आस्मानों में चान्द को रौशन किया और सूरज को चराग़ बनाया कि वोह दुन्या को रौशन करता है और दुन्या वाले इस की रौशनी में ऐसे ही देखते हैं जैसे घर वाले चराग़ की रौशनी में देखते हैं। सूरज की रौशनी चान्द के नूर से मज़बूत़ तर है।[12]

एक मक़ाम पर ऊंट, आस्मान, पहाड़ और ज़मीन की तख़्लीक़ पर ग़ौरो फ़िक्र करने पर उभारते हुए फ़रमाया :

﴿اَفَلَا یَنْظُرُوْنَ اِلَى الْاِبِلِ كَیْفَ خُلِقَتْ(۱۷) وَ اِلَى السَّمَآءِ كَیْفَ رُفِعَتْ(۱۸) وَ اِلَى الْجِبَالِ كَیْفَ نُصِبَتْ(۱۹) وَ اِلَى الْاَرْضِ كَیْفَ سُطِحَتْ(۲۰)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो क्या वोह ऊंट को नहीं देखते कि कैसा बनाया गया है। और आस्मान को, कैसा ऊंचा किया गया है। और पहाड़ों को, कैसे क़ाइम किया गया है। और ज़मीन को, कैसे बिछाई गई है।[13]

जन्नती नेमतों और क़ुदरते इलाही के दीगर शाहकारों के मुन्किरीन बे दीनों को ग़ौरो फ़िक्र पर उभारा कि ग़ौर करें और समझें कि जिस क़ादिर ह़कीम ने दुन्या में ऐसी अ़जीबो ग़रीब चीज़ें पैदा की हैं, उस की क़ुदरत से जन्नती नेमतों का पैदा फ़रमाना किस त़रह़ क़ाबिले तअ़ज्जुब और लाइक़े इन्कार हो सकता है। क्या येह ऊंट को नहीं देखते कि कैसा बनाया गया ? आस्मान को कैसे सुतूनों और किसी सहारे के बिग़ैर ऊंचा किया गया, क्या उन्हों ने पहाड़ों को नहीं देखा जिन्हें ज़मीन में नस्ब कर दिया गया कि ज़मीन के लिए सहारा और इस के लिए मीख़ों के क़ाइम मक़ाम हैं। अगर येह मुन्किरीन साफ़ दिल से सोचें और सच्ची निगाह से देखें तो अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत को फ़ौरन तस्लीम करें।

(बक़िय्या अगले माह के शुमारे में)

---

(1)پ9، الاعراف:185(2)پ11، یونس:101(3)تفسیر کبیر، 6/306، یونس، تحت الآیۃ:101-خازن،2/336،یونس، تحت الآیۃ:101ملتقطاً(4)پ15، بنی اسرآءیل:99(5)پ26، الاحقاف:33(6)پ21، الروم:8(7)صراط الجنان، 9/278(8)پ26، قٓ:6تا8(9)مدارک،ص1160،قٓ،تحت الآیۃ:6-روح البیان، 9/106،قٓ،تحت الآیۃ:6ملتقطاً(10)جمل،7/258،قٓ،تحت الآیۃ: 7-روح البیان، 9/107،قٓ، تحت الآیۃ:7ملتقطاً-صراط الجنان، 9/458(11)پ29، نوح:15تا16(12)مدارک،ص1284، نوح، تحت الآیۃ:15، 16-خازن، 4/313،نوح، تحت الآیۃ:15، 16- البحر المحیط،8/334،نوح، تحت الآیۃ:15، 16ملتقطاً(13)پ30،الغاشیۃ:17تا20-

लो मदीने का फूल लाया हूं मैं हदीसे रसूल लाया हूं
(अज़ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه)

शर्हे हदीसे रसूल

मस्जिद को ठिकाना बनाना

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

مَا تَوَطَّنَ رَجُلٌ مُسْلِمٌ الْمَسَاجِدَ لِلصَّلَاةِ وَالذِّكْرِ اِلَّا تَبَشْبَشَ اللّٰهُ لَهُ كَمَا يَتَبَشْبَشُ اَهْلُ الْغَائِبِ بِغَائِبِهِمْ اِذَا قَدِمَ عَلَيْهِمْ

तर्जमा : जब कोई मुसलमान नमाज़ और ज़िक्र के लिए मस्जिद को ठिकाना बना लेता है तो अल्लाह करीम उस से ऐसे ख़ुश होता है जैसे किसी ग़ाइब के घर वाले उस के आने पर ख़ुश होते हैं।[1]

शर्हे हदीस

1 मस्जिद को ठिकाना बनाना : इस से मुराद मस्जिद में हाज़िर होने को अपने ऊपर लाज़िम कर लेना है, येह नहीं कि मस्जिद में अपने लिए एक जगह ख़ास कर ली जाए क्यूंकि एक और हदीसे पाक में इस से मन्अ किया गया है।[2]

मिरक़ातुल मफ़ातीह में है : मस्जिद को ठिकाना बनाने के फ़ज़ाइल नमाज़ और ज़िक्रुल्लाह के लिए हैं न कि दुन्यावी अग़राज़ व मक़ासिद और नफ़्सानी लज़्ज़तों के लिए।[3]

शरई ज़रूरत की वजह से जगह ख़ास करना कैसा ?

हज़रत अलहाज मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस हदीसे मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : मस्जिद में अपने लिए कोई जगह ख़ास कर लेना कि और जगह नमाज़ में दिल ही न लगे मकरूह है, हां शरई ज़रूरत के लिए जगह मुक़र्रर कर लेना जाइज़ है, जैसे इमाम के लिए महराब मुक़र्रर है और बाज़ मस्जिदों में मुकब्बिर (तक्बीर कहने वाले) के लिए इमाम के पीछे की जगह, उन्हें भी चाहिए कि सुन्नतें और नफ़्ल कुछ हट कर पढ़ें, मस्जिद में जिस जगह जो पहले पहुंचे वहां का वोही मुस्तहिक़ है। बाज़ सलातीने इस्लामिय्या ख़ास इमाम के पीछे अपने लिए जगह रखते थे वोह माज़ूरी की बिना पर था क्यूंकि और जगह उन्हें जान का ख़तरा था। यहां बा क़ाइदा उन की हिफ़ाज़त का इन्तिज़ाम होता था लिहाज़ा वोह इस हुक्म से उज़रन मुस्तसना (यानी मजबूरी की वजह से वोह हुक्मरान इस हुक्मे शरई में दाख़िल नहीं) हैं।[4]

2 रब्बे काइनात का ख़ुश होना : रब्बे करीम के ख़ुश होने से मुराद येह है कि अल्लाह करीम उस बन्दे पर नज़रे रहमत फ़रमाता है और उसे भलाई और इन्आमो इकराम से नवाज़ता है।[5]

3 ग़ाइब से मुराद : ग़ाइब "ग़ैब" से बना है और ग़ैब से मुराद वोह है जो आंखों से ओझल हो, चाहे इन्सान के दिल में मौजूद हो या न हो।[6] यहां ग़ाइब से मुराद गुमशुदा शख़्स भी हो सकता है और देर बाद मिलने

वाला भी।

शर्ह़ का ख़ुलासा : अल्लाह रब्बुल आ़लमीन मस्जिद में कसरत से ह़ाज़िर रहने वाले मुसलमान से ऐसा ख़ुश होता है जैसे कोई इन्सान अपने प्यारे को एक अ़र्से बाद मिल कर ख़ुश होता है। रब्बे करीम अपने बन्दे से राज़ी हो कर इन्आ़मो इकराम अ़त़ा फ़रमाता है।

मस्जिद की मर्कज़ी अहमिय्यत

इस्लामी मुआ़शरे में मस्जिद को मर्कज़ी अहमिय्यत ह़ासिल है। मस्जिद बनाने, इस की देख भाल और ख़िदमत करने, मस्जिद से मह़ब्बत करने, उस की त़रफ़ चलने, उस में नमाज़ अदा करने, एतिकाफ़ करने और दीगर इ़बादतों के बहुत से फ़ज़ाइलो फ़वाइद अह़ादीसे मुबारका में बयान हुए हैं। एक ह़दीसे पाक में है : बेशक कुछ लोग मसाजिद के सुतून होते हैं, फ़िरिश्ते उन के हम नशीन होते हैं अगर वोह ग़ाइब हो जाएं तो फ़िरिश्ते उन्हें तलाश करते हैं और अगर बीमार हों तो उन की इ़यादत करते हैं और अगर उन्हें कोई ह़ाजत दरपेश हो तो उन की मदद करते हैं।[7]

मछली पानी में

सूफ़ियाए किराम फ़रमाते हैं कि मोमिन मस्जिद में ऐसा होता है जैसे मछली पानी में और मुनाफ़िक़ ऐसा जैसे चिड़िया पिंजरे में। इसी लिए नमाज़ के बाद बिला वजह फ़ौरन मस्जिद से भाग जाना अच्छा नहीं, ख़ुदा तौफ़ीक़ दे तो मस्जिद में पहले आओ और बाद में जाओ, और जब बाहर रहो तो कान अज़ान की त़रफ़ लगे रहें कि कब अज़ान हो और मस्जिद को जाएं।[8]

हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم को मस्जिद से कितनी मह़ब्बत होती थी इस की चन्द झल्कियां देखिए :

40 साल मस्जिद में अज़ान सुनी

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के आज़ाद कर्दा ग़ुलाम ह़ज़रते सय्यिदुना बुर्द رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बयान करते हैं : 40 साल से कभी ऐसा नहीं हुवा कि अज़ान के वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मस्जिद में न हों।[9]

क्या मस्जिद से बेहतर भी कोई जगह है ?

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मुन्कदिर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ियाद बिन अबू ज़ियाद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को देखा कि वोह मस्जिद में बैठे इस त़रह़ अपने नफ़्स का मुह़ासबा फ़रमा रहे थे कि बैठ जा ! तू कहां जाना चाहता है, क्यूं जाना चाहता है ? क्या मस्जिद से भी बेहतर कोई जगह है जहां तू जाना चाहता है ? देख तो सही ! यहां रह़मतों की कैसी बरसात है ? जब कि तू चाहता है कि बाहर जा कर कभी किसी के घर को देखे, कभी किसी के घर को !"[10]

अ़स्र ता मग़रिब मस्जिद में ठेहरते

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़स्सान बिन अ़त़िय्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه नमाज़े अ़स्र के बाद मस्जिद में ज़िक्रुल्लाह में मश्ग़ूल रहते यहां तक कि सूरज ग़ुरूब हो जाता।[11]

मस्जिद में ह़ाज़िरी के ज़िम्नी फ़वाइद

मस्जिद में ह़ाज़िरी के बहुत सारे ज़िम्नी फ़वाइद भी हैं, मसलन : एक दूसरे के ह़ालात से आगाही रहती है, समाजी रिश्ते मज़बूत़ होते हैं, नए तअ़ल्लुक़ात बनते हैं, सफ़ाई पसन्दी की तरबियत मिलती है, गालम गलोच, झूट, ग़ीबत जैसे बहुत से गुनाहों से बचने की मश्क़ होती है। इस के इ़लावा भी ह़स्बे मौक़अ़, ह़स्बे ह़ाल ज़िम्नी फ़वाइद ह़ासिल होते हैं जिस से हमारी मुआ़शरती ज़िन्दगी बेहतर होती है।

दौरे नबवी में मस्जिद की रौनक़ें

अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पाकीज़ा दौर में मस्जिद की रौनक़ें उ़रूज पर थीं क्यूंकि कोई मुसलमान मस्जिद में ह़ाज़िरी से पीछे नहीं रहता था। बा जमाअ़त नमाज़ें अदा होतीं, तिलावते क़ुरआन की जाती, इ़ल्मे दीन सिखाया जाता, मुजाहिदीन व मुबल्लिग़ीने इस्लाम के लश्कर तरतीब पाते, बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर होने वाले मुख़्तलिफ़ वुफ़ूद को ठहराया जाता जहां हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन से मुलाक़ात फ़रमाया करते, सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم शरीअ़त सीखने के लिए सोह़बते नबवी पाया करते थे।

रौनक़ कैसे कम हुई ?

सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم के दौर तक 100 फ़ीसद मुसलमान नमाज़ पढ़ते थे । उन का दौर बहुत सुन्हरी दौर था । फिर ताबेईन का दौर आया उस में भी कसीर तादाद नमाज़ पढ़ती थी लेकिन येह ज़माना सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم के ज़माने जैसा नहीं था, इस के बाद तबए ताबेईन का ज़माना आया येह भी प्यारा दौर था इन तीन अदवार को क़ुरूने सलासा कहा जाता है इन में मसाजिद आबाद होती थीं फ़ासिक़ और गुनाहगार कम थे लेकिन बाद में जैसे जैसे दूरी होती गई गुनाहों का सिलसिला बढ़ता गया नमाज़ियों की तादाद भी कम हो गई और मुसलसल कम होती जा रही है ।[12]

अब सूरते हाल येह है कि 2021 ईसवी के एक सर्वे के मुताबिक़ दुन्या में तक़रीबन 3.6 मिल्यन यानी 36 लाख मसाजिद हैं । (WEB : TRT Word) और 2 अरब से ज़ाइद मुसलमान हैं । (WEB : worldpopulationreview) लेकिन बहुत ही कम मुसलमान नमाज़े बा जमाअ़त के लिए मस्जिद में पहुंचते हैं हालांकि आज कसीर मसाजिद में एयर कन्डीशन, हीटर और वुज़ू वग़ैरा के लिए जैसी जदीद और वसीअ़ सहूलतें मौजूद हैं उन का माज़ी में तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता था ।

मस्जिद तो बना दी शब भर में ईमां की हरारत वालों ने
मन अपना पुराना पापी है बर्सों में नमाज़ी बन न सका

हमारा शुमार किन में होता है ?

हम में से हर एक को ग़ौर करना चाहिए कि हमारा शुमार मस्जिद जाने वालों में होता है या न जाने वालों में ? अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता मस्जिद में बा जमाअ़त नमाज़ और दीगर इबादतें हमारा मामूल नहीं हैं तो सुस्ती और ग़फ़्लत छोड़ कर आज और अभी से सम्भल जाइए, बल्कि अपने घर वालों और आस पड़ोस को भी नेकी की दावत पेश कीजिए क्यूंकि मस्जिदें हमारी हैं, अगर हम इन्हें बा रौनक़ नहीं बनाएंगे तो कौन बनाएगा ! शैख़े तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत हज़रते अ़ल्लामा मुहम्मद इल्यास क़ादिरी रज़वी دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ ने अपना वाक़िआ़ बताया कि اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ मेरा दावते इस्लामी बनने से पहले भी नमाज़ों की तरग़ीब दिलाने का मामूल था । उस वक़्त मैं ने एक इस्लामी भाई पर इन्फ़िरादी कोशिश की और नमाज़ की दावत देते हुए कहा कि मैं फ़ज्र में आप को जगाने के लिए आऊंगा या किसी को भेजूंगा चुनान्चे जब हम उन के घर जगाने के लिए पहुंचे तो वोह इस्लामी भाई पहले ही अपने घर की बालकनी में खड़े हमारा इन्तिज़ार कर रहे थे यानी हमारे जगाने से पहले ही वोह जाग चुके थे । इस वाक़िए से मालूम हुवा कि हम जिस को येह कहें कि आप को जगाने के लिए आएंगे तो वोह नफ़्सियाती असर होने की वजह से बे चैन होता है कि कहीं फ़ुलां इस्लामी भाई मुझे जगाने आएं और मेरी आंख ही न खुले तो वोह क्या सोचेंगे ? इसी वजह से वोह पहले ही उठ जाता है ।[13]

क़ारेईन ! हर काम का तरीक़ा होता है येह सीखने के लिए नमाज़ी बनाने और सुन्नतें सिखाने वाली तन्ज़ीम "दावते इस्लामी" से वाबस्ता हो जाइए । दावते इस्लामी ने मस्जिद भरो तहरीक चला रखी है, येह अक्सर दीनी कामों के लिए मसाजिद का ही इन्तिख़ाब करती है । हफ़्तावार इज्तिमाअ़, मदनी मुज़ाकरा, इज्तिमाई एतिकाफ़ हो या नमाज़ व दीगर शरई मसाइल सिखाने के मुख़्तलिफ़ कोर्सिज़, मदनी क़ाफ़िलों की आमदो रफ़्त और ठहरने का इन्तिज़ाम भी मस्जिद में होता है ।

मुझे मस्जिदों से दे उल्फ़त इलाही !
करूं ख़ूब तेरी इबादत इलाही !
येह दिल मेरा मस्जिद में लग जाए या रब !
न सुस्ती तेरे ज़िक्र में आए या रब ![14]

---

(1)ابن ماجہ، 1/438، حدیث:800 (2)شرح ابن ماجہ للسیوطی، ص360 (3)مرقاۃ المفاتیح، 2/385 (4)مرآۃ المناجیح، 2/87 (5)تیسیر شرح جامع صغیر، 2/347 (6)النہایہ فی غریب الحدیث والاثر، 3/357 (7)مستدرک، 3/162، حدیث:3559 (8)مرآۃ المناجیح، 1/435 (9)حلیۃ الاولیاء، 2/186، رقم:1874 (10)ذم الھوی، ص55 (11)سیر اعلام النبلاء، 6/244 (12)دیکھئے: ملفوظاتِ امیر اہلسنّت، 2/440 (13)ملفوظاتِ امیر اہلسنت، 2/441 (14)فیضانِ نماز، ص235، 236۔

(चौथी और आख़िरी क़िस्त़)

ह़ज़रते सय्यिदुना इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام

बादशाह के नाम पैग़ाम लोगों ने बादशाह को कहा : तू ने (ह़ज़रते) इल्यास को क़त्ल नहीं किया था इस की वजह से तुम पर बअ़ल नाराज़ हो गया है, बादशाह ने जवाब दिया : मैं अपने ख़ुदा को ख़ुश करूंगा । फिर बादशाह ने अपने 400 क़ासिदों को दूसरे बात़िल माबूदों के पास भेजा कि वहां जा कर बेटे की सेह़तयाबी की सिफ़ारिश करें, जब येह लोग उस पहाड़ के क़रीब पहुंचे जहां ह़ज़रते इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام रहते थे तो अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से आप को पहाड़ से उतरने का ह़ुक्म हुवा, आप पहाड़ से नीचे उतर आए, फिर जब उन लोगों से मिले तो फ़रमाया : मुझे अल्लाह ने भेजा है ऐ लोगो ! ग़ौर से अल्लाह करीम का पैग़ाम सुनना और अपने बादशाह तक इस पैग़ाम को पहुंचा देना अल्लाह करीम इरशाद फ़रमाता है "क्या तू नहीं जानता कि मैं ही बनी इसराईल का एक ख़ुदा हूं जिस ने उन्हें पैदा किया उन्हें रिज़्क़ दिया मैं ही उन को ज़िन्दगी और मौत देता हूं, तेरी कम इल्मी और जहालत ने तुझे इस बात पर उभारा है कि तू मेरे साथ किसी और को शरीक ठहराए मैं तेरे बेटे को ज़रूर मौत दूंगा ताकि तू जान ले कि मेरे इलावा कोई भी किसी चीज़ का मालिक नहीं है" अल्लाह का येह पैग़ाम सुन कर आप عَلَيْهِ السَّلَام का रोब व दबदबा उन के दिलों में बैठ गया आख़िरे कार बादशाह के पास वापस पहुंचे और उसे बताया : ह़ज़रते इल्यास पहाड़ से उतर कर नीचे आए थे क़द लम्बा और बदन दुब्ला पतला था खाल खुरदुरी और ख़ुश्क थी[1] ऊन का जुब्बा पहना हुवा था जब कि एक चादर सीने पर लटकी हुई थी उन का रोब व दबदबा हमारे दिलों पर छा गया हमारी ज़ुबानें गुंग हो गईं वोह अकेले थे और हम बहुत ज़ियादा लेकिन फिर भी हम न उन से बात करने पर क़ादिर हो सके और न उन से नज़र मिला पाए फिर ह़ज़रते इल्यास का पैग़ाम बादशाह को सुना दिया ।

बादशाह का मक्रो फ़रेब बादशाह कहने लगा : अब कोई मक्रो फ़रेब कर के ह़ज़रते इल्यास को क़ैद करना पड़ेगा, लिहाज़ा बादशाह ने 50 इन्तिहाई त़ाक़तवर लोगों को मुन्तख़ब किया और मक्रो फ़रेब सिखा कर भेज दिया, येह लोग उस पहाड़ पर पहुंचे और सब अलग अलग हो गए फिर ह़ज़रते इल्यास को पुकारने लगे : ऐ अल्लाह के नबी ! हमारे सामने आ जाइए हम और हमारा बादशाह आप पर ईमान ला चुका है क़ौम आप को सलाम कह रही है आप के रब का पैग़ाम हम तक पहुंच चुका है, हम आप की नेकी की दावत को क़बूल करते हैं हमारे पास तशरीफ़ लाइए आप रब के रसूल और नबी हैं हमारे पास आ कर हमें अच्छी बातों का ह़ुक्म दीजिए हम आप की फ़रमां बरदारी करेंगे आप जिन बातों से रोकेंगे हम रुक जाएंगे । येह लोग इसी त़रह़ मक्रो फ़रेब करते हुए ह़ज़रते इल्यास को तलाश करते और पुकारते रहे ।

फ़रेब का पर्दा चाक हुवा आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उन लोगों की बातें सुनी तो आप के दिल में उन लोगों के ईमान लाने की उम्मीद पैदा हो गई, आप ने अल्लाह से दुआ़ की : ऐ अल्लाह ! अगर येह लोग सच्चे हैं तो तू मुझे इजाज़त अ़त़ा फ़रमा कि मैं उन के सामने आ जाऊं, अगर

येह झूटे हैं तो मुझे इन से छुटकारा दे और इन पर आग फेंक कर इन्हें जला दे। आप की दुआ क़बूल हुई और एक आग उन सब पर नाज़िल हुई जिस ने उन्हें जला कर राख बना दिया।[2]

बादशाह की दूसरी चाल बादशाह को उन सब के मर जाने की ख़बर पहुंच गई लेकिन अपनी हट धर्मी से बाज़ न आया और मक्रो फ़रेब की दूसरी चाल चली जिस से आप عَلَيْهِ السَّلَام को अपनी क़ैद में ला सके, बादशाह ने फिर से 50 ज़ियादा ताक़तवर और मज़बूत अफ़राद लिए और उन्हें फ़रेब का तरीक़ा समझा कर पहाड़ की जानिब भेज दिया, येह लोग पहाड़ के क़रीब पहुंच कर बिखर गए और आप को तलाश करते हुए कहने लगे : ऐ अल्लाह के नबी ! हम अल्लाह की पनाह चाहते हैं हम पहले वाले लोग नहीं हैं पहले वाले तो मुनाफ़िक़ थे वोह हम से और आप से हसद रखते थे हम उन के बारे में नहीं जानते थे अगर हमें उन के बारे में मालूमात होतीं तो हम उन्हें ख़ुद अपने हाथों से क़त्ल कर देते अल्लाह ने उन को उन की बुरी निय्यतों की वजह से हलाक कर दिया और हमारा और आप का उन से बदला ले लिया।

चाल उल्टी हो गई आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उन की बातें सुनी तो फिर अल्लाह की बारगाह में वोही दुआ की : ऐ अल्लाह ! अगर येह लोग सच्चे हैं तो तू मुझे इजाज़त अ़ता फ़रमा कि मैं उन के सामने आ जाऊं, अगर येह झूटे हैं तो मुझे उन से छुटकारा दे और उन पर आग फेंक कर उन्हें जला दे, अल्लाह ने उन पर आग बरसा दी जिस से येह सब भी जल भुन गए। दूसरी जानिब बादशाह के बेटे की तक्लीफ़ और बढ़ गई।

बादशाह का नया जाल बादशाह को जब ख़बर मिली कि उस के भेजे हुए आदमी फिर से हलाक कर दिए गए तो उस का ग़ुस्सा और बढ़ गया उस ने ख़ुद हज़रते इल्यास की तलाश में निकलना चाहा लेकिन बेटे की बीमारी के सबब रुक गया, आख़िरे कार मक्रो फ़रेब का नया जाल बुनते हुए उस ने हज़रते इल्यास पर ईमान लाए हुए एक मोमिन की तरफ़ तवज्जोह की और उसे यक़ीन दिलाते हुए कहा : हज़रते इल्यास के पास जाओ और कहो कि बादशाह और क़ौम ने तौबा कर ली है और शर्मिन्दा हैं और येह भी कहो कि हम अपने बातिल माबूदों को छोड़ चुके हैं हमारी तौबा उसी वक़्त सच्ची होगी जब हज़रते इल्यास हमारे पास आएंगे और बुरी बातों से रोकेंगे और वोह बातें बताएंगे जिन से हम अल्लाह को राज़ी कर सकें, हम अपने माबूदों से अलग हो रहे हैं जब हज़रते इल्यास आएंगे तो वोही अपने हाथों से उन माबूदों को आग लगाएंगे। इस के बाद बादशाह ने हुक्म दिया कि सब लोग अपने माबूदों से अलग हो जाएं।[3]

हज़रते इल्यास शाही दरबार में वोह मुसलमान मर्द पहाड़ पर चढ़ गया और हज़रते इल्यास को आवाज़ें दीं, हज़रते इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام ने उस मुसलमान मर्द की आवाज़ को पहचान लिया और दिल में उस से मुलाक़ात का शोक़ पैदा हुवा, अल्लाह की तरफ़ से वही आई : अपने नेक भाई के पास जाओ और उस से मुलाक़ात कर लो, चुनान्चे आप उस मुसलमान के सामने ज़ाहिर हो गए सलाम और ख़ैरो ख़ैरिय्यत पूछने के बाद फ़रमाया : क्या ख़बर है ? मुसलमान मर्द ने कहा : ज़ालिम बादशाह और उस की क़ौम ने मुझे आप के पास भेजा है मुझे डर है कि अगर अकेला जाऊंगा तो वोह मुझे क़त्ल कर देंगे अब आप मुझे हुक्म दीजिए कि मैं क्या करूं, अकेला चला जाऊं और क़त्ल हो जाऊं या फिर सब कुछ छोड़ छाड़ कर आप के साथ रहने लग जाऊं ? आप عَلَيْهِ السَّلَام पर वही नाज़िल हुई : इस मर्द के साथ चले जाओ, बादशाह के नज़दीक इस का उ़ज़्र क़ाबिले क़बूल हो जाएगा, मैं बादशाह के बेटे की तक्लीफ़ को बढ़ा दूंगा बादशाह किसी और की तरफ़ तवज्जोह न कर पाएगा और उस के बेटे को बुरी मौत दूंगा फिर तुम वहां मत रुकना और वापस आ जाना, आप عَلَيْهِ السَّلَام उस मुसलमान मर्द के साथ चल दिए जब बादशाह के सामने पहुंचे तो अल्लाह करीम ने बादशाह के बेटे की तक्लीफ़ को बढ़ा दिया फिर उसे मौत के शिकन्जे में जकड़ दिया, बादशाह और उस के सब दरबारियों की तवज्जोह हज़रते इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام से हट गई यूं आप अल्लाह की रहमत से ब ख़ैरो आफ़िय्यत वापस तशरीफ़ ले आए और उस मुसलमान मर्द की जान भी बच गई।[4]

बीबी मता ने नबी की ख़िदमत का शरफ़ पाया फिर पहाड़ पर रहते हुए आप को काफ़ी वक़्त गुज़र गया तो आप पहाड़ से नीचे तशरीफ़ लाए और बनी इसराईल की एक मता नामी मोमिना औरत के घर पहुंचे, येह मोमिना औरत हज़रते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام की वालिदा थीं, जिस दिन हज़रते इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام उन के घर पहुंचे उसी दिन

ह़ज़रते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام की पैदाइश हुई, बीबी मता ने ह़ज़रते इल्यास की ख़िदमत गुज़ारी और इ़ज़्ज़त व तकरीम में कोई कमी न छोड़ी, 6 महीने तक ह़ज़रते इल्यास ने (बादशाह और उस के सिपाहियों से छुप कर) बीबी मता के घर पर क़ियाम फ़रमाया, फिर आप ने पहाड़ों पर जाना पसन्द फ़रमा लिया।[5]

ह़ज़रते यूनुस को नई ज़िन्दगी मिली ह़ज़रते इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام पहाड़ों पर तशरीफ़ ले गए इस के कुछ दिनों बाद ह़ज़रते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام का इन्तिक़ाल हो गया वालिदा बीबी मता बड़ी ग़मगीन हो गईं आख़िरे कार ह़ज़रते इल्यास की तलाश में निकल गईं, पहाड़ों में घूमती रहीं और अल्लाह पाक के नबी ह़ज़रते इल्यास को ढूंढ़ती रहीं यहां तक कि एक दिन आप عَلَيْهِ السَّلَام को पा लिया, अ़र्ज़ गुज़ार हुईं : मेरे बेटे यूनुस का इन्तिक़ाल हो गया है और मेरे कोई और औलाद नहीं है आप रब से दुआ़ कीजिए कि वोह मेरे बेटे को ज़िन्दा कर दे और मेरी मुसीबत को टाल दे, मैं ने उसे एक कपड़े में लपेट कर रखा है और अभी तक दफ़्नाया नहीं है, आप ने फ़रमाया : अल्लाह की जानिब से मुझे जिस बात का हुक्म मिलता है मैं वोही करता हूं और तुम्हारे बेटे के लिए दुआ़ का मुझे हुक्म नहीं मिला, येह सुन कर ममता की मारी बीबी मता बहुत ज़ियादा रोने लगीं और गिड़ गिड़ाने लगीं, येह देख कर आप ने पूछा : तुम्हारा बेटा कब मरा था ? मता बीबी ने जवाब दिया : सात दिन हुए हैं। आप عَلَيْهِ السَّلَام मता बीबी के साथ चल दिए सात दिन तक चलने के बाद उन के घर पहुंचे, ह़ज़रते यूनुस के इन्तिक़ाल को अब 14 दिन गुज़र चुके थे, अल्लाह के प्यारे नबी ह़ज़रते इल्यास ने वुज़ू किया फिर नमाज़ पढ़ी और अल्लाह करीम की बारगाह में दुआ़ की तो दुआ़ की बरकत ज़ाहिर हुई और ह़ज़रते यूनुस ज़िन्दा हो गए, आप عَلَيْهِ السَّلَام फिर से पहाड़ों पर तशरीफ़ ले गए।[6]

ह़ज़रते यस्अ़ को जा नशीनी अ़ता हुई जब क़ौम ने अपने अ़हद को तोड़ा और कुफ़्र को न छोड़ा और अपनी गुमराही से मुंह न मोड़ा बल्कि शैत़ान से ही अपना तअ़ल्लुक़ जोड़ा तो ह़ज़रते इल्यास ने क़ौम पर अ़ज़ाब लाने के लिए अल्लाह तआ़ला से दुआ़ कर दी, अल्लाह तआ़ला ने आप की दुआ़ क़बूल की और फ़रमाया : फुलां दिन का इन्तिज़ार करो, वोह आए तो फुलां जगह चले जाना वहां एक चीज़ तुम्हारे पास आएगी उस पर सुवार हो जाना, जब मत़लूबा दिन आया तो ह़ज़रते इल्यास ह़ज़रते यस्अ़ को साथ ले कर उसी मख़्सूस जगह पहुंच गए जहां पहुंचने का हुक्म दिया गया था, वहां एक सुर्ख़ रंग का घोड़ा आया आप उस घोड़े पर सुवार हो गए घोड़ा आप को ले कर चल पड़ा, पीछे से ह़ज़रते यस्अ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने पुकारा : मेरे बारे में क्या हुक्म है ? ह़ज़रते इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام ने अपनी चादर ह़ज़रते यस्अ़ की त़रफ़ उछाल दी, येह इस बात की अ़लामत थी कि ह़ज़रते यस्अ़ अब (ज़िन्दा बच जाने वाली) क़ौम बनी इसराईल में ह़ज़रते इल्यास के जा नशीन होंगे[7] ह़ज़रते यस्अ़ عَلَيْهِ السَّلَام को आप के बाद नुबुव्वत अ़ता की गई।[8]

क़ौम को सज़ा मिली अल्लाह तआ़ला ने बादशाह आजाब और उस की क़ौम पर उन के एक दुश्मन (बादशाह) को मुसल्लत़ कर दिया, बादशाह और उस की क़ौम को एह़सास भी न हो सका कि दुश्मन फ़ौज ने उन्हें घेर लिया है बादशाह को एक बाग़ में क़त्ल कर दिया गया और उस का मुर्दा जिस्म उसी जगह पड़ा रहा यहां तक कि जिस्म गल सड़ गया और हड्डियां बिखर गईं।[9]

ह़ज़रते कअ़बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की रिवायत के मुत़ाबिक़ ह़ज़रते इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام ग़ार में 10 साल तक रूपोश रहे फिर अल्लाह पाक ने उस बादशाह को हलाक कर दिया और उस की जगह नया बादशाह मुक़र्रर फ़रमाया, आप नए बादशाह के पास तशरीफ़ लाए और उसे अल्लाह वाह़िद पर ईमान लाने की दावत दी तो उस ने ईमान क़बूल कर लिया और उस की क़ौम का एक बड़ा ह़िस्सा ईमान ले आया दस हज़ार लोग ईमान नहीं लाए बादशाह ने उन सब को क़त्ल करवा दिया।[10]

ह़ज़रते इल्यास अभी तक ह़यात हैं एक क़ौल के मुत़ाबिक़ आप (आख़िरी वक़्त में) बीमार हुए तो रोने लगे अल्लाह की त़रफ़ से वह़ी आई : दुन्या से जुदा होने पर रो रहे हो या मरने की घबराहट है या आग का ख़ौफ़ है, आप ने अ़र्ज़ की : तेरी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! इस वजह से नहीं रो रहा, मेरी घबराहट तो इस वजह से है कि मेरे बाद तेरी ह़म्द करने वाले बन्दे तेरी ह़म्दो तारीफ़ करेंगे और मैं तेरा ज़िक्र नहीं कर सकूंगा, मेरे बाद रोज़ा रखने

वाले रोज़ा रखेंगे मैं नहीं रख सकूंगा, नमाज़ पढ़ने वाले नमाज़ पढ़ेंगे मैं नहीं पढ़ सकूंगा, अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया : ऐ इल्यास ! मेरी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं तुम्हें उस वक़्त तक की ज़िन्दगी देता हूं जब तक कि मेरा ज़िक्र करने वाला कोई बाक़ी न रहे यानी क़ियामत तक ।(11)

वफ़ात ह़ज़रते इल्यास عَلَیْہِ السَّلَام जंगलों और मैदानों में गश्त फ़रमाते रहते हैं और पहाड़ों और बयाबानों में अकेले अपने रब की इ़बादत में मसरूफ़ रहते हैं और आख़िरी ज़माने में वफ़ात पाएंगे ।(12)

बाज़ ख़ुश नसीब ह़ज़रात ह़ज़रते सय्यिदुना इल्यास عَلَیْہِ السَّلَام की ज़ियारत से शर्फ़याब हो जाते हैं और आप से फ़ैज़ भी पाते हैं, दो वाक़िआ़त मुलाह़ज़ा कीजिए :

निकाह़ कर लो एक शख़्स सैरो सयाह़त में रहता था कि उस की मुलाक़ात ह़ज़रते इल्यास عَلَیْہِ السَّلَام से हुई तो आप ने उसे निकाह़ करने का हुक्म दिया और फ़रमाया : निकाह़ न करने से ज़ियादा बेहतर येह है कि तुम निकाह़ कर लो ।(13)

अब्दाल की तादाद अ़ल्लामा ह़ाफ़िज़ इब्ने अ़साकिर शाफ़ेई (साले वफ़ात : 571) ने अपनी किताब तारीख़े इब्ने अ़साकिर में एक वाक़िआ़ नक़्ल किया है कि एक शख़्स वादिए उर्दन में जा रहा था कि वादी में उस ने एक अजनबी को नमाज़ पढ़ते हुए देखा, उस पर धूप में एक बादल ने साया कर रखा था, उस शख़्स को यक़ीन गुज़रा कि येह ह़ज़रते इल्यास عَلَیْہِ السَّلَام हैं, उस शख़्स ने सलाम कर दिया अजनबी ने नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर उस के सलाम का जवाब दिया, उस ने पूछा : अल्लाह आप पर रह़्म करे ! आप कौन हैं ? अजनबी ने कोई जवाब नहीं दिया, उस शख़्स ने दोबारा वोही सुवाल किया तो अजनबी ने जवाब दिया : मैं इल्यास नबी हूं, येह सुनते ही उस शख़्स पर कपकपी त़ारी हो गई और उसे ख़दशा हुवा कि अब उस की अ़क़्ल ज़ाइल हो जाएगी, उस ने अ़र्ज़ की : मेरे लिए दुआ़ कर दें कि मेरी येह ह़ालत सह़ीह़ हो जाए ताकि आप से फ़ाइदा ह़ासिल कर सकूं, ह़ज़रते इल्यास عَلَیْہِ السَّلَام ने अल्लाह करीम को 8 मुख़्तलिफ़ नामों से पुकारा तो वोह शख़्स पहली ह़ालत पर आ गया, अब उस शख़्स ने आप عَلَیْہِ السَّلَام से कुछ सुवालात किए जिन के जवाबात आप ने कुछ यूं अ़त़ा फ़रमाए :

सुवाल : क्या आज तक आप पर वह़ी नाज़िल होती है ?

जवाब : जब से नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी हुई है वह़ी नहीं आई ।

सुवाल : कितने अम्बियाए किराम ह़यात हैं ?

जवाब : चार ! मैं और ह़ज़रते ख़िज़्र ज़मीन पर जबकि ह़ज़रते इदरीस और ह़ज़रते ईसा आस्मानों में عَلَیْہِمُ السَّلَام ।

सुवाल : क्या आप की ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَیْہِ السَّلَام से मुलाक़ात होती है ?

जवाब : हां ! हर साल अ़रफ़ात और मिना में ?

सुवाल : आप दोनों के दरमियान क्या गुफ़्तगू होती है ?

जवाब : मैं उन से कुछ आगाही लेता हूं वोह मुझ से कुछ आगाही लेते हैं ।

सुवाल : अब्दाल कितने हैं ?

जवाब : 60, मुल्के मिस्र के बालाई अ़लाक़ों से नहरे फ़ुरात के किनारे तक 50 हैं, 7 अ़रब के शहरों में, 2 मुसयसा में जब कि एक अब्दाल अन्त़ाकिया शहर में हैं, उन के वसीले से बारिश बरसाई जाती है दुश्मनों पर ग़ल्बा दिया जाता है अल्लाह पाक ने उन के ज़रीए दुन्या का निज़ाम क़ाइम रखा है, (जब उन में से किसी एक का इन्तिक़ाल होने लगता है तो अल्लाह किसी और को उस की जगह मुक़र्रर फ़रमा देता है, फिर) जब अल्लाह दुन्या को ख़त्म करने का इरादा फ़रमाएगा तो इन तमाम अब्दालों का एक साथ इन्तिक़ाल हो जाएगा ।(14)

---

(1) نہایۃ الارب فی فنون الادب، 14/17 (2) نہایۃ الارب فی فنون الادب، 14/18 (3) نہایۃ الارب فی فنون الادب، 14/18 تا 19 (4) نہایۃ الارب فی فنون الادب، 14/20 ملخصاً (5) نہایۃ الارب فی فنون الادب، 14/20 (6) تفسیر بغوی، 4/33، الصّٰفّٰت: 123 (7) نہایۃ الارب فی فنون الادب، 14/23 ملخصاً (8) مستدرک، 3/470، حدیث: 4175 (9) نہایۃ الارب فی فنون الادب، 14/23 (10) البدایۃ والنہایۃ، 1/443 (11) الجامع لاحکام القرآن، قرطبی، 8/85، الصّٰفّٰت: 123 (12) عجائب القرآن، ص 294۔ مستدرک، 3/470، حدیث: 4175۔ زرقانی علی المواہب، 7/403 ملخصاً (13) اتحاف، 6/116 (14) تاریخ ابن عساکر، 9/215۔ اتحاف، 6/117، بغیۃ الطلب فی تاریخ حلب، 1/164۔

मदनी मुज़ाकरे के सुवाल जवाब

1 आला ह़ज़रत के एक शेर की वज़ाह़त

सुवाल : इस शेर की वज़ाह़त फ़रमा दीजिए।

जो गदा देखो लिए जाता है तोड़ा नूर का
नूर की सरकार है क्या इस में तोड़ा नूर का

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 245)

जवाब : इस शेर में दो जगह "तोड़ा" इस्तिमाल हुवा है और दोनों जगह इस का माना अलग अलग है। पहले मिस्रए़ में लफ़्ज़े "तोड़ा" से मुराद "**अशरफ़ियों की थैली**" है, पहले के दौर में रक़म थैलियों में रखी जाती थी और गदा का माना "**फ़क़ीर, भीक मांगने वाला।**" दूसरे मिस्रए़ में लफ़्ज़े "तोड़ा" से मुराद "**कमी**" है। मत़लब येह है कि जो भी मांगने वाला बारगाहे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में ख़ैरात लेने के लिए ह़ाज़िर होता है तो उसे भर भर कर ख़ैरात दी जाती है कि येह नूर की सरकार है इस में कोई कमी वाक़ेअ़ नहीं होती, जैसे बल्ब की रौशनी है कि कोई आ कर उस की रौशनी में बैठ कर चला जाए तो उस के आने और चले जाने से बल्ब की रौशनी में कोई कमी वाक़ेअ़ नहीं होती।

2 अपनी मादरी ज़बान में दुआ़ मांगना कैसा ?

सुवाल : क्या अपनी मादरी ज़बान, जैसे गुजराती वग़ैरा में दुआ़ कर सकते हैं ? या अ़रबी में दुआ़ मांगी जाए तभी क़बूल होती है ?

जवाब : दुआ़ अपनी ज़बान में की जा सकती है। और इन्सान अपने क़ल्बी जज़्बात ज़ियादा सह़ीह़ त़रीक़े से अपनी ज़बान ही में बयान कर पाता है, क्यूंकि हर शख़्स को अ़रबी नहीं आती। हां क़ुरआनो ह़दीस में आने वाली दुआ़एं जिन्हें "**दुआ़ए मासूरा**" कहा जाता है वोह भी ह़ुसूले बरकत के लिए पढ़नी चाहिएं।

3 क़ुरबानी का गोश्त माहे सफ़र में इस्तिमाल करना कैसा ?

सुवाल : क्या क़ुरबानी का गोश्त सफ़र शरीफ़ में इस्तिमाल कर सकते हैं ?

जवाब : जी हां ! क़ुरबानी का गोश्त सारा साल इस्तिमाल कर सकते हैं। येह अलग बात है कि डॉक्टरों के नज़दीक गोश्त इस्तिमाल करने की मुद्दत अलग है। बाज़ डॉक्टर्ज़ कहते हैं कि "कोई सा भी गोश्त हो, 10 या 15 दिन तक खा लेना चाहिए।" हो सकता है कि येह राए सूखे हुए गोश्त के बारे में न हो, क्यूंकि पहले तो गोश्त सुखा लिया जाता था, बल्कि अब भी सूखा हुवा गोश्त खाया जाता है।

4 काम के वक़्त मज़दूर का सोना कैसा ?

सुवाल : अगर काम के वक़्त में मज़दूर की आंख लग जाए तो क्या कटोती करवाना ज़रूरी है ?

जवाब : जितने वक़्त का इजारा किया गया हो उस वक़्त में दरमियानी रफ़्तार से काम करना ज़रूरी है,

अलबत्ता आ़म तौ़र पर एक घन्टा वक़्फ़ा दिया जाता है उस दौरान खाना भी खा सकते हैं, नमाज़ भी पढ़ सकते हैं और अगर वक़्त बचे तो आराम भी कर सकते हैं, लेकिन अगर काम के वक़्त के दौरान उ़र्फ़ से हट कर सो जाए तो मालिक अगर चाहे तो मुआ़फ़ कर सकता है वरना मालिक को उस की इत्तिलाअ़ कर के कटोती करवानी होगी।

5 दुकान पर "उधार मांग कर शर्मिन्दा न करें" लिखना कैसा ?

सुवाल : बाज़ दुकानों पर येह जुम्ला लिखा होता है "**उधार मांग कर शर्मिन्दा न करें**" या "**उधार महब्बत की कैंची है**" येह लिखना कैसा ?

जवाब : इस त़रह़ के जुम्ले लिखना मुनासिब नहीं, कारोबार में उ़मूमन उधार का लेन देन रहता है, हो सकता है येह जुम्ले लिखने वाला भी किसी न किसी को उधार दे देता हो। ज़रूरत मन्द को क़र्ज़ देना इस्लामी उख़ुव्वत (यानी भाई चारा) व महब्बत और उ़म्दा अख़्लाक़ में से है और येह अ़मल सवाब से ख़ाली नहीं और तंगदस्त मक़रूज़ को मोहलत देना वाजिब है और मोहलत देने वाले को सदक़े का सवाब भी मिलता है।

6 नमाज़ में आयतुल कुर्सी पढ़ना कैसा ?

सुवाल : क्या नमाज़ में आयतुल कुर्सी पढ़ सकते हैं ?

जवाब : बिल्कुल पढ़ सकते हैं, क्यूंकि येह भी कुरआने पाक का हिस्सा है। नमाज़ में कुरआने पाक पढ़ने का जो त़रीक़ए कार है उस के मुत़ाबिक़ पढ़ सकते हैं।

7 ग़ुस्ले मय्यित के बाद मय्यित के नाक कान में रूई रखना कैसा ?

सुवाल : मय्यित को ग़ुस्ल देने के बाद उस की नाक और कान में रूई रखी जाती है, क्या येह ज़रूरी है ?

जवाब : बहारे शरीअ़त में है : (मय्यित को) नहलाने के बाद अगर नाक, कान, मुंह और दीगर सूराख़ों में रूई रख दें तो ह़रज नहीं मगर बेहतर येह है कि न रखें। (बहारे शरीअ़त, 1 / 816)

8 कुरआने करीम देख कर पढ़ना अफ़्ज़ल है

सुवाल : कुरआने करीम देख कर पढ़ना ज़बानी पढ़ने से अफ़्ज़ल क्यूं है ?

जवाब : कुरआने करीम देख कर पढ़ना इस लिए अफ़्ज़ल है कि येह पढ़ना, देखना और हाथ से छूना भी है और येह सब इबादत हैं। (देखिए : बहारे शरीअ़त, 1 / 550) देख कर पढ़ने में ग़लती का ख़त़रा भी कम हो जाता है क्यूंकि ज़बानी पढ़ने में बसा औक़ात इन्सान को शुबा लग जाता है और वोह कहां से कहां निकल जाता है। नीज़ लोगों के सामने ज़बानी पढ़ने में रियाकारी में मुब्तला होने का ख़दशा भी है कि लोग ह़ाफ़िज़ साहिब कहेंगे जब कि ज़बानी पढ़ने के मुक़ाबले में देख कर पढ़ने में रियाकारी का इम्कान कम है।

9 क्या मर्ह़ूम वालिदैन का ख़्वाब में न आना नाराज़ी की अ़लामत है ?

सुवाल : मर्ह़ूम वालिदैन ख़्वाब में न आएं तो क्या येह उन की नाराज़ी के सबब है ?

जवाब : नहीं येह कोई नाराज़ी की अ़लामत नहीं है।

10 नमाज़ में कोई वाजिब छूट जाए तो क्या करें ?

सुवाल : अगर नमाज़ में कोई वाजिब छूट जाए तो क्या करना चाहिए ?

जवाब : अगर नमाज़ में भूले से कोई (नमाज़ का) वाजिब छूट जाए तो आख़िर में सज्दए सह़व करने से नमाज़ दुरुस्त हो जाती है, अगर जान बूझ कर ऐसा किया हो तो अब सज्दए सह़व से नमाज़ दुरुस्त नहीं होगी बल्कि नमाज़ दोबारा पढ़ना वाजिब होगा।

(देखिए : बहारे शरीअ़त, 1 / 708)

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत

1 दुआए कुनूत के लिए रुकूअ़ से क़ियाम की त़रफ़ पलटना कैसा ?

2 अजीर पर छुट्टी या ताख़ीर का माली जुर्माना लगाना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि कोई शख़्स वित्र में दुआए कुनूत पढ़ना भूल जाए, और रुकूअ़ में याद आए कि दुआए कुनूत नहीं पढ़ी, तो अब उस के लिए क्या हुक्म है ? अगर उस ने खड़े हो कर दुआए कुनूत पढ़ ली और फिर रुकूअ़ कर के नमाज़ मुकम्मल की और आख़िर में सज्दए सहव कर लिया, तो इस सूरत में नमाज़ का क्या हुक्म है ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

अगर कोई शख़्स वित्र में दुआए कुनूत पढ़ना भूल जाए और रुकूअ़ में जा कर याद आए तो अब उस के लिए हुक्म येह है कि वोह कुनूत पढ़ने के लिए दोबारा खड़ा न हो और न ही रुकूअ़ में कुनूत पढ़े बल्कि कुनूत पढ़े बिग़ैर नमाज़ मुकम्मल करे और आख़िर में सज्दए सहव करे। अगर उस ने खड़े हो कर दुआए कुनूत पढ़ ली और फिर रुकूअ़ कर के नमाज़ मुकम्मल की, तो इस सूरत में वोह गुनहगार होगा और उन वित्रों का इआ़दा यानी दोबारा पढ़ना वाजिब होगा, चाहे उस ने आख़िर में सज्दए सहव किया हो, या न किया हो ; क्यूंकि इस सूरत में उस ने दोबारा रुकूअ़ करने की वजह से क़स्दन सज्दे में ताख़ीर की और क़स्दन रुक्न की ताख़ीर की वजह से नमाज़ का इआ़दा वाजिब होता है, सज्दए सहव काफ़ी नहीं होता।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि बाज़ तालीमी इदारों और फ़ेक्ट्रियों में ऐसा होता है कि अगर कोई अजीर हफ़्ता या सोमवार की छुट्टी बिग़ैर इत्तिलाअ़ के करे तो उस की दो दिन की कटोती की जाती है, इसी त़रह़ अगर क्लास में तीन मिनट से ज़ियादा ताख़ीर से गए या ह़ाज़िरी के वक़्त से दो या तीन मिनट लेट हुए और ऐसा एक माह में चार मरतबा हुवा तो पूरे एक दिन की तनख़्वाह काट ली जाती है। इदारे का येह कटोती करना और इन शराइत़ पर इजारा करना शरअ़न जाइज़ है या नहीं ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

पूछी गई सूरत के मुत़ाबिक़ किसी भी इदारे या फ़ेक्ट्री वालों का एक छुट्टी पर दो दिन की कटोती करना, या चन्द मिनटों की ताख़ीर पर पूरे दिन की तनख़्वाह काट लेना, ज़ुल्म व नाजाइज़ व गुनाह है कि येह माली जुर्माने की सूरत है और माली जुर्माना मन्सूख़ है जिस पर अ़मल ह़राम है। नीज़ मुआ़हदे में येह शराइत़ रखना भी नाजाइज़ है जिस से मुआ़हदा ही फ़ासिद हो जाएगा और लाज़िम

होगा कि इस मुआहदे को ख़त्म कर के नाजाइज़ शराइत़ को हज़्फ़ करें और नए सिरे से मुआहदा करें।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

3 क्या हिफ़्ज़े कुरआन की मन्नत को पूरा करना वाजिब है ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले के बारे में कि एक शख़्स ने मन्नत मानी कि मेरा काम हो गया, तो मैं कुरआने पाक हिफ़्ज़ करूंगा। फिर वोह काम हो गया, तो अब उस मन्नत का क्या हुक्म है ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

पूछी गई सूरत में मन्नत वाजिब नहीं होगी और उसे पूरा करना लाज़िम नहीं होगा क्यूंकि मुकम्मल कुरआन का हिफ़्ज़ फ़र्ज़े किफ़ाया है और जो अ़मल पहले ही से फ़र्ज़े ऐन या फ़र्ज़े किफ़ाया हो उस की मन्नत मानने से मन्नत लाज़िम नहीं होती अलबत्ता हिफ़्ज़े कुरआन निहायत आला इबादत है तो उसे पूरा करना बहुत उ़म्दा और अह़सन है।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

4 घर के दरो दीवार पर जानदारों की तसावीर लगाना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि बाज़ लोग घरों में ज़ीनत व आराइश के लिए दीवारों पर शेर, घोड़ों, और दूसरे जानवरों की तसावीर लगाते हैं, जिन में उन जानवरों की शक्लें वाज़ेह़ होती हैं, क्या ऐसी तसावीर लगाना जाइज़ है ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

घरों में दीवारों पर जानवरों की ऐसी तसावीर लगाना कि जिस में उन की शक्लें वाज़ेह़ हों, नाजाइज़ो गुनाह और घर में रह़मत के फ़िरिश्ते आने से मानेअ़ (रुकावट) है क्यूंकि दीवारों पर किसी जानदार की तसवीर लगाना, उस तसवीर की ताज़ीम है और शरीअ़ते मुत़ह्हरा ने किसी जानदार की तसवीर बनाने, बनवाने और इस को बत़ौरे ताज़ीम रखने को ह़राम फ़रमाया है।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

5 कई त़वाफ़ों के बाद आख़िर में सब की नमाज़े त़वाफ़ पढ़ना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले के बारे में कि मैं गुज़श्ता दिनों उ़मरे पर गया, वहां मैं ने एक रात लगातार कई त़वाफ़ किए लेकिन हर एक के बाद नमाज़े त़वाफ़ करने की बजाए आख़िर में हर त़वाफ़ की अलग अलग दो रकअ़तें अदा कर लीं। रहनुमाई फ़रमाएं कि मेरा यूं नमाज़े त़वाफ़ अदा किए बिग़ैर लगातार कई त़वाफ़ करना कैसा था और वोह त़वाफ़ दुरुस्त हुए या नहीं ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

बयान कर्दा सूरत में आप का सारे त़वाफ़ों की नमाज़ आख़िर में अदा करना मकरूहे तन्ज़ीही था, अलबत्ता त़वाफ़ दुरुस्त हो गए।

इस मस्अले की तफ़्सील :

इस मस्अले की तफ़्सील येह है कि हर त़वाफ़ के बाद दो रकअ़त नमाज़ पढ़ना वाजिब है, ख़्वाह वोह त़वाफ़ फ़र्ज़, वाजिब, सुन्नत या नफ़्ल हो, अलबत्ता त़वाफ़ के फ़ौरन बाद नमाज़े त़वाफ़ पढ़ना वाजिब नहीं, लेकिन सुन्नत येह है कि मकरूह वक़्त न हो (यानी जिस वक़्त में नफ़्ल नमाज़ पढ़ना जाइज़ हो) तो फ़ौरन नमाज़ पढ़े, अगर किसी शख़्स ने चन्द त़वाफ़ एक साथ कर लिए और दरमियान में हर एक की नमाज़ न पढ़ी, तो ऐसा करना मकरूहे तन्ज़ीही है, अलबत्ता त़वाफ़ हो गए और जितने त़वाफ़ किए, ग़ैर मकरूह वक़्त में सब की अलग अलग दो रकअ़त नमाज़ की अदाएगी लाज़िम है, लेकिन अगर ऐसे वक़्त में त़वाफ़ ख़त्म करे कि वोह वक़्त मकरूह हो, तो अब दूसरा त़वाफ़ करना बिला कराहत जाइज़ है, जितने त़वाफ़ उस वक़्त करेगा, ग़ैर मकरूह वक़्त में सब की नमाज़ अलग अलग पढ़े।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

काम की बातें

1 तालीम से ज़ियादा तरबियत अहम है, मुआ़शरे में लाखों तालीमी इदारे क़ाइम हैं फिर भी बे हयाई, गुस्सा, त़लाक़, नाचाक़ी और झगड़े हो रहे हैं, क्यूंकि तरबियत की कमी है। नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी ज़िन्दगी का बड़ा वक़्त सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की तरबियत पर सर्फ़ फ़रमाया है।

2 जब किसी के घर जाएं तो इजाज़त ले कर दाख़िल हों और अपनी नज़रों की ह़िफ़ाज़त करते हुए दूसरों के घरों में झांकने से परहेज़ करें, क्यूंकि अगर निगाह भटक गई तो बन्दा भटक जाता है। हां अगर कोई आप को अपने साथ ले कर गया है तो अब इजाज़त की ह़ाजत नहीं।

3 निगाहों का आवारा पन इन्सान को आवारा कर सकता है, लिहाज़ा अपनी आंखों को आवारगी से बचाएं।

4 ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब किसी के घर जाओ तो तीन मरतबा इजाज़त त़लब करो। अगर इजाज़त न मिले तो वापस लौट जाओ। (بخاری، 4/170، حدیث: 6245) घर में दाख़िला मांगने की एक ह़िक्मत येह भी है कि घर वालों पर बाहर वाले की फ़ौरन नज़र न पड़े।

5 अपनी सोचों को भटकने से बचाएं और इन को शरीअ़त के दाइरे में बन्द रखें।

6 हमारे रवय्ये और आ़दतें ही हमारी पहचान होती हैं।

7 हमारा आना जाना, उठना बैठना, चलना फिरना, हर चीज़ में एक अन्दाज़ होना चाहिए जो आप की पहचान बन जाए।

8 किसी से आप की पहली मुलाक़ात आप का 70 फ़ीसद तआ़रुफ़ पेश करती है।

9 जब बच्चा बड़ा हो जाए तो वालिदैन के कमरे में भी इजाज़त ले कर जाए।

10 अगर किसी से फ़ोन पर बात कर रहे हों तो उस की बात मुकम्मल होने से पहले कॉल न काटें कि येह मुरव्वत के ख़िलाफ़ है और इख़्तिलाफ़ात बढ़ा सकता है।

11 लोग आप की उम्र के मुताबिक़ नहीं बल्कि आप के इल्म के मुताबिक़ फ़ैसला करते हैं, लिहाज़ा आप के अन्दाज़ से महसूस होना चाहिए कि आप तालीम याफ़्ता हैं।

12 अपना मक़ाम ऐसा बनाएं कि कोई आप से बात करे तो उसे येह महसूस हो कि मैं किसी अहले इल्म से बात कर रहा हूं।

13 अच्छे अख़्लाक़ की येह पहचान है कि कोई आप को पत्थर मारे तो आप उसे फल दें (यानी उसे मुआफ़ कर दें) कि पत्थर उसी दरख़्त पर मारा जाता है जो फलदार होता है।

14 बाज़ लोग ऐसे हस्सास और बेहतरीन तरबियत वाले होते हैं कि खाने के वक़्त में किसी के घर नहीं जाते।

15 जो जिस ज़िम्मेदारी का अहल है उस को वोही ज़िम्मेदारी दी जाए।

16 अगर आप को किसी मौक़अ पर बोलने का वक़्त दिया गया है तो मुख़्तसर अल्फ़ाज़ में अपनी बात ख़त्म कर दें।

17 हमें रोना नहीं है, हमें उम्मत के आंसूओं को साफ़ करना है।

अल्लाह पाक हम सब को इन बातों पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

तहरीरी मुक़ाबले में मौसूल मज़ामीन के मुअल्लिफ़ीन

जामिअतुल मदीना फ़ैज़ाने कन्ज़ुल ईमान, मुम्बई : मुहम्मद मक़्सूद आलम क़ादिरी, अ़ब्दुल क़ादिर, शाबान चिश्ती, अहमद रज़ा। **मुतफ़र्रिक़ जामिआत :** मुहम्मद बिलाल क़ादिरी (जामिअतुल मदीना फ़ैज़ाने अत्तार, नागपुर), मुहम्मद अल्क़मा अशरफ़ अ़लीमी (टीचर दारुल मदीना इंग्लिश मीडियम स्कूल हिम्मत नगर गुजरात), रईसुद्दीन अत्तारी (जामिअतुल मदीना फ़ैज़ाने औलिया अहमदाबाद)।

तहरीरी मुक़ाबला उनवानात बराए नवम्बर 2024 ईसवी

1 हज़रते लूत़ عَلَیْہِ السَّلَام की क़ुरआनी नसीहतें 2 रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का 5 चीज़ों के बयान से तरबिय्यत फ़रमाना 3 औलाद के हुक़ूक़

मज़मून भेजने की आख़िरी तारीख़ : 20 अगस्त 2024 ईसवी

मज़मून लिखने में मदद (Help) के लिए इन नम्बर्ज़ पर राबिता करें

+91 89782 62692

mazmoonnigarihind@gmail.com

बचत
मगर किस चीज़ की ?

बचत (Saving) का लफ़्ज़ आप ने बहुत मरतबा सुना होगा उ़मूमन बचत का तअ़ल्लुक़ सिर्फ़ रुपिये पैसे के साथ समझा जाता है कि माल की बचत, रक़म की बचत, रुपिये पैसे की बचत ! फिर मक़्सद येह होता है कि येह बचत करने के बाद जो रक़म बचेगी वोह हमारी ज़रूरिय्यात और सहूलिय्यात में इस्तिमाल होगी । इस त़रह़ की बचत के सैंकड़ों त़रीक़े हैं जो बुक्स, वी लोग्ज़, ब्लोग्ज़, मोटीवेश्नल लेक्चर्ज़ की सूरत में सोशल मीडिया और मीडिया में बिखरे पड़े हैं । ज़ाती तजरिबात और तजरिबा कार लोगों से मेल मुलाक़ात भी इन्सान को माली बचत के त़रीक़े (Ways to save money) सिखा देती है, येह अलग बात है कि वोह इन त़रीक़ों पर अ़मल करता है या नहीं !

बचत के ह़ैरान कर देने वाले त़रीक़े

बाज़ लोग तो बचत के ऐसे ह़ैरान कुन त़रीक़े इस्तिमाल करते हैं कि अ़क़्ल दंग रह जाती है जैसे पुल या पहाड़ी बुलन्दी से उतरते वक़्त गाड़ी या रिक्शा वग़ैरा का इन्जिन बन्द कर देना ताकि फ़्यूल कम ख़र्च हो और कुछ पैसे बच जाएं, प्रेशर कुकर में खाना बनाना कि जल्दी बनेगा और गैस कम ख़र्च होगी जिस से बिल कम आएगा, बिजली की स्त्री के बजाए स्टील वग़ैरा की प्लेट गैस के चूल्हे पर गर्म कर के या गैस वाली स्त्री से कपड़े प्रेस कर लेना कि गैस का बिल बिजली के मुक़ाबले में काफ़ी कम होता है यूं कुछ रक़म बच जाएगी । इस त़रह़ के अनोखे मुआ़मलात (Strange cases) शायद आप के इर्द गिर्द भी होते हों ।

बहर ह़ाल ! रुपिये पैसे की बचत (जिस से शरीअ़त मन्अ़ न करती हो इस) में ह़रज नहीं बल्कि अच्छी निय्यत होगी तो इस पर सवाब मिलेगा, اِنْ شَآءَ اللّٰه । लेकिन बचत की येही एक क़िस्म नहीं बल्कि और भी अक़्साम हैं जैसे तवानाई की बचत, सेह़त की बचत, तअ़ल्लुक़ात की बचत, इ़ज़्ज़तो वक़ार की बचत ! मगर इस तह़रीर में मुझे इस बचत पर बात करनी है जो बहुत ही ज़रूरी है लेकिन इस की त़रफ़ बहुत ही कम लोगों की तवज्जोह होती है ! और वोह है "वक़्त की बचत" !

वक़्त माल से ज़ियादा क़ीमती है

वक़्त और माल का तक़ाबुल (Comparison) किया जाए तो वक़्त कई एतिबारात से माल पर फ़ौक़िय्यत (Priority) रखता है जैसे माल किसी के पास कम होता है किसी के पास ज़ियादा जब कि वक़्त के 24 घन्टे हर शख़्स को बराबर मिलते हैं, ख़र्च या ज़ाएअ़ होने या डकेटी वग़ैरा में माल छिन जाने के बाद दोबारा भी ह़ासिल किया जा सकता है जब कि वक़्त एक मरतबा ख़र्च या ज़ाएअ़ हो जाने के बाद इस का एक सेकेन्ड या मिनट किसी भी क़ीमत पर दोबारा नहीं मिलता । ग़ौर कीजिए ! जब हम कम क़ीमती चीज़ की बचत के लिए बहुत ज़ियादा कोशिशें (Efforts) करते हैं तो इस से क़ीमती शै वक़्त की बचत के लिए इस से कहीं ज़ियादा कोशिश करनी चाहिए ताकि हमारी दुन्या और आख़िरत के मुआ़मलात संवर जाएं ! हमारे प्यारे रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के एक फ़रमान से इस ह़वाले से राहनुमाई ली जा सकती है, चुनान्चे,

पांच की पांच से पहले क़द्र करो

रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को नसीहत करते हुए फ़रमाया : पांच (चीज़ों) को पांच से पहले ग़नीमत जानो ! (1) बुढ़ापे से पहले जवानी को (2) बीमारी से पहले तन्दुरुस्ती को (3) फ़क़ीरी से पहले अमीरी को (4) मसरूफ़िय्यत से पहले फ़ुरसत को और (5) मौत से पहले ज़िन्दगी को ।[1]

अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ हदीस शरीफ़ के इस हिस्से **"फ़ुर्सत को मशग़ूलिय्यत से पहले ग़नीमत जानो"** के तह़्त फ़रमाते हैं कि मत़्लब येह है कि इस दुन्यावी फ़ुर्सत को क़ियामत की उन हौलनाकियों में पड़ने से पहले ही ग़नीमत (Seize) समझो जिन की पहली मन्ज़िल क़ब्र है ।[2]

हमारा हैरान कुन रवय्या

हमारी अक्सरिय्यत दो क़िस्म के नुक़्सानात में हैरान कर देने वाला रवय्या (Attitude) ज़ाहिर करती है, एक येह कि अगर कोई चोर हमारा माल चुरा ले, डकैट मोबाइल, बाईक या गाड़ी और पैसे छीन ले, धोके बाज़ फ़्रोड से हमारी रक़म हथिया ले, क़ब्ज़ा ग्रूप हमारी ज़मीन या मकान पर क़ब्ज़ा कर ले तो हमें बड़ा सदमा होता है और इन लोगों को हम हरगिज़ हरगिज़ हरगिज़ अपना दोस्त, ख़ैर ख़्वाह और हमदर्द नहीं समझते जब कि इस के बर अक्स (Opposite) अगर कोई फ़ालतू और बेकार क़िस्म का शख़्स हमारा वक़्त छीन ले या ज़ाएअ़ कर दे कि हम से ख़्वा म ख़्वाह की बह़्सें करे, मुलाक़ात को मुख़्तसर रखने के बजाए जाने का नाम न ले, हमें फ़ुज़ूल मजलिस (Sitting) में बिठाए रखे तो हमें इस का कोई सदमा नहीं होता बल्कि रोज़ाना की बुन्याद पर वक़्त ज़ाएअ़ करने वाले हमारे दोस्तों में शामिल होते हैं । ह़ालांकि माल का नुक़्सान जल्द या देर से पूरा हो सकता है लेकिन जो वक़्त एक मरतबा चला गया वोह वापस नहीं आता ।

वक़्त की बचत कहां से सीखें ?

बचत का बुन्यादी उसूल (Basic principle) येह है कि इस चीज़ को ज़ाएअ़ होने से बचाया जाए और सोच समझ कर ख़र्च किया जाए । इस के लिए न करने के कामों और फ़ुज़ूल दोस्तियों से परहेज़ लाज़िम है क्यूंकि जो अपने वक़्त की क़द्र नहीं करता वोह दूसरों के वक़्त की क्या क़द्र करेगा ? येह ह़क़ीक़त भी हमारे पेशे नज़र होनी चाहिए कि कोई दूसरा हमारे वक़्त को बचाने नहीं आएगा हमें ख़ुद ही कुछ करना होगा । अब रहा येह सुवाल कि वक़्त की बचत का तफ़्सीली त़रीक़ा कहां से सीखें ? तो इस का जवाब येह है कि वक़्त की अनमोल दौलत बचाने के त़रीक़े भी इन्ही ज़राएअ़ (Sources) से सीखे जा सकते हैं जिन से माल की बचत के त़रीक़े सीखते हैं यानी बुक्स, व्लोग्ज़, ब्लोग्ज़, मोटीवेशनल लेक्चर्ज़, ज़ाती तजरिबात और तजरिबा कार लोगों से मश्वरा करना ।

हमारे अस्लाफ़ (दीनी बुज़ुर्ग (Pious predecessors)) वक़्त के ह़वाले से कितने ह़स्सास (Sensitive) थे इस की सिर्फ़ दो झल्कियां देखिए, चुनान्चे,

क़ुरआने करीम की पचास आयतों की तिलावत

ह़ज़रते दावूद त़ाई رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ रोटी पानी में भिगो कर खा लेते थे, इस की वजह बयान करते हुए फ़रमाते हैं : "जितना वक़्त लुक़्मे बनाने में सर्फ़ होता है, उतनी देर में क़ुरआने करीम की पचास आयतें पढ़ लेता हूं ।"[3]

40 साल से रोटी नहीं खाई

ह़ज़रते शैख़ सिरी सक़त़ी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कहते हैं : मैं ने शैख़ अ़ली बिन इब्राहीम जुरजानी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास पिसे हुए सत्तू (Sattu) देखे, मैं ने पूछा : आप सत्तू के इलावा और कुछ क्यूं नहीं खाते ? उन्हों ने जवाब दिया : मैं ने खाना चबाने और सत्तू पीने में 70 तस्बीह़ात का अन्दाज़ा लगाया है, चालीस साल हुए मैं ने रोटी खाई ही नहीं ताकि इन तस्बीह़ात का वक़्त ज़ाएअ़ न हो ।[4]

अल्लाह पाक हमें भी वक़्त की ऐसी क़द्र और इस की बचत का शुऊ़र अ़त़ा फ़रमाए ।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1)شعب الایمان،7/263،حدیث:10248 (2)التیسیر شرح جامع الصغیر،1/177
(3)تذکرۃ الاولیاء،1/201-احیاء العلوم،5/143 (4)مکاشفۃ القلوب،ص37۔

पेशानी पर मेह़राब

बाज़ नमाज़ी लोगों की पेशानी पर गहरे सांवले या भूरे (Dark Brown) रंग के निशान होते हैं जिसे मेह़राब भी कहते हैं। नमाज़ियों के चेहरे पर निशान का तज़्किरा क़ुरआनो ह़दीस में भी मिलता है। जैसा कि अल्लाह पाक क़ुरआने करीम में इरशाद फ़रमाता है :

﴿تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا٘ سِيْمَاهُمْ فِيْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِؕ ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ ۛۚ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो उन्हें देखेगा रुकूअ़ करते सज्दे में गिरते अल्लाह का फ़ज़्ल व रिज़ा चाहते उन की अ़लामत उन के चेहरों में है सज्दों के निशान से येह उन की सिफ़त तौरैत में है।[1]

इस आयत की तफ़्सीर में मुफ़्ती मुह़म्मद क़ासिम अ़त्तारी مدظلہ العالی तह़रीर फ़रमाते हैं : उन की इबादत की अ़लामत उन के चेहरों में सज्दों के असर से ज़ाहिर है। बाज़ मुफ़स्सिरीन फ़रमाते हैं कि येह अ़लामत वोह नूर है जो क़ियामत के दिन उन के चेहरों से ताबां होगा और उस से पहचाने जाएंगे कि इन्हों ने दुन्या में अल्लाह तआ़ला की रिज़ा के लिए बहुत सज्दे किए हैं। बाज़ मुफ़स्सिरीन फ़रमाते हैं कि वोह अ़लामत येह है कि इन के चेहरों में सज्दे का मक़ाम चौदहवीं रात के चांद की त़रह़ चमकता दमकता होगा। ह़ज़रते अ़त़ा رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ का क़ौल है कि रात की लम्बी नमाज़ों से उन के चेहरों पर नूर नुमायां होता है जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में है : "जो रात में कसरत से नमाज़ पढ़ता है तो सुब्ह़ को उस का चेहरा ख़ूब सूरत हो जाता है। और येह भी कहा गया है कि गर्द का निशान भी सज्दे की अ़लामत है।[2]

عَنْ اَبِیْ اُمَامَةَ عَنِ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَیْسَ شَیْءٌ اَحَبَّ اِلَی اللّٰہِ مِنْ قَطْرَتَیْنِ وَاَثَرَیْنِ قَطْرَةُ دُمُوعٍ مِنْ خَشْیَةِ اللّٰہِ وَقَطْرَةُ دَمٍ تُهَرَاقُ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰہِ وَاَمَّا الْاَثَرَانِ فَاَثَرٌ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰہِ وَاَثَرٌ فِیْ فَرِیْضَةٍ مِنْ فَرَائِضِ اللّٰہِ

यानी ह़ज़रते अबू उमामा رضی اللہ تعالٰی عنہ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह पाक को दो क़त़्रों और दो निशानों से ज़ियादा कोई शै मह़बूब नहीं। (दो क़त़्रों में से एक) आंसू का वोह क़त़्रा जो अल्लाह पाक के ख़ौफ़ से निकले, (दूसरा) ख़ून का वोह क़त़्रा जो अल्लाह पाक की राह में जंग करते हुए निकले। दो निशानों में से एक निशान वोह है जो अल्लाह पाक के रास्ते में पड़े, दूसरा निशान वोह है जो अल्लाह पाक के फ़राइज़ में से किसी फ़रीज़े को सर अन्जाम देते हुए पड़े।[3]

मुह़म्मद बिन अ़ल्लान अश्शाफ़ेई رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ इस ह़दीसे पाक की रौशनी में लिखते हैं : पहला निशान वोह है जो अल्लाह पाक के रास्ते में पड़े, यानी तलवार या नेज़ा लगने के बाद ज़ख़्म का जो निशान बाक़ी रहे और दूसरा निशान वोह जो अल्लाह पाक के फ़राइज़ में से किसी फ़रीज़े को सर अन्जाम देते हुए पड़े, जैसे (सर्दियों में ठन्डे पानी से वुज़ू करने की वजह से) आज़ाए वुज़ू का फटना और सज्दे का निशान।[4]

ह़ज़रते अबू मालिक अश्अ़री رضی اللہ تعالٰی عنہ से रिवायत है कि अल्लाह पाक के आख़िरी नबी मुह़म्मदे अ़रबी صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم ने इरशाद फ़रमाया : اَلصَّلٰوةُ نُوْرٌ यानी नमाज़ नूर है।[5]

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ इस ह़दीसे पाक के तह़त लिखते हैं : यानी नमाज़ मुसलमान के दिल की, चेहरे की, क़ब्र की, क़ियामत की रौशनी है। पुल सिरात़ पर सज्दे का निशान बैटरी (टॉर्च) का काम देगा। रब फ़रमाता है : ﴿نُوْرُهُمْ يَسْعٰى بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ﴾ (तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : इन का नूर दौड़ता होगा उन के आगे।)[6]

पढ़ते रहो नमाज़ तो चेहरे पे नूर है
पढ़ता नहीं नमाज़ वोह जन्नत से दूर है

---

(1) پ26، الفتح: 29 (2) صراط الجنان، 9/389-خازن، الفتح، تحت الآیۃ: 29، 4/162- مدارک، الفتح، تحت الآیۃ: 29، ص1148 ملتقطا (3) ترمذی، 3/253، حدیث: 1675 (4) دلیل الفالحین، 2/373، تحت الحدیث: 455 ملخصاً (5) مسلم، ص115، حدیث: 534 (6) پ28، التحریم: 8- مراۃ المناجیح، 1/232-

(क़िस्त : 01)

सायए अ़र्श दिलाने वाली नेकियां

मुतअ़द्दद अहादीसे मुबारका में मुख़्तलिफ़ आमाल की बुन्याद पर कई लोगों को रोज़े क़ियामत सायए अ़र्श नसीब होने की ख़ुश ख़बरी बयान की गई है आइए ! देखते हैं कि वोह कौन कौन ख़ुश नसीब लोग हैं ताकि हम ख़ुद को भी इन में शामिल करने की कोशिश करें।

अल्लाह के लिए एक दूसरे से महब्बत रखना

रसूले बे मिसाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं कि अल्लाह पाक बरोज़े क़ियामत इरशाद फ़रमाएगा : वोह लोग कहां हैं जो सिर्फ़ मेरी इज़्ज़तो जलाल की वजह से बाहम महब्बत रखते थे आज के दिन जब कि मेरे अ़र्श के साए के इलावा कोई साया नहीं, मैं उन्हें अपने अ़र्श के साए में जगह दूंगा।[1]

इन्सान मफ़ाद की ख़ातिर तो बेगानों से भी महब्बत व अपनाइय्यत का इज़हार कर लेता है मगर इस ह़दीस शरीफ़ से येह दर्स मिलता है कि हमें ज़ाती मफ़ादात के बजाए अल्लाह पाक की रिज़ा के लिए उस की मख़्लूक़ से बे ग़रज़ महब्बत व अपनाइय्यत रखनी चाहिए।

अपने अख़्लाक़ को सुथरा करना

नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह पाक ने ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ वह़ी फ़रमाई कि ऐ मेरे ख़लील ! बेशक मैं ने येह बात लिख दी है कि जिस ने अपने अख़्लाक़ को सुथरा किया मैं उसे अपने अ़र्श के साए में जगह दूंगा और उसे ह़ज़ीरतुल कुद्स (यानी जन्नत) से सैराब करूंगा और अपने जवारे रह़मत का क़ुर्ब अ़त़ा फ़रमाऊंगा।[2]

लिहाज़ा अगर हम चाहते हैं कि अपने रब को राज़ी कर के जन्नत व क़ुर्बे ख़ुदा के ह़क़दार बन जाएं और रोज़े क़ियामत कड़ी धूप के बजाए अ़र्श की छांव में हों तो हमें अपने गुफ़्तार व किरदार और आ़दातो अत्वार का जाइज़ा ले कर ख़ामियों को दूर करना चाहिए ताकि अख़्लाक़ में निखार आ सके।

अ़र्श का साया दिलाने वाली तीन आ़दतें

रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : तीन ख़स्लतें जिस शख़्स में होंगी अल्लाह पाक उसे अपने अ़र्श का साया अ़त़ा फ़रमाएगा : 1 दुश्वारी के वक़्त वुज़ू करना 2 अन्धेरे में मस्जिदों की त़रफ़ चलना और 3 भूके को खाना खिलाना।[3]

इन में से पहले दो काम अगर्चे दिक़्क़त वाले हैं कि बसा औक़ात सर्दी में ठन्डे और गर्मियों में गर्म पानी से वुज़ू करने की नौबत आ जाती जो कि मुश्किल काम है लेकिन इस रिवायत में बयान की गई फ़ज़ीलत को पेशे नज़र रखा जाए तो येह मुश्किल, इतनी मुश्किल महसूस नहीं होगी और तीसरे काम यानी खाना खिलाने की इस्लाम में बहुत अहमिय्यत है बल्कि अहादीस में इसे इस्लाम का

बेहतरीन अ़मल क़रार दिया गया है, लिहाज़ा हमें इन कामों पर कारबन्द रहना चाहिए।

तंगदस्त को मोहलत देना और ना समझ के साथ तआ़वुन करना

हज़रते जाबिर رضی اللہ تعالٰی عنہ फ़रमाते हैं कि मैं ने हुज़ूर नबिय्ये करीम صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم को येह फ़रमाते हुए सुना है : अल्लाह पाक क़ियामत के दिन उस शख़्स को अपने अ़र्श के साए में जगह अ़ता फ़रमाएगा जिस ने तंगदस्त को मोहलत दी या किसी ना समझ के साथ तआ़वुन किया।[(4)]

क़ुरआने पाक में तंगदस्त को मोहलत देने का फ़रमाया गया है और साथ ही साथ मोहलत के बजाए सिरे से क़र्ज़ ही मुआ़फ़ कर देने को बेहतर क़रार दिया गया है और इस रिवायत में तो इस नेक काम पर सायए अ़र्श मिलने की बिशारत भी मौजूद है लिहाज़ा ख़ैर कीजिए और ख़ैरिय्यत लीजिए।

7 त़रह़ के अफ़राद जो अ़र्श के साए में होंगे

एक ह़दीसे पाक में इन 7 अफ़राद को भी सायए अ़र्श पाने वाला बताया गया है : 1 आ़दिल हुक्मरान 2 वोह नौजवान जिस ने अल्लाह पाक की इ़बादत में अपनी ज़िन्दगी गुज़ार दी 3 वोह शख़्स जिस का दिल मस्जिदों में लगा रहे 4 वोह दो शख़्स जो अल्लाह पाक के लिए मह़ब्बत करते हुए जम्अ़ हुए और मह़ब्बत करते हुए जुदा हुए 5 वोह शख़्स जिसे मन्सब व जमाल वाली कोई औ़रत गुनाह के लिए बुलाए और वोह कहे कि मैं अल्लाह पाक से डरता हूं 6 वोह शख़्स जो इस त़रह़ छुपा कर सदक़ा दे कि इस के बाएं हाथ को ख़बर न हो कि दाएं ने क्या सदक़ा किया 7 वोह शख़्स जो ख़ल्वत में अल्लाह पाक को याद करे और इस की आंखों से आंसू बह निकलें।[(5)]

हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رضی اللہ تعالٰی عنہ की रिवायत में जिन सात क़िस्म के अफ़राद का ज़िक्र है उन में 5 तो गुज़श्ता रिवायत में भी बयान हो चुके, मज़ीद दो येह हैं 1 वोह शख़्स जो औक़ाते नमाज़ के लिए सूरज की रिआ़यत करता हो (यानी वक़्त में नमाज़ पढ़ता हो) और 2 वोह शख़्स कि अगर बोले तो इ़ल्म की बात करे और अगर ख़ामोश रहे तो ह़िल्म के सबब ख़ामोश रहे।[(6)]

ह़राम चीज़ों से बचना, राहे ख़ुदा में पहरा देना

एक रिवायत में मज़ीद इन दो अफ़राद को भी सायए अ़र्श पाने वालों में शुमार किया गया है : 1 वोह शख़्स जिस ने अल्लाह पाक की ह़राम कर्दा चीज़ों से अपनी आंख को बचाया 2 वोह आंख जिस ने अल्लाह पाक की राह में पहरा दिया।[(7)]

इन तीनों रिवायात में जो काम बयान किए गए हैं इन में से अक्सर का तअ़ल्लुक़ इख़्लास व इ़बादत से, बाज़ का रवय्ये, किरदार और मुआ़शरे के ह़ुस्न व भलाई से है, लिहाज़ा हमें इस्लाम की इन ख़ूब सूरत तालीमात में ह़त्तल मक्दूर ख़ुद को ढालना चाहिए ताकि दुन्या व आख़िरत की बेहतरी का सामान हो।

तिजारत में सच्चाई को इख़्तियार करना

एक रिवायत में है कि वोह ताजिर जो ख़रीदो फ़रोख़्त में ह़क़ का मुआ़मला करता हो (उसे भी सायए अ़र्श नसीब होगा)।[(8)]

इस फ़ज़ीलत के इ़लावा भी ईमानदारी से तिजारत के बहुत फ़ज़ाइल रिवायात में बयान किए गए हैं जिस से येह बात ख़ूब वाज़ेह़ हो जाती है कि शरीअ़त को आमाल की पाकीज़गी के साथ साथ माल की पाकीज़गी किस क़दर मक़्सूद है नीज़ रिवायात में सुथरी ख़रीदो फ़रोख़्त के लिए दी जाने वाली येह तरग़ीबात ह़ुस्ने मुआ़शरत में दीने इस्लाम के किरदार को भी उजागर करती हैं।

अल्लाह पाक हमें सायए अ़र्श पाने वाली नेकियों पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

जारी है

---

(1)موطاامام مالک،2 / 438، حدیث: 1825(2)دیکھئے: المعجم الاوسط، 5 / 37، حدیث: 6506(3)الترغیب الترھیب، 1 / 447، حدیث:1417(4)المعجم الاوسط، 6 / 40، حدیث: 7920(5)دیکھئے: بخاری، 1 / 236، حدیث: 660- مسلم، ص 399، حدیث: 2380(6)کتاب الزھد لامام احمد بن حنبل، ص 173، حدیث 819 (7)جامع الصغیر، ص 285، حدیث: 4647(8)الکامل فی ضعفاء الرجال، 8/408۔

इस्लाहे ख़ल्क़ और उसूले हिदायत

ख़ल्क़ की इस्लाह़ के लिए ख़साइले रज़ीला (यानी बुरी आ़दतों) और अफ़्आ़ले क़बीहा़ से बाज़ रखने और ख़राब आ़दात और बुरे अत्वार को मिटा डालने की तदबीरें ज़रूरी हैं जब तक येह न हो तो उस वक़्त तक इन्सान मकारिमे अख़्लाक़ व महासिने सिफ़ात के साथ मुत्तसिफ़ नहीं हो सकता और दुन्या की अ़मली ह़ालत औजे ख़ूबी पर नहीं पहुंच सकती।

इस्लाहे ख़ल्क़ के लिए अल्लाह पाक ने कुछ ऐसे मुक़द्दस नुफ़ूस पैदा किए हैं जो ख़ुद ज़माइम सिफ़ात व क़बाएह़ अफ़्आ़ल (बुरे कामों) से बिल्कुल पाक हैं और उन की लौहे फ़ित़रत पर कोई भी धब्बा नहीं है। इस गिरोह को "अम्बिया" और इन की इस त़हारत को "इस्मत" कहते हैं। इस गिरोहे पाक अम्बिया की तालीम बहुत गहरे, अ़मीक़ और मुअस्सिर उसूले हिदायत पर मब्नी होती है बल्कि इन की तालीमात से बदाहत व ह़िक्मत के उसूल दरयाफ़्त किए और जाने जाते हैं।

बद अ़मली को रोकने के लिए उस के मुक़द्दमात पर गिरिफ़्त करना और इन को ममनूअ़ ठहराना, इस बदी के इन्सिदाद (रोक थाम) की बेहतरीन तदबीर बल्कि ज़रूरी अम्र है और दुन्या की क़ौमें इस पर आ़मिल भी हैं कि जिस चीज़ को वोह रोकना चाहते हैं पहले उस के मुक़द्दमात की बन्दिश कर लेते हैं। अगर मुक़द्दमात की बन्दिश न की जाए तो फिर किसी चीज़ का रोकना सहल और आसान नहीं है। (बन्दा) एक दीवार को गिरने से बचाने वाला पुश्ता (दीवार को गिरने से बचाने वाली सपोर्ट) बनाता है, पानी के जम्अ़ होने की बन्दिश करता है, उस के गुज़रने का रास्ता ठीक कर देता है, तब दीवार क़ाइम और मज़बूत़ रहती है। अगर वोह ऐसा न करे और पानी बुन्याद में जाता रहे तो फिर दीवार किसी इम्दाद से भी क़ाइम नहीं रह सकती।

हुकूमतों को बाग़ियों से ख़त़रा होता है तो इस के लिए पहले से ह़िफ़ाज़ती तदबीरें की जाती हैं। ख़िलाफ़े क़ानून मज्मअ़ रोके जाते हैं। तक़रीरों और तह़रीरों पर एह़तिसाब क़ाइम होता है। ख़ुफ़्या रीशा दवानियों (साज़िशों) का तजस्सुस किया जाता है। अगर ऐसा न किया जाए तो बग़ावत के मवाद बढ़ते बढ़ते ऐसी क़ुव्वत के साथ सामने आएं कि फिर इन को ज़ेर कर लेना हुकूमतों के लिए दुश्वार हो जाए और जिन हुकूमतों ने इस की त़रफ़ से तग़ाफ़ुल किया है उन का अन्जाम येही हुवा कि वोह तबाह हो गईं। अमराज़ से बचने के लिए पहले से सफ़ाई के इन्तिज़ामात किए जाते हैं। ख़त़रनाक अमराज़ के लिए पहले से टीके लगा दिए जाते हैं और जिस्मों में क़बूले मरज़ की सलाहिय्यत ताबा मिक़्दार नहीं छोड़ी जाती और जिस चीज़ से भी मरज़ फैलने या इस के तरक़्क़ी करने का अन्देशा हो उस को दफ़्अ़ कर दिया जाता है। इस लिए त़ाऊ़न की बीमारियों को महफ़ूज़ रक़बों में दाख़िल नहीं होने दिया जाता।

ग़रज़ दुन्या में ह़िफ़्ज़े मातक़द्दुम की तदाबीर निहायत आ़क़िलाना व ह़कीमाना फ़ेल माना जाता है और जिस चीज़ की ह़िफ़ाज़त मन्ज़ूर होती है। उस के अस्बाब व

मुक़द्दमात की बन्दिश की जाती है। अगर ऐसा न किया जाए तो पेश आने वाले उमूर की कोई सबील बाक़ी न रहे और जो शख़्स ऐसी तदाबीर से ग़ाफ़िल रहे वो अरबाबे ख़िरद (अहले अ़क़्ल) के नज़दीक नादान, सफ़ीह (बे वुक़ूफ़), ना फ़हम कहलाने का मुस्तिहक़ है।

हादियों (यानी हिदायत की दावत देने वालों) की नज़र एतिक़ाद, अख़्लाक़ व आमाल पर होती है और इन की तवज्जोह इन सब को फ़साद से महफ़ूज़ रखने पर होती है। आमाल के लिए कुछ मुक़द्दमात होते हैं, जो इन्सान के लिए इन के इर्तिकाब का बाइ़स होते हैं और बा वुजूद अ़मल की बुराई और उस के क़ब्ह से वाक़िफ़ होने के भी वोह उमूर आदमी को फ़ेले बद का शौक़ दिलाते हैं और त़बीअ़त को दम ब दम उस की त़रफ़ खींचते हैं जो हादी अफ़्आ़ले क़बीहा का इन्सिदाद करना चाहता है उस के लिए ब इक़्तिज़ाए हिक्मत लाज़िम है कि पहले वोह मुक़द्दमाते फ़ुजूर को रोक दे। अगर ऐसा न किया तो क़बाएह़ अफ़्आ़ल के रोकने में कामयाबी हरगिज़ न हो सकेगी।

मसलन ज़िना एक फ़ेले बद है, निहायत क़बीह़ है, इस की क़बाह़त पर तमाम आ़लम के हर मिल्लत व मज़हब के लोग मुत्तफ़िक़ हैं बल्कि ला मज़हब भी जो कोई मिल्लत नहीं रखते मगर ज़रा सी अ़क़्ल व शाइस्तगी इन में है वोह भी इस को निहायत क़बीह़ जानते हैं ह़त्ता कि जानवरों में भी जो त़बीअ़ते सलीमा रखते हैं, वोह अपने जोड़े के सिवा दूसरे की त़रफ़ इल्तिफ़ात (तवज्जोह) नहीं रखते। नस्लों का इस्तिह़फ़ाज़ (नस्लों की ह़िफ़ाज़त), ख़ानदानों की बक़ा क़ौमों की ह़िफ़ाज़त इस पर मुन्ह़सिर है कि ह़राम कारी मादूम कर दी जाए। ज़िना इन्सान से ह़या व ग़ैरत की बेहतरीन सिफ़त को दूर कर देता है और उस के नफ़्स को निहायत बे शर्म और नापाक बना देता है। इस से बहुत सी ख़ून रेज़ियां होती हैं और येह एक जुर्म बेशुमार जुर्मों के इर्तिकाब का बाइ़स हो जाता है। ज़िना से जो औलाद पैदा होती है उस की ज़िन्दगी किस क़दर सऊ़बतों (मुश्किलात) का शिकार होती है। न उस का कोई बाप है न वोह किसी को बाप बता सकता है। न अपने नसब को किसी की त़रफ़ मन्सूब कर सकता है। न शफ़्क़ते पेदरी व तरबियते आबाई व ख़ानदानी का फ़ैज़ उसे ह़ासिल हो सकता है। वोह तमाम उ़म्र दुन्या की निगाहों में ह़क़ारत व ज़िल्लत के साथ बसर करता है। ज़िना की बुराइयां इस से भी बहुत ज़ियादा हैं कि किसी मुख़्तसर तह़रीर में ज़ब्त़ किया जा सके और ज़ियादा तफ़्सील की ह़ाजत भी नहीं है क्यूंकि इस फ़ेले क़बीह़ के शर्मनाक ऐ़ब और बद तरीन जुर्म होने में किसी को कलाम नहीं है। और बिल एलान कोई शख़्स भी इस को अच्छा कहने वाला नहीं।

तो जब दुन्या ने तस्लीम कर लिया कि येह बदतरीन ऐ़ब है, निहायत क़बीह़ जुर्म है, और नस्ले इन्सानी की ह़िफ़ाज़त व बक़ा और फ़सादों का दफ़्अ़ और त़बीअ़तों की तह़ारत और इन्सान की रूह़ानी तरक़्क़ी, इस के इन्सिदाद पर मौक़ूफ़ है तो हादी के लिए ज़रूरी हुवा कि वोह ऐसे फ़ेल के इन्सिदाद में पूरी तवज्जोह सर्फ़ करे और इस को रोकने की तमाम तदाबीर काम में लाए तो अब येह देखना है कि इस के मुह़र्रिकात क्या क्या हैं?

और कौन से आमाल व अश्ग़ाल ऐसे हैं जो इन्सान को ऐसे फ़ेले क़बीह़ के इर्तिकाब पर उभारते हैं जो फ़ेल भी उस का मुमिद्दो मोईन (मददगार) हो सकता हो उस का रोक देना, ज़िना के रोकने वाले के लिए ब मुक़्तज़ाए हिक्मत ज़रूरी होगा। इस लिए अत्तिबाए रूह़ानी और इन के सरदार यानी अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने तमाम मुक़द्दमाते फ़ुजूर को ममनूअ़ फ़रमा दिया। गाना बजाना, वलवला अंगेज़ आ़शिक़ाना नज़्में मूसीक़ी के आलात व अन्दाज़ में अदा करना मुह़य्यिज शहवात है। ह़राम कारी की रोकने वाली शरीअ़त उस को कब गवारा कर सकती है! इस लिए इस क़िस्म का राग और बाजा जो शहवत अंगेज़ हो ममनूअ़ फ़रमाया गया। तस्वीरों के ज़रीए़ से बे ह़याई और बे ह़िजाबी और बद फ़ेली के ज़ौक़ पैदा किए जाते हैं अगर्चे तस्वीरों में और मफ़ासिद भी हैं मगर तस्वीर को ममनूअ़ कर देने से फ़ुजूर के एक बहुत बड़े मुक़द्दमे की बन्दिश हो गई। औ़रतों की बे ह़िजाबी, उन का बे पर्दा सामने आना, दिल पसन्द वज़्अ़ और लिबास में मर्दों के सामने रूनुमा होना बिलयक़ीं बल्कि क़वाए शहवानिय्या में हैजान पैदा करता है, ह़राम कारी, फ़ितने फ़साद का बाइ़स है। औ़रत और मर्द दोनों के जज़्बात इस से ख़राब हो जाते हैं और नफ़्से शहवत परस्त को मुब्तलाए मासिय्यत होने के बहुत से मौक़अ़ हाथ आते हैं। इस लिए जिस हादी को ह़राम कारी का बन्द करना मन्ज़ूर है उस ने पर्दा लाज़िम किया। ज़मानों के बदलने से ह़ालात भी कुछ

बदल जाया करते हैं जिस ज़माने में इन्सान सादा ज़िन्दगी के आदी थे, तबीअ़तों में शर्मो हया थी, औ़रतें मोटा और तमाम जिस्म को ढकने वाला लिबास पहनती थीं । बा वुजूद इस के जिन मौक़ओं पर मर्द हों, वहां से बचती थीं, बे पढ़ी थीं, इश्क़ी क़िस्से कहानियां नॉवेल सुनने देखने का उन्हें कोई मौक़अ़ न था, उस वक़्त पर्दा इतना ज़रूरी न था जिस क़दर आज ज़रूरी है । अगर दुन्या की क़ौमें और दूसरी मिल्लतें भी ज़िना का रोकना ज़रूरी समझतीं और इस के इन्सिदाद का क़स्द रखतीं, तो येह तमाम चीज़ें जो ज़िक्र की गईं वोह उन्हें भी रोकनी ही पड़तीं ।

मगर आज देखा जा रहा है कि औ़रतों को बे क़ैद, बे बाक, बे शर्म, बे हया, शोख़ बनाने ही पर इक्तिफ़ा नहीं किया जाता बल्कि इन की हिर्स व शहवत को उभारने वाले तमाम आलात काम में लाए जाते हैं ।

इसी तरह लड़कों की ऐसी फ़साद अंगेज़ तरबियत की जाती है, बरहना तस्वीरें, बे हयाई की तस्वीरें, बदकारियों की तस्वीरें फैलाई जाती हैं, औ़रतों का लिबास नीम बरहंगी तक तो आम किया जा चुका है, और ज़माने की मौजूदा रफ़्तार बता रही है कि इस हया सोज़ वहशत का वक़्त भी दूर नहीं है जब औ़रतें जानवरों से ज़ियादा बद शुऊ़री के साथ बरहना फिरा करेंगी । तालीम के हीलों से उन्हें पर्दादार मकानों की हिफ़ाज़त से निकाला जाता है । क़िस्म क़िस्म के गाने सुनने का मौक़अ़ दिया जाता है । ग्रामोफ़ोन (रिकॉर्डेड प्लेयर) के रिकोर्डों में बहुत हया सोज़ और शहवत अंगेज़ नज़्मों के गाने भरे जाते हैं और वोह औ़रत मर्द सब सुनते हैं । सिनेमा (केबल और इन्टरनेट के ज़रीए फ़िल्मों, ड्रामों वग़ैरा) में इश्क़ी सोंग (Song) और फ़ासिद जज़्बात पैदा करने वाले मनाज़िर दिखाए जाते हैं । नाविल जिस ज़बों हालत को पहुंच गए हैं वोह किसी से मख़्फ़ी नहीं है । इन तमाम कामों की हिमायत वोही करते हैं जो शहवत परस्ती में अन्धे हो गए हैं और हराम कारी के लिए मौक़अ़ तलाश करते रहते हैं ।

शरीअ़त के हामी जो हराम कारी को रोकना चाहते हैं उन का फ़र्ज़ है कि वोह तमाम मफ़ासिद का सद्दे बाब करें लेकिन उन की येह पाक कोशिशें शहवत परस्तों को अपने मक़्सद में ख़लल अन्दाज़ी नज़र आती हैं और वोह इन की जान व आबरू के दुश्मन हो जाते हैं । येही वजह है कि आज यूरोपी हवाओं में परवरिश पाने वाला बे क़ैद तबक़ा कुल का कुल उ़लमा का दुश्मने जान हो गया है और रात दिन उ़लमा के शिक्वे, शिकायत और उन की बदगोई को इस दुश्मने हया व इन्सानिय्यत गिरोह ने अपना वज़ीफ़ा बना लिया है । अख़्बार हैं तो उन में उ़लमा पर तबर्रा भरा हुवा है । (मीडिया, सोशल मीडिया और) मजलिसें हैं तो उन में उ़लमा पर सब्बो शितम किया जा रहा है मगर फ़र्ज़े हिदायत अदा करने वाले को इस की कोई परवा नहीं है और वोह अपने फ़र्ज़ की अदाएगी में सरगर्म व मुस्तइ़द हैं जो मुसलमान ग़ैरत व नामूस को अ़ज़ीज़ रखते हैं उन का फ़र्ज़ है कि वोह मुसलमानों की आबरू बचाने के लिए इन मफ़ासिद को मिटाने में अपनी तमाम ताक़तें सर्फ़ कर दें । औ़रतों के पर्दे का एहतिमाम बहुत बलीग़ होना चाहिए । सिनेमा देखने से हर शख़्स को एहतिराज़ लाज़िम है । ग्रामोफ़ोन (और दीगर आलात से म्यूज़िक) सुनना छोड़ दो । अगर ऐसा न किया तो इन्सानी शराफ़त और शरई हुर्मत की हिफ़ाज़त न हो सकेगी ।

तालीम की आड़ में भी औ़रतों को बे पर्दा करने के लिए सर मस्ताने शहवत (शहवत में मस्त) बहुत कोशिश कर रहे हैं मुसलमान इन मुग़ालतों से बचें और इन दुश्मनाने मिल्लत व हमिय्यत के हथकन्डों को पहचानें, और अन्जामे कार पर नज़र डालें और इस बलाए आम को दूर करें और उ़लमाए दीन के साथ इर्तिबात व अ़क़ीदत बढ़ाएं और इन के अह़काम के सामने सर झुकाएं । कभी ग़ौर करें कि सिनेमा और ग्रामोफ़ोन वग़ैरा मोहर्रिकात शहवत बहीमत से मुसलमानों को कितना नुक़्सान पहुंच चुका ? उन की कितनी दौलतें बेकार, ज़ाएअ़ हो चुकीं । कितना रुपिया रोज़ मर्रा लुट रहा है, कैसे फ़ासिद अफ़्आ़ल और बुरे अख़्लाक़ पैदा हो रहे हैं । मज़दूर तबक़ा और छोटी छोटी हैसिय्यत के लोग अपनी तमाम मज़दूरी इन लग़्विय्यात में बरबाद कर देते हैं और इन के घर वाले और बच्चे फ़ाक़ा और तंगी की मुसीबतें उठाया करते हैं । इन की अ़क़्लों पर अफ़्सोस है !!!

जो इन तबाही अंगेज़ तूफ़ानों को तरक़्क़ी कहते हैं और ऐसे मुफ़्सिदात के रवाज देने में सई करते हैं । अल्लाह तआ़ला उन्हें हिदायत फ़रमाए कि मुसलमानों को बिल्कुल तबाह कर डालने से वोह अपनी ग़लती पर मुतनब्बेह हो जाएं । आमीन

(मक़ालाते सदरुल अफ़ाज़िल, स. 588 ता 593 मुल्तक़त़न)

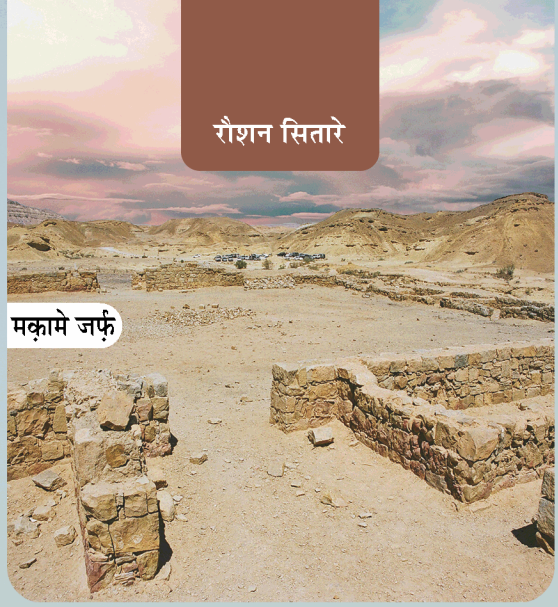

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا

ह़ज़रते उसामा बिन ज़ैद

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो अल्लाह और उस के रसूल से मह़ब्बत करता है उसे चाहिए कि उसामा से भी मह़ब्बत करे।[1]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते उसामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वालिदे माजिद मश्हूर सह़ाबिए रसूल ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब कि वालिदए माजिदा नबिय्ये करीम की रज़ाई वालिदा ह़ज़रते उम्मे ऐमन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا हैं,[2] आप मक्का में पैदा हुए और यहीं परवरिश पाई, इस्लाम के इ़लावा किसी मज़हब के क़रीब न गए, वालिदे माजिद ह़ज़रते ज़ैद के साथ हिजरत की सआ़दत पाई।[3] आप का क़द लम्बा और नाक पतली और बुलन्द थी जब कि रंगत सियाह थी[4] ख़ुश मिज़ाज और मिलनसार थे, इन्तिज़ामी मुआ़मलात सम्भालने में माहिर, समझदार और बा हिम्मत व दिलेर थे।[5]

बारगाहे रिसालत हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में आप की हैसिय्यत घर के फ़र्द की त़रह़ थी आक़ा करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप से शदीद मह़ब्बत फ़रमाया करते थे[6] और बाज़ ख़ुसूसी मवाक़ेअ़ पर अपने साथ रखा करते थे चन्द मिसालें मुलाह़ज़ा कीजिए : सिने 7 हिजरी में सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उ़मरे की अदाएगी के लिए तशरीफ़ ले गए तो आप हुज़ूरे अक़्दस के पीछे ऊंट पर सुवार थे और इसी ह़ालत में मक्का में दाख़िल हुए,[7] 8 हिजरी फ़त्ह़े मक्का के मौक़ेअ़ पर भी आक़ा करीम के पीछे सुवारी पर सुवार थे[8] इसी मौक़ेअ़ पर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم काबतुल्लाह शरीफ़ में दाख़िल हुए तो ह़ज़रते उसामा भी साथ थे[9] हुज़ूरे पुर नूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप से एक डोल पानी मंगा कर ब नफ़्से नफ़ीस कपड़ा तर कर के काबे में मौजूद तसावीर को मिटाने में शिर्कत फ़रमाई।[10] 10 हिजरी ह़िज्जतुल वदाअ़ के मौक़ेअ़ पर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वुक़ूफ़े अ़रफ़ा के बाद ह़ज़रते उसामा का इन्तिज़ार किया और मुज़दल्फ़ा रवानगी को मुअख़्ख़र किए रखा यहां तक कि जब आप आए तो आप को अ़रफ़ात से मुज़दल्फ़ा तक अपने पीछे सुवारी पर बैठने का शरफ़ बख़्शा।[11]

सिपह सालार 11 हिजरी माहे सफ़र में आक़ा करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते उसामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सरबराही में 700 मुजाहिदीन का एक लश्कर रवाना किया जिस में ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ और कई अकाबिर सह़ाबा رضی اللہ عنہم भी शामिल थे लेकिन प्यारे आक़ा की ज़ाहिरी वफ़ात के सबब येह लश्कर वापस लौट आया[12] उस वक़्त आप की उ़म्र 18 या 19 साल थी[13] फिर ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते उसामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इसी मारिके के लिए दोबारा रवाना किया तो आप 35 दिन के बाद कामयाब व कामरान हो कर पलटे।

बारगाहे फ़ारूक़ी जब फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप को देखते तो यूं कहते : यानी ऐ अमीर ! तुम पर सलाम हो, एक बार ह़ज़रते उसामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस की वजह पूछी तो फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : मैं तुम्हें इसी त़रह़ "अमीर" पुकारता रहूंगा क्यूंकि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के वक़्त तुम हमारे अमीरे (लश्कर) थे।[14] ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में आप की तनख़्वाह 3500 (दिरहम) मुक़र्रर फ़रमाई और

अपने बेटे हज़रते अ़ब्दुल्लाह की तनख़्वाह 3000 हज़ार (दिरहम) मुक़र्रर फ़रमाई, बेटे ने अ़र्ज़ की : आप ने हज़रते उसामा को मुझ पर फ़ज़ीलत दी है हालांकि मैं उन लड़ाइयों में भी शरीक हुवा हूं जिस में वोह शिर्कत न कर सके। फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : बेशक ! बारगाहे रिसालत में तुम से ज़ियादा उसामा महबूब थे और तुम्हारे वालिद "उ़मर" से ज़ियादा उसामा के वालिद "ज़ैद" महबूब थे, मैं ने रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के प्यारे को अपने प्यारे पर तरजीह दी है।[15]

वालिदा से महब्बत हज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا अपनी वालिदए मोहतरमा से बहुत महब्बत किया करते थे एक मरतबा मुसलमानों के तीसरे ख़लीफ़ा हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त में खजूर के एक दरख़्त की क़ीमत एक हज़ार दिरहम को पहुंच चुकी थी आप उस दरख़्त के पास गए और उस के ऊपरी सिरे को काट दिया फिर अन्दर से उस का गूंद निकाला और अपनी वालिदा को खिलाया, हज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस की वजह पूछी तो आप ने अ़र्ज़ की : मेरी मां ने मुझ से इस के खाने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की थी और मेरी वालिदा मुझ से जो भी चीज़ मांगती हैं और वोह मेरे बस में हो तो मैं उसे अपनी वालिदा को ज़रूर पेश कर देता हूं (कहते हैं कि खजूर के दरख़्त के अन्दर के गूंद को खाना "**सल**" नामी बीमारी में बहुत फ़ाइदेमन्द है)।[16]

दरबारे अमीरे मुआ़विया हज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप की बहुत ज़ियादा इ़ज़्ज़तो एह़तिराम किया करते थे एक मरतबा हज़रते उसामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास गए तो हज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप को अपने पास बिठाया और निहायत इ़ज़्ज़तो एह़तिराम का मुआ़मला किया।[17]

आ़दात आप हर पीर और जुमेरात का रोज़ा रखा करते थे, एक मरतबा ग़ुलाम ने अ़र्ज़ की : आप ज़ईफ़ और कमज़ोर हो चुके हैं लेकिन फिर भी ख़ास इन दिनों के रोज़े रखते हैं ? आप ने फ़रमाया : प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी इन 2 दिनों के रोज़े रखा करते थे।[18] एक मरतबा आप नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर के दरवाज़े के पास लेट गए और बुलन्द आवाज़ से अश्आ़र पढ़ने लगे। एक बार रौज़ए मुबारका के पास नमाज़ पढ़ रहे थे कि वहां से मरवान का गुज़र हुवा, मरवान ने कहा : क्या तुम क़ब्रे अन्वर के पास नमाज़ पढ़ रहे हो ? आप ने फ़रमाया : मैं हुज़ूरे अकरम से महब्बत करता हूं, येह सुन कर मरवान ने एक निहायत बुरी बात कही और वहां से चल पड़ा, आप उस के पीछे गए और इरशाद फ़रमाया : ऐ मरवान ! तू आ़दतन भी और जान बूझ कर भी बेहूदा गुफ़्तगू करने वाला है।[19]

रिहाइश व वफ़ात वादिए क़ुरा में हज़रते उसामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुछ जायदाद थी जहां आप जाया करते थे[20] आप ने शहरे दिमश्क़ के गिर्दो नवाह में एक बड़ी बस्ती मिज़्ज़ा में रिहाइश रखी फिर वहां से मदीने और शाम के दरमियान वादिए क़ुरा में सुकूनत पज़ीर हो गए फिर मदीने तशरीफ़ ले आए, 54 हिजरी (मदीने से 3 मील दूर) मक़ामे जुर्फ़ में आप ने विसाल फ़रमाया।[21]

मरविय्यात हज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से 128 अह़ादीस मरवी हैं जिन में से 15 बिल इत्तिफ़ाक़ बुख़ारी व मुस्लिम में हैं जब कि इन्फ़िरादी तौ़र पर एक ह़दीस बुख़ारी में और दो ह़दीसें मुस्लिम शरीफ़ में हैं।[22]

---

(1)سیر اعلام النبلاء، 4/120 (2)مرآۃ المناجیح، 6/505 (3)تاریخ ابن عساکر، 4/249 (4)بدر المنیر لابن ملقن، 9/698 (5)سیر اعلام النبلاء، 4/120 (6)تاریخ ابن عساکر، 4/249 (7)فیضانِ صدیق اکبر، ص350 (8)بخاری، 2/306، حدیث: 2988 ملخصاً (9)بخاری 1/188، حدیث: 505 ملخصاً (10)فتاویٰ رضویہ، 21/437 بتغیر (11)سیر اعلام النبلاء، 4/121۔ بخاری، 1/563، حدیث: 1686 (12)سیر اعلام النبلاء، 4/119-کنز العمال، جز5، 3/241، حدیث: 14062 (13)سیر اعلام النبلاء، 4/121-البدایۃ والنہایۃ، 5/562 (14)تاریخ ابن عساکر، 2/60-8، 70 (15)ترمذی، 5/445، حدیث: 3839-اسد الغابہ، 1/102 (16)مستدرک، 4/780، حدیث: 6590 (17)سیر اعلام النبلاء، 4/124، 125 (18)مسند احمد، 8/174، حدیث: 21803 (19)سیر اعلام النبلاء، 4/122-مطالب العالیہ، 7/274، حدیث: 2733 (20)سیر اعلام النبلاء، 4/125 (21)الاصابہ فی تمییز الصحابہ، 1/203 (22)سیر اعلام النبلاء، 4/125۔

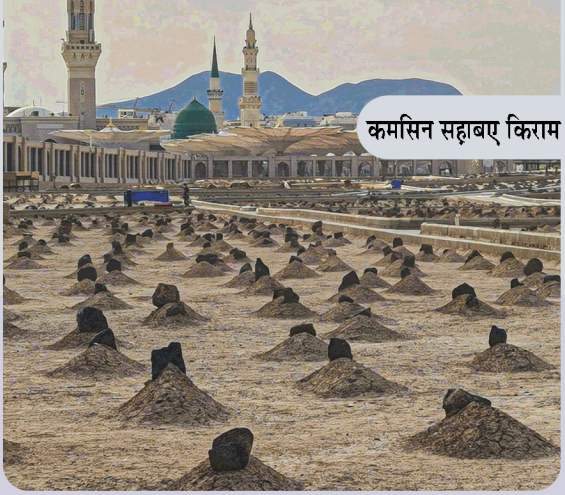

कमसिन सहाबए किराम

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا

हज़रते साइब बिन यज़ीद

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी हज़रते मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में जिन ख़ुश नसीब बच्चों ने हाज़िरी दी उन में हज़रते साइब बिन यज़ीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا भी शामिल हैं, आइए ! इन के बचपन की मुख़्तसर सीरत पढ़ते हैं :

मुख़्तसर तआरुफ़ : आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की विलादत 2 हिजरी में हुई, आप हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर और हज़रते नोमान बिन बशीर के हम उ़म्र थे,(1) आप 7 साल की उ़म्र में अपने वालिदे माजिद के साथ रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मइ़य्यत में हिज्जतुल वदअ़ में शरीक हुए।(2) आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से 22 अहादीसे मुबारका मरवी हैं, हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तक़रीबन 8 साल के थे।(3)

बचपन का यादगार वाक़िआ़ : आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने बचपन का एक यादगार वाक़िआ़ बयान करते हुए फ़रमाते हैं : मुझे याद है कि जब हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ग़ज़वए तबूक से वापस तशरीफ़ ला रहे थे तो मैं भी बच्चों के साथ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस्तिक़्बाल के लिए सनिय्यतुल वदाअ़ की त़रफ़ गया था।(4)

हुज़ूर ने सर पर हाथ फेरा और बरकत की दुआ़ दी : आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मुझे मेरी ख़ाला नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ले गई और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरा भांजा बीमार है, हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे सर पर हाथ फेरा और मेरे लिए दुआ़ए बरकत फ़रमाई, फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वुज़ू फ़रमाया तो मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वुज़ू का पानी पिया, फिर मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पीठ के पीछे खड़ा हुवा और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दोनों कन्धों के दरमियान मोहरे नबुव्वत देखी।(5)

सर के दरमियानी बाल काले : हज़रते अ़त़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि हज़रते साइब बिन यज़ीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के सर के दरमियानी हिस्से के बाल काले थे, जब कि बक़िय्या सर और दाढ़ी के बाल सफ़ेद थे, मैं ने पूछा : ऐ मेरे आक़ा ! अल्लाह पाक की क़सम ! मैं ने आप के सर की मिस्ल कोई सर नहीं देखा कि सर का येह हिस्सा सफ़ेद और येह हिस्सा काला। हज़रते साइब बिन यज़ीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : ऐ मेरे बेटे ! क्या मैं तुम्हें इस बारे में नहीं बताऊं ? मैं ने आप से कहा कि क्यूं नहीं ज़रूर बताइए। तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : मैं बचपन में बच्चों के साथ खेल रहा था कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे पास से गुज़रे तो मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सलाम किया, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सलाम का जवाब दिया और फ़रमाया : तुम कौन हो ? मैं ने अ़र्ज़ की : मैं साइब बिन यज़ीद हूं। हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे सर पर दस्ते शफ़्क़त फेरा और मुझे दुआ़ए बरकत से नवाज़ा। अल्लाह पाक की क़सम ! येह बाल कभी सफ़ेद नहीं होंगे, हमेशा ऐसे ही रहेंगे।(6)

विसाल : आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाल सिने 94 हिजरी में मदीनए मुनव्वरा में हुवा।(7)

अल्लाह पाक की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب، 2/144 (2) ترمذی، 2/270، حدیث: 926 (3) الاعلام للزرکلی، 3/68 (4) بخاری، 3/151، حدیث: 4427 (5) بخاری، 1/89، حدیث: 190 (6) دیکھئے: تاریخ ابن عساکر، 20/115 (7) تہذیب الاسماء واللغات، 1/203۔

رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

आला ह़ज़रत की ह़ाज़िर जवाबी

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने इमामे अहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को कसीर इ़ल्मी, अ़मली और फ़िक्री ख़ूबियों से नवाज़ा, इन में से एक बड़ी ख़ूबी ह़ाज़िर जवाबी भी है। आप की बारगाह में आने वाले किसी भी मस्अले या इस्तिफ़्ता का जवाब बिला किसी तरद्दुद और तअम्मुल के फ़िल बदीह जारी होता, आप की सवानेह़ में कसीर ऐसे वाक़िआ़त व मुलाक़ातें मुन्क़ूल हैं जो आप की ह़ाज़िर जवाबी को इ़यां करती हैं। आइए उन में से चन्द नमूने मुलाह़ज़ा करें :

इ़ल्मे हैअत में महारत

मौलाना ह़ुसैन साह़िब बरेल्वी का बयान है कि जनाब ह़ाजी अ़लाउद्दीन साह़िब, मेरठ के एक बहुत बड़े रईस और बड़े दीनदार थे जिन्हों ने ग्यारह ह़ज किए थे। ह़ाजी साह़िब ने एक मस्अला हैअत का दरयाफ़्त किया। आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : इस की दस क़िस्में हैं पहली का नाम येह है, दूसरी का येह, तीसरी का येह इसी त़रह़ दसों का नाम बताया। फिर फ़रमाया : इन दसों में से सब से पहली क़िस्म की बीस क़िस्में हैं। पहली का नाम येह है, दूसरी का येह, तीसरी का येह इसी त़रह़ बीसों का नाम नम्बर वार बताया। फिर फ़रमाया कि इन बीस में से जो सब से पहले है उस की चालीस क़िस्में हैं इतना सुन कर ह़ाजी साह़िब ने अ़र्ज़ किया : मैं सब को मालूम नहीं करना चाहता हूं। इस तरतीब से बताने पर इस क़दर ह़ैरत होती है कि गोया आप येही मस्अला मुलाह़ज़ा फ़रमा कर तशरीफ़ लाए थे।(1)

आला ह़ज़रत की ह़ाज़िर जवाबी

जनाब सय्यिद अय्यूब अ़ली साह़िब रज़वी का बयान है कि बाद नमाज़े जुम्आ़ आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फाटक में तशरीफ़ फ़रमा हैं ह़ाज़िरीन का मज्मअ़ है लोग सुवाल पूछते जाते हैं आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जवाब देते जा रहे हैं। उस वक़्त जनाब सय्यिद मह़मूद जान क़ादिरी बरकाती नूरी अ़र्ज़ करते हैं ह़ुज़ूर मैं देखता हूं कि हर मस्अले का जवाब आप की नोके ज़बान पर है कभी किसी मस्अले की निस्बत ह़ुज़ूर को येह फ़रमाते नहीं सुना कि किताब देख कर जवाब दिया जाएगा। येह सुन कर आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ किसी क़दर आब दीदा हुए और इरशाद फ़रमाया : सय्यिद साह़िब ! क़ब्र में मुझ से अगर हर मस्अले की निस्बत सुवाल होगा कि इस में तेरा क्या अ़क़ीदा है तो वहां किताबें

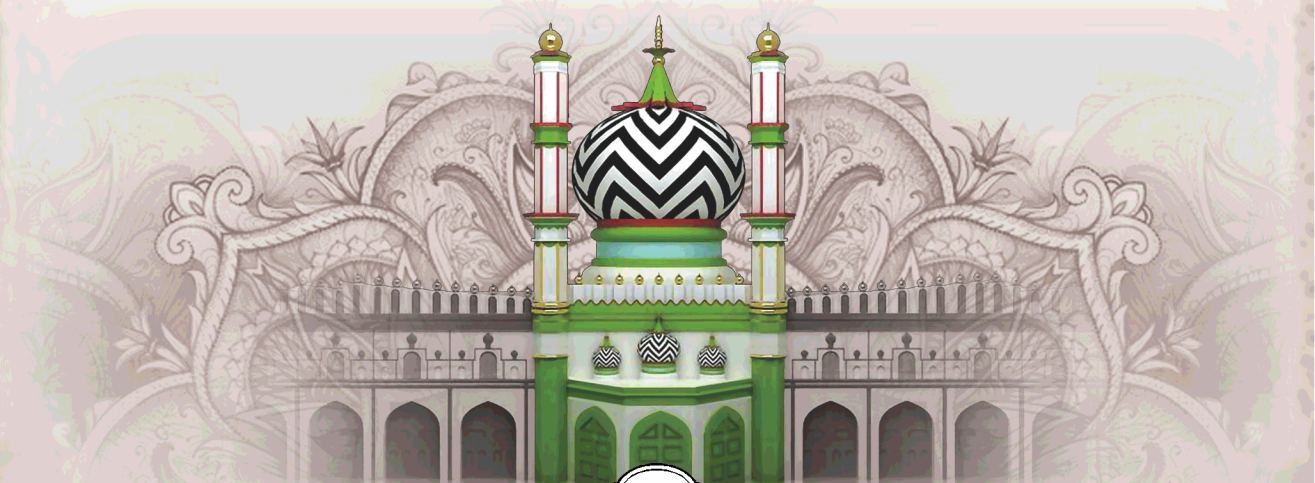

कहां से लाऊंगा।[2]

दनदाने शिकन जवाब

सय्यिदी आला हज़रत رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से किसी ने कहा कि अंग्रेज़ कहते हैं दाढ़ी रखना फ़ित्रत के ख़िलाफ़ है क्यूंकि बच्चा बिग़ैर दाढ़ी के पैदा होता है इस लिए दाढ़ी मुन्डवा देनी चाहिए। आप رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने बरजस्ता इरशाद फ़रमाया : फिर तो दांत भी तुड़वा देने चाहिए क्यूंकि बच्चा बिग़ैर दांतों के पैदा होता है।

इस पर किसी ने मजलिस में उठ कर कहा : वाह हज़रत ! क्या दन्दाने शिकन जवाब दिया है।

हर शख़्स के लिए इस्मे आज़म जुदा है

सय्यिद अय्यूब अ़ली साहिब का बयान है कि बाद नमाज़े जुम्आ़ आला हज़रत رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फाटक में तशरीफ़ फ़रमा हैं हाज़िरीन का चारों त़रफ़ मज्मअ़ है एक साहिब दरयाफ़्त करते हैं कि इस्मे आज़म क्या है ? इरशाद फ़रमाया कि हर शख़्स के लिए इस्मे आज़म जुदा जुदा है इस के बाद ही एक जानिब से नज़र मुबारक हाज़िरीन पर दौरा फ़रमाती है और आप رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ हर एक से बिला तकल्लुफ़ फ़रमाते जाते हैं येह तुम्हारे लिए इस्मे आज़म है, येह तुम्हारे लिए इस्मे आज़म है चुनान्चे, फ़क़ीर (सय्यिद अय्यूब अ़ली) से फ़रमाया يَالَطِيْفُ يَا اَللهُ पढ़ा करो। फिर आख़िर में फ़रमाया कि हर एक साहिब के नाम में जो हुरूफ़ हैं उन के ब क़ाइदा अबजद जो मज्मूई तादाद है उस के हम अ़दद अस्माए इलाहिय्या में एक इस्म वरना दो इस्म दुगनी मरतबा हर रोज़ पढ़ा करें येह उस के लिए मुफ़ीद है।

मसलन अय्यूब अ़ली के आदाद 129 हैं और लतीफ़ के भी 129। लिहाज़ा दस रोज़ से फ़क़ीर 258 बार बिला नाग़ा पढ़ लेता है और इस के बे शुमार बरकात ब करमे तआ़ला मैं ने पाए हैं।[3]

इस्तिक़्बाले क़िब्ला का दुरुस्त मफ़्हूम

आला हज़रत رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ देहली की किसी मस्जिद में नमाज़ पढ़ कर वज़ीफ़े में मश्ग़ूल थे कि एक साहिब नमाज़ पढ़ने के लिए तशरीफ़ लाए और आप رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के क़रीब ही नमाज़ पढ़ने लगे। जब क़ियाम किया तो दीवारे मस्जिद को तकते रहे जब रुकूअ़ में गए तो ठोड़ी ऊपर उठा कर दीवारे मस्जिद की त़रफ़ देखते रहे, जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए उस वक़्त तक आला हज़रत رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ भी वज़ीफ़े से फ़ारिग़ हो चुके थे। आला हज़रत رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उन को पास बुला कर मस्अला बताया कि नमाज़ पढ़ने में किस किस हालत में कहां कहां निगाह होनी चाहिए और फ़रमाया ब हालते रुकूअ़ पांव की उंगलियों पर निगाह होनी चाहिए। येह सुन कर वोह क़ाबू से बाहर हो गए और कहने लगे वाह साहिब बड़े मौलाना बनते हैं, मेरा मुंह क़िब्ले से फेर देते हैं नमाज़ में क़िब्ले की त़रफ़ मुंह होना ज़रूरी है। येह सुन कर आला हज़रत رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उन की समझ के मुताबिक़ कलाम फ़रमाया और दरयाफ़्त किया कि सज्दे में क्या करेंगे ? पेशानी ज़मीन पर लगाने के बदले थोड़ी ज़मीन पर लगाएंगे ? येह चुभता हुवा फ़क़रा सुन कर बिल्कुल ख़ामोश हो गए और उन की समझ में बात आ गई कि क़िब्ला रू होने के येह माना हैं कि क़ियाम के वक़्त न कि अज़ अव्वल ता आख़िर क़िब्ले की त़रफ़ मुंह कर के दीवारे मस्जिद को तका करे।[4]

मुह़र्रम के खिचड़े का सुबूत

आला हज़रत رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से किसी ने मुह़र्रम के खिचड़े के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल किया कि येह कहां से साबित है ? तो आप رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने जवाब इरशाद फ़रमाया : रहा येह कि खिचड़ा कहां से साबित हुवा, जहां से शादी का पुलाव (और) दावत का ज़र्दा साबित हुवा, येह तख़्सीसाते उ़र्फ़िय्या हैं न (कि) शरइय्या।[5]

यानी जिस त़रह़ शादी के ज़र्दे और पुलाव के नाजाइज़ होने पर कोई दलील नहीं इसी त़रह़ मुह़र्रम के खिचड़े के नाजाइज़ होने पर भी कोई दलील नहीं।

मुह़द्दिसे सूरती का एह़तिराम

पीलीभीत में एक दावत में हज़रते वसी अह़मद मुह़द्दिसे सूरती साहिब رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ और आला हज़रत رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ तशरीफ़ फ़रमा थे दस्तर ख़्वान बिछाने से

पेश्तर मेज़बान ने आफ़्ताबा व तश्त लिया कि हाथ धुलाया जाए। हज़रते मुहद्दिस साहिब رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ ने आम उर्फ़ी दस्तूर के मुताबिक़ मेज़बान को इशारा किया कि आला हज़रत رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ के हाथ पहले धुलाए जाएं। आला हज़रत رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ ने बरजस्ता फ़रमाया कि आप मुहद्दिस हैं और आ़लिमे बिस्सुन्नह हैं आप का फ़ैसला बिल्कुल हक़ और आप की शान के लाइक़ है क्यूंकि सुन्नत येह है कि एक मज्मअ़ मेहमानों का हो तो सब से पहले छोटों का हाथ धुलाया जाए और आख़िर में बड़े का हाथ धुलाया जाए ताकि बुज़ुर्ग को हाथ धोने के बाद दूसरों के हाथ धोने का इन्तिज़ार न करना पड़े और खाना ख़त्म हो जाने के बाद सब से पहले बड़े का हाथ धुलाया जाए। मैं शुरूअ़ में इब्तिदा करता हूं लेकिन खा चुकने के बाद आप को इब्तिदा करनी होगी। मौलाना सय्यिद मुहम्मद साहिब मुहद्दिस किछौछवी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ का बयान है कि उस दस्तर ख़्वान पर मैं भी हाज़िर था। आला हज़रत رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ के इरशाद पर हज़रते मुहद्दिस साहिब رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ ने हाथ बढ़ा कर तश्त को अपनी तरफ़ खींचा कि सब से पहले मेरे हाथ धुलाए जाएं और आला हज़रत رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ ने मुस्कुराते हुए चेहरे से फ़रमाया कि अपने फ़ैसले के ख़िलाफ़ अ़मल दर आमद आप की शान के ख़िलाफ़ है। येह दिलचस्प और ख़ुश गवार नक़्शा जब आंखों के सामने आता है तो इस का लुत्फ़ ताज़ा हो जाता है।[6]

मुहद्दिसे किछौछवी की फ़तावा नवेसी

मलिकुल उ़लमा मुफ़्ती ज़फ़रुद्दीन बिहारी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ लिखते हैं आला हज़रत رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ की ख़िदमत में एक मरतबा पन्दरह बत़्न का मुनासख़ा (इल्मे मीरास की इस्तिलाह़) आया, चूंकि आला हज़रत رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ की राय में मौलाना सय्यिद मुहम्मद साहिब رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ ने फ़न्ने हिसाब की तक्मील बा ज़ाबित़ा की थी और आना पाई का हिसाब बिल्कुल आसानी से करते थे लिहाज़ा येह मुनासख़ा इन्हीं के सिपुर्द किया गया। मौलाना सय्यिद मुहम्मद साहिब رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ का बयान है कि इन का सारा दिन इसी मुनासख़े के ह़ल करने में लग गया, शाम को आला हज़रत رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ की आ़दते करीमा के मुताबिक़ जब बाद नमाज़े अ़स्र फाटक में निशस्त हुई और फ़तावा पेश किए जाने लगे तो मैं ने भी अपना क़लम बन्द किया हुवा जवाब इस उम्मीद के साथ पेश किया कि आज आला हज़रत رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ की दाद लूंगा। पहले इस्तिफ़्ता सुनाया, फ़ुलां मरा और इतने वारिस छोड़े और फ़ुलां मरा इतने वारिस छोड़े। ग़रज़ पन्दरह मौतें वाक़ेअ़ होने के बाद ज़िन्दों पर इन के ह़क़्क़े शरई के मुताबिक़ तर्का तक़्सीम करना था। मरने वाले तो पन्दरह थे लेकिन ज़िन्दा वारिसों की तादाद पचास से ऊपर थी। इस्तिफ़्ता ख़त्म हुवा कि आला हज़रत رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ ने फ़रमाया कि आप ने फ़ुलां को इतना फ़ुलां को इतना हिस्सा दिया होगा। उस वक़्त मेरा ह़ाल दुन्या की कोई ज़बान ज़ाहिर नहीं कर सकती थी। उ़लूम और मआ़रिफ़ की येह हाज़िर जवाबियां जिस की कोई मिसाल सुनने में नहीं आई।[7]

---

(1)حیاتِ اعلیٰ حضرت، 1/227(2)حیاتِ اعلیٰ حضرت، 1/225(3)حیاتِ اعلیٰ حضرت 1/229(4) حیاتِ اعلیٰ حضرت، 1/305(5)فتاویٰ رضویہ، 24/494
(6)حیاتِ اعلیٰ حضرت، 1/138(7)حیاتِ اعلیٰ حضرت، 1/139۔

इमामे अहले सुन्नत, आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ की मुबारक ज़िन्दगानी और कसीरुल जिहत दीनी ख़िदमात पर रौशनी डालता हुवा "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना" का ख़ुसूसी शुमारा

फ़ैज़ाने इमामे अहले सुन्नत

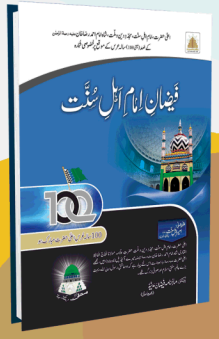

इमामे अहले सुन्नत की महारते इल्मे ह़दीस के दो पहलू

सय्यिदी आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की शख़्सिय्यत हर इल्मी व अ़मली पहलू से कामिल नज़र आती है। आप माहिर तरीन मुफ़्ती भी हैं, बे मिसाल आ़लिमे दीन भी हैं और सिर्फ़ आ़शिक़े रसूल नहीं बल्कि आ़शिक़ाने रसूल के इमाम हैं, इस के साथ साथ आप इल्मे ह़दीस के माहिर आ़लिम बल्कि अपने वक़्त के अमीरुल मोमिनीन फ़िल ह़दीस हैं।

आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की इल्मे ह़दीस में महारत के ह़वाले से 2 पहलू बहुत अहम हैं :

1 इल्मी और फ़न्नी एतिबार से आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को इल्मे ह़दीस में कैसी महारत थी ? यानी ह़दीसे पाक के जो दरजात हैं, ह़दीसे पाक की मुख़्तलिफ़ अक़्साम उ़लमाए किराम ने मुक़र्रर की हैं, इन दरजात और अक़्साम को समझने में, ह़दीसे पाक का माना और मफ़्हूम समझने में, ह़दीसे पाक से इल्म की बातें अख़्ज़ करने में आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को कैसी महारत थी ?

2 अह़ादीस पढ़ने में, अह़ादीस याद करने, याद रखने और दूसरों तक पहुंचाने में आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का अन्दाज़ क्या है ?

1 इल्मे ह़दीस में इल्मी व फ़न्नी महारत

वोह उ़लमाए किराम जिन्हों ने बाक़ाइदा इल्मे ह़दीस को सीखा, अह़ादीस को समझा, याद किया और इस में महारत ह़ासिल की, इन उ़लमाए किराम के मुख़्तलिफ़ त़बक़ात और दर्जे हैं, किसी को **मुह़द्दिस** कहा जाता है, किसी को **ह़ाफ़िज़ुल ह़दीस** कहते हैं, किसी को **हुज्जत** कहा जाता है, कोई **शैख़ुल ह़दीस** होते हैं। इसी त़रह़ ह़दीसे पाक के उ़लमाए किराम का एक दरजा है : अमीरुल मोमिनीन फ़िल ह़दीस। इल्मे ह़दीस का वोह आ़लिम जो अपने ज़माने के तमाम उ़लमाए किराम में सब से ज़ियादा ह़दीसे पाक का माहिर हो, उसे अमीरुल मोमिनीन फ़िल ह़दीस कहा जाता है।

सय्यिदी आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के दौरे मुबारक के एक बहुत बड़े मुह़द्दिस अ़ल्लामा वसी अह़मद सूरती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه जो कि आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के दोस्त भी थे, इन्हों ने 40 साल ह़दीसे पाक की ख़िदमत की और ह़दीसे पाक की सब से मोतबर किताब **बुख़ारी शरीफ़** इन को ज़बानी याद थी, इतने पाए के मुह़द्दिस थे।

मुह़द्दिस वसी अह़मद सूरती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के एक शागिर्द सय्यिद मुह़म्मद अशरफ़ी मियां जीलानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ख़ुद भी बाद में बहुत बड़े मुह़द्दिस बने और मुह़द्दिसे आज़मे हिन्द कहलाए।

एक बार मुह़द्दिसे आज़मे हिन्द सय्यिद मुह़म्मद अशरफ़ी मियां رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه अपने उस्तादे मोह़तरम मुह़द्दिस वसी अह़मद सूरती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर थे, उन्हों ने सुवाल पूछा : आ़ली जाह ! आप आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का ज़िक्र बहुत कसरत से करते हैं, इस की क्या वजह है ? शागिर्द का येह सुवाल सुन कर मुह़द्दिस वसी अह़मद सूरती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की **आंखों में आंसू आ गए** और जोशे अ़क़ीदत में तड़प

कर फ़रमाया : मैं और मेरा ख़ानदान اَلْحَمْدُ لِلّٰه पहले से मुसलमान हैं मगर जब से मैं आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मिलने लगा हूं, मुझे ईमान की ह़लावत मिल गई है, बस जिन के सदक़े से ईमान की ह़लावत नसीब हुई है, उन की याद से अपने दिल को तस्कीन देता रहता हूं।

मुह़द्दिसे आज़मे हिन्द सय्यिद मुह़म्मद अशरफ़ी मियां رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : उस्तादे मोह़तरम मुह़द्दिस वसी अह़मद सूरती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का येह ईमान अफ़रोज़ जवाब सुन कर मैं ने अ़र्ज़ किया : आ़ली जाह ! क्या आला ह़ज़रत इल्मे ह़दीस में आप के बराबर हैं ? सूरती عَلَيْهِ الرَّحْمَة ने बरजस्ता फ़रमाया : हरगिज़ नहीं । फिर फ़रमाया : शहज़ादे ! आप कुछ समझे कि इस **"हरगिज़ नहीं"** का क्या मत़लब है ? सुनिए आला ह़ज़रत अमीरुल मोमिनीन फ़िल ह़दीस हैं अगर मैं सालहा साल आला ह़ज़रत से इल्मे ह़दीस सीखता रहूं, उन की शागिर्दी इख़्तियार करूं, तब भी मैं उन के क़दमों के बराबर नहीं पहुंच सकूंगा। (माहनामा अल मीज़ान बम्बई, स. 247)

माहिरीने इल्मे ह़दीस के लिए इजाज़ते सनद

मुह़द्दिसीने किराम अपने शागिर्दों को या जिन को ह़दीसे पाक बयान करें, उन को सनदे ह़दीस की इजाज़त देते हैं और येह उसूल है कि जिस को येह इजाज़त ह़ासिल न हो, वोह उस ह़दीसे पाक को अपनी सनद से बयान नहीं कर सकता। येह एक उसूल की बात है और इस उसूल की तफ़्सीलात हैं, जिन्हें उ़लमाए किराम ही समझते हैं।

दूसरे ह़ज के मौक़ेअ़ पर जब आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मक्कए मुकर्रमा ह़ाज़िर हुए तो उस वक़्त मिस्र, शाम और कई मुल्कों से उ़लमाए किराम ह़ज के लिए आए हुए थे।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को अल्लाह पाक ने शोहरत अ़ता फ़रमाई है, जब उन उ़लमाए किराम को पता चला कि आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه तशरीफ़ लाए हुए हैं तो येह उ़लमाए किराम जूक़ दर जूक़ आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर होने लगे, इन में कई उ़लमा थे जिन्हों ने आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से इल्मे दीन के बाज़ मुश्किल मसाइल समझे, कई वोह थे जिन्हों ने बाज़ उ़लूम ह़ासिल किए और उस वक़्त के बड़े बड़े मुह़द्दिसीन की एक तादाद थी जिन्हों ने इस मौक़ेअ़ पर बा क़ाइदा आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से ह़दीसे पाक की सनदें भी ह़ासिल कीं।

येह तमाम इजाज़ते अस्नाद अल इजाज़ातुल मतीनह के नाम से शाएअ़ भी हो चुकी हैं।

पीलीभीत में 3 घन्टे का बयान

1303 हिजरी में मुह़द्दिस वसी अह़मद सूरती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने पीलीभीत में मद्रसतुल ह़दीस की बुन्याद रखी, इस मौक़ेअ़ पर मुह़द्दिसे सूरती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मुल्क के बड़े बड़े उ़लमाए किराम को दावत दी, अ़ज़ीमुश्शान इज्तिमाअ़ का इन्इ़क़ाद किया गया, आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه भी तशरीफ़ फ़रमा थे, मुह़द्दिसे सूरती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में बयान करने की दरख़्वास्त पेश की, चुनान्चे, आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने बड़े बड़े उ़लमा, मुह़द्दिसीन, मुफ़क्किरीन की मौजूदगी में इल्मे ह़दीस के मौज़ूअ़ पर 3 घन्टे ज़बरदस्त इल्मी निकात बयान फ़रमाए, जब आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने बयान ख़त्म किया तो मुह़द्दिस सहारनपूरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के बेटे बे साख़्ता उठे और आगे बढ़ कर जल्दी से आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के हाथों को बोसा दिया और फ़रमाया : इस वक़्त अगर वालिदे माजिद (अह़मद अ़ली सहारनपुरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) होते तो आप की तबह़ह़ुरे इल्मी की दिल खोल कर दाद देते।

(जहाने इमाम अह़मद रज़ा, 10 / 388)

2 आला ह़ज़रत और ह़दीसे पाक का मुत़ालआ़

एक बार सय्यिदी आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से पूछा गया : आप ने ह़दीसे पाक की कौन कौन सी किताबें दर्स की (यानी पढ़ी, पढ़ाई) हैं ? इस पर आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने पहले तो इल्मे ह़दीस की चन्द किताबों के नाम गिनवाए मसलन मुस्नदे इमामे आज़म, मुअत्ता इमाम मुह़म्मद, किताबुल आसार, किताबुल ख़िराज, शर्ह़े मआ़नियुल आसार, मुअत्ता इमाम मालिक, मुस्नदे शाफ़ेई, मुस्नदे इमाम अह़मद, सुनने दारिमी, बुख़ारी, मुस्लिम, अबू दावूद, तिरमिज़ी, नसाई, इब्ने माजा, मिश्कात, बुलूगुल

मराम, अमलुल यौम वल्लैलह, अत्तरग़ीब वत्तरहीब यूं किताबों के नाम गिनावने के बाद फ़रमाया : येह और इन समेत इल्मे ह़दीस की 50 से ज़ाइद किताबें मेरे दर्सो तदरीस और मुत़ालए़ में रहीं।

(जहाने इमाम अह़मद रज़ा, 10 / 462)

سُبْحٰنَ اللہ ! 50 से ज़ाइद किताबें आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के दर्सो तदरीस और मुत़ालए़ में रही हैं। ब ज़ाहिर शायद मह़सूस हो रहा हो कि "सिर्फ़ 50 किताबें...!"

अगर इन किताबों की तफ़्सीलात में जाएं तो येह सिर्फ़ नहीं है, 50 किताबों का मत़लब है : हज़ारों सफ़ह़ात और लाखों ह़दीसें। येह चन्द किताबें जिन के आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने नाम गिनवाए हैं, सिर्फ़ इन की ही तफ़्सील देखी जाए तो येह टोटल : 49 जिल्दें हैं, जिन के कुल सफ़ह़ात 29 हजार 900 से ज़ाइद और इन में कुल अह़ादीस 1 लाक 34 हज़ार से ज़ाइद हैं।

आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ और तब्लीग़े ह़दीस

बेशक अह़ादीस पढ़ना, इन्हें समझना बड़े कमाल की बात है, फिर इस से भी बड़ा कमाल है : अह़ादीस को याद रखना, इन्हें दूसरों तक पहुंचाना। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अह़ादीस पढ़ते भी थे, उन्हें याद भी रखते थे और दूसरों तक पहुंचाया भी करते थे। आप जो बात कहते उसे कुरआनी आयात या अह़ादीस से साबित किया करते, आप से सुवाल होता तो इस के जवाब में कसरत से अह़ादीस ज़िक्र करते, उन अह़ादीस के मआ़नी बयान फ़रमाते, अह़ादीस की शर्ह़ बयान किया करते थे, जैसा कि

- सुवाल हुवा : सजदए ताज़ीमी (यानी किसी को ख़ुदा समझ कर नहीं बल्कि उसे बन्दा समझ कर सिर्फ़ उस की ताज़ीम के लिए, उसे सजदा करना) जाइज़ है या नहीं। आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने कुरआनी आयात और 40 अह़ादीस की रौशनी में साबित किया कि ग़ैरे ख़ुदा की ताज़ीम के लिए सजदा करना पहली शरीअ़तों में जाइज़ था, हमारी शरीअ़त में ह़राम है।

- सुवाल हुवा : कुछ लोग कहते हैं : प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को दाफ़िउ़ल बला (यानी मुसीबत दूर करने वाले) कहना शिर्क है। सय्यिदी आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इस के जवाब में 300 अह़ादीस ज़िक्र कर के बताया कि اَلْحَمْدُ لِلّٰہ हमारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह पाक की अ़त़ा से दाफ़ेए़ रंजो बला हैं।

- सुवाल हुवा : बाज़ लोग कहते हैं : रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अगर तमाम नबियों से अफ़्ज़ल हैं तो इस पर कुरआनो ह़दीस से दलील लाओ। आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इस सुवाल का ईमान अफ़रोज़ जवाब लिखा और 100 अह़ादीस से साबित किया कि अल्लाह पाक के फ़ज़्ल से हमारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तमाम नबियों के सरदार हैं।

- फ़िरिश्तों की पैदाइश कैसे होती है ? इस मौज़ूअ़ पर कलाम करते हुए आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने 24 अह़ादीस ज़िक्र फ़रमाई।

- हमारे आक़ा व मौला, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रोज़े क़ियामत शफ़ाअ़त फ़रमाएंगे, इस मौज़ूअ़ पर कलाम करते हुए 40 अह़ादीस ज़िक्र कीं।

- दाढ़ी की ज़रूरत व अहम्मिय्यत पर 56 अह़ादीस।

- वालिदैन के ह़ुक़ूक़ के मुतअ़ल्लिक़ 91 अह़ादीस।

इसी त़रह़ और बे शुमार मौज़ूआ़त पर आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने सैंकड़ों अह़ादीस ज़िक्र फ़रमाईं, इन अह़ादीस से मसाइल अख़्ज़ फ़रमाए, इन अह़ादीस के मआ़नी बयान किए, फिर येह नहीं कि आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने सिर्फ़ ह़दीस बयान कर दी, बल्कि आप जब भी ह़दीसे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं, उस ह़दीसे पाक का ह़वाला भी लिखते हैं।

क़ारेईने किराम ! इमामे अहले सुन्नत, आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की सीरत का येह पहलू निहायत इख़्तिसार के साथ बयान किया गया है, इल्मे ह़दीस में इमामे अहले सुन्नत की ख़िदमात को एक दो मज़ामीन तो क्या मुजल्लदात में भी समेटा नहीं जा सकता। अल्लाह करीम हमें इमामे अहले सुन्नत का फ़ैज़ान ता ह़यात अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

मज़ार हज़रते नईमुल्लाह बहराइची नक़्शबन्दी رحمۃ اللہ علیہ

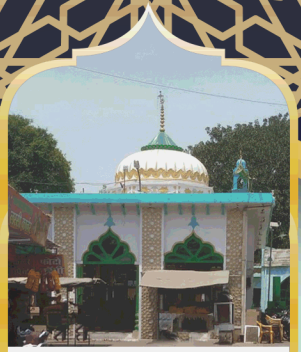
मज़ार हज़रते शाह मीना शैख़ निज़ामुद्दीन मुहम्मद चिश्ती رحمۃ اللہ علیہ

मज़ार हज़रते शाह महमूद राजन رحمۃ اللہ علیہ

मज़ार हज़रते मक़्बूल अहमद शाह कश्मीरी رحمۃ اللہ علیہ

मज़ार हज़रते बाबा बुल्हे शाह رحمۃ اللہ علیہ

अपने बुज़ुर्गों को याद रखिए

सफ़रुल मुज़फ़्फ़र इस्लामी साल का दूसरा महीना है। इस में जिन सहाबए किराम, औलियाए उ़ज़्ज़ाम और उ़लमाए इस्लाम का विसाल या उ़र्स है, उन में से मज़ीद 12 का तआ़रुफ़ मुलाहज़ा फ़रमाइए :

सहाबए किराम علیہم الرضوان 1 हज़रते अबू लैला औसी अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ग़ज़वए बद्र के इलावा सब ग़ज़वात में शिर्कत फ़रमाई, बाद में कूफ़ा मुन्तक़िल हो गए थे, हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ तमाम जंगों में हिस्सा लिया, आप की शहादत जंगे सिफ़्फ़ीन (सफ़र 37 हिजरी) में हुई।[1] 2 हज़रते हाशिम बिन उ़तबा क़ुरशी ज़ोहरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हज़रते सअ़द बिन अबी वक़्क़ास के भतीजे थे, फ़त्हे मक्का के दिन ईमान लाए और कई माख़िों बिल ख़ुसूस जंगे यरमूक, क़ादिसिय्या और जलूला में शानदार ख़िदमात पेश कीं, आप क़ुरैश के बहादुरों और फ़ुज़ला में शामिल थे, जंगे सिफ़्फ़ीन (सफ़र 37 हिजरी) में आप हज़रते अ़ली के लश्कर के अ़लम बरदार थे, इसी में बे जिगरी से लड़ते हुए शहीद हो गए।[2]

औलियाए किराम رحمہم اللہ السلام 3 बानिए ख़ानक़ाहे मीनाइय्या लखनऊ हज़रते मख़्दूम शाह मीना शैख़ निज़ामुद्दीन मुहम्मद चिश्ती رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत एक सिद्दीक़ी सूफ़ी ख़ानदान में हुई और 23 सफ़र 884 हिजरी को विसाल फ़रमाया। आप मादर ज़ाद वली, उ़लूमे अ़क़्लिय्या व नक़्लिय्या में माहिर, साहिबे मुजाहिदा, तारिकुद्दुन्या, क़ुत्बे वक़्त, सिलसिलए चिश्तिय्या निज़ामिय्या के मश्हूर शैख़े त़रीक़त, इल्मे शरीअ़त व रूहानिय्यत के जामेअ़ और उ़लमा व अ़वाम के मर्जअ़ थे।[3] 4 वलिय्ये शहीर शाह राजन हज़रते शैख़ महमूद चिश्ती गुजराती رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत एक सूफ़ी घराने में हुई, वालिदे गिरामी सिलसिलए चिश्तिय्या निज़ामिय्या के शैख़े त़रीक़त थे, आप उन्हीं के मुरीदो ख़लीफ़ा थे, अहले गुजरात ने आप से ख़ूब ज़ाहिरी व बात़िनी फ़ैज़ ह़ासिल किया। विसाल 22 सफ़र 900 हिजरी में हुवा। मज़ार बकारतपुरा, अनावड़ा, पीरान पटन, सूबा गुजरात हिन्द में है।[4] 5 क़ुत्बुल कबीर हज़रते शैख़ अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक हमवी गीलानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ हमाह शाम में मौजूद ख़ानदाने ग़ौसुल आज़म के चश्मो चराग़, शैख़ुल मशाइख़, सिलसिलए क़ादिरिय्या के शैख़े त़रीक़त, ख़ासो आ़म में मक़्बूल, ह़ल्ब, दिमश्क़ और त़राबुलुस वग़ैरा में कसीर सियाह़त करने वाले थे, आप का विसाल 6 सफ़र 901 हिजरी को हुवा, अपने दादा के मज़ार के साथ (बाबुन्नाऊ़रा हमाह में) दफ़्न किए गए।[5]

6 वलिय्ये कामिल ह़ज़रते ख़्वाजा मुह़म्मद इस्ह़ाक़ क़ादिरी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ की पैदाइश पाखड़ी शरीफ़ हिन्द के एक सूफ़ी घराने में हुई और विसाल 10 सफ़र 1010 हिजरी को हुवा, आप सिल्सिलए क़ादिरिय्या के शैख़े त़रीक़त, साह़िबे मुजाहिदा और मुस्तजाबुद्दावात थे।[6] 7 सय्यिदुल आ़शिक़ीन ह़ज़रते बाबा बुल्हे शाह सय्यिद मुह़म्मद अ़ब्दुल्लाह जिलानी क़ादिरी शत़्त़ारी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ की विलादत 1061 हिजरी में उच शरीफ़ में हुई और विसाल 6 सफ़र 1181 हिजरी को फ़रमाया। आप आ़लिमे बा अ़मल, वलिय्ये कामिल और मश्हूर सूफ़ी पंजाबी शाइ़र हैं।[7] 8 नक़्शबन्दी बुज़ुर्ग ह़ज़रते अ़ल्लामा नईमुल्लाह बहराइची नक़्शबन्दी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ की विलादत 1153 हिजरी को मौज़अ़ भदवानी ज़िल्अ़ बहराइच में हुई और 5 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1218 हिजरी बहराइच में नमाज़ की ह़ालत में विसाल फ़रमाया। आप जय्यिद आ़लिमे दीन, शैख़े त़रीक़त और मुसन्निफ़े कुतुब थे। बहराइच और लखनऊ में दर्सो तदरीस और रुश्दो हिदायत में मसरूफ़ रहे, दो दरजन कुतुब में से **मामूलाते मज़्हरिय्या, बिशाराते मज़्हरिय्या और रिसाला दर अह़वाले ख़ुद** भी हैं।[8]

उ़लमाए किराम رحمہم اللہ السلام

9 शरफ़ुल मिल्लते वद्दीन ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुर्रह़ीम सिद्दीक़ी जरही शीराज़ी शाफ़ेई رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ के आबाओ अज्दाद का तअ़ल्लुक़ जिर्ह नज्द काज़रून (सूबा फ़ारिस, ईरान) से है। आप की विलादत 3 सफ़र 744 हिजरी को शीराज़ (ईरान) में और विसाल 17 सफ़र 828 हिजरी को लार (Lar, सूबा फ़ारिस, ईरान) में हुवा। ह़िफ़्ज़े क़ुरआन के बाद आप ने अ़रबो अ़जम के कसीर उ़लमा से इस्तिफ़ादा किया, आप मुह़द्दिस, मुतकल्लिम, साह़िबे तसव्वुफ़ और कसीरुल फ़ैज़ बुज़ुर्ग थे, शीराज़, इराक़, मिस्र, शाम और फ़िलिस्त़ीन के उ़लमा आप से मुस्तफ़ीज़ हुए, आप इ़बादतो तिलावत में कसरत करने, नफ़्ली रोज़े रखने और पंज वक़्ता बा जमाअ़त नमाज़ की अदाएगी का एहतिमाम करने में ह़रीस थे।[9] 10 हुस्सामुल मिल्लते वद्दीन ह़ज़रते इमाम अबू मुह़म्मद ह़सन बिन मुह़म्मद बिन अय्यूब शरीफ़ुन्निसाबह ह़सनी ह़ुसैनी शाफ़ेई رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ की विलादत क़ाहिरा मिस्र में 767 हिजरी के आख़िर में हुई, ह़िफ़्ज़े क़ुरआन के बाद उ़लमाए मिस्र, उ़लमाए ह़रमैन और उ़लमाए शाम व बैतुल मुक़द्दस से उ़लूमे इस्लामिय्या ह़ासिल किए, फ़राग़त के बाद इस्कन्दरिय्या शहर में तदरीस व तस्नीफ़ में मसरूफ़ हो गए, ख़ल्के़ कसीर ने आप से इस्तिफ़ादा किया, आप फ़क़ीह व फ़ाज़िल, साबिरो शाकिर, मुतवाज़ेअ़ व सलीमुल फ़ित़रत और मर्जए ख़ासो आ़म थे। इब्तिदाए सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 866 हिजरी को विसाल फ़रमाया, तदफ़ीन बाबुन्नस्र (क़ाहिरा मिस्र) से बाहर हुई।[10] 11 शम्सुल उ़लमा ह़ज़रते मौलाना ख़्वाजा मक़्बूल अह़मद शाह कश्मीरी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ की पैदाइश 1313 हिजरी को डंगी विछ ज़िल्अ़ बारहमुला कश्मीर में हुई और विसाल 5 सफ़र 1390 हिजरी को फ़रमाया, मज़ारे मुबारक क़ल्आ़ मह़ल्ला, क़स्बा हांगल, धारवाड़, कर्नाटक हिन्द में है। आप मद्रसए नोमानिय्या देहली, जामिअ़तुल अज़्हर मिस्र और बरेली शरीफ़ में इमाम अह़मद रज़ा ख़ान से मुस्तफ़ीज़ हुए, आप आ़लिमे दीन, शैख़े त़रीक़त और मुस्लेह़ उम्मत थे।[11] 12 मुसन्निफ़े कुतुबे कसीरा ह़ज़रते अ़ल्लामा वलिय्युल्लाह फ़िरंगी मह़ल्ली رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ की पैदाइश 1186 हिजरी मुत़ाबिक़ 1768 ईसवी में हुई और आप ने सफ़र 1271 हिजरी मुत़ाबिक़ 1853 ईसवी में विसाल फ़रमाया। आप इ़ल्मी बुलन्दियों पर फ़ाइज़ थे, माली व दुन्यावी त़ौर पर भी मज़्बूत़ थे। सारी ज़िन्दगी दर्सो तदरीस और तस्नीफ़ो तालीफ़ में गुज़ारी, फ़ारिसी में तफ़्सीरे क़ुरआन समेत 20 तसानीफ़ व ह़वाशी तालीफ़ फ़रमाए।[12]

---

(1) الاصابہ فی تمییز الصحابہ، 292/7 (2) الاصابہ فی تمییز الصحابہ، 6/404، 405- الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب، 4/107 (3) خزینۃ الاصفیاء، 2/297 تا 299- کتابی سلسلہ 10، سلطان المشائخ نمبر، ص409 (4) تذکرۃ الانساب، ص83 (5) اتحاف الاکابر، ص401 (6) انسائیکلوپیڈیا اولیائے کرام، 1/147 (7) فیضان بابا بلھے شاہ، ص3- اردو دائرہ معارفِ اسلامیہ، 4/850 (8) تاریخ مشائخ نقشبندیہ از علامہ نفیس احمد مصباحی، ص696 تا 702 (9) الضوء اللامع لاہل القرن التاسع، 4/180، 181 (10) ہدیۃ العارفین، 1/286- الضوء اللامع لاہل القرن التاسع، 3/121 (11) تذکرہ سید مقبول احمد شاہ کشمیری، ص59 (12) ممتاز علمائے فرنگی محل، ص118 تا 121-

सरीद

नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मरग़ूब ग़िज़ाओं में सरीद भी शामिल है। शोरबे में भिगोई हुई रोटी को "सरीद" कहते हैं, लज़्ज़त और फ़ाइदे से लबरेज़ सरीद हज़ारों साल से लोगों की ग़िज़ाओं में शामिल है। सब से पहले ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने सरीद तय्यार किया था।[1]

नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के परदादा हाशिम नाम से मश्हूर हैं ह़ालांकि इन का अस्ली नाम "अ़म्र" था, चूंकि एक बार आप ने रोटियों का चूरा कर के ऊंट के गोश्त के शोरबे में सरीद बना कर लोगों को ख़ूब पेट भर कर खिलाया था चुनान्चे, उस दिन से लोग आप को "हाशिम" (रोटियों का चूरा करने वाला) कहने लगे।[2]

सरीद से मुतअ़ल्लिक़ अह़ादीस

सरीद से मुतअ़ल्लिक़ कई अह़ादीस मौजूद हैं। यहां इन अह़ादीस को दो ह़िस्सों में तक़्सीम किया गया है पहली क़िस्म में इन अह़ादीस को ज़िक्र किया है जिन में नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सरीद तनावुल फ़रमाने का ज़िक्र है जब कि दूसरी क़िस्म में वोह अह़ादीस ज़िक्र की हैं जिन में सिर्फ़ सरीद का ज़िक्र है। आइए ! अह़ादीसे पाक मुलाह़ज़ा कीजिए :

पहली क़िस्म

1 ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने गोश्त और कद्दू शरीफ़ से बनाया गया सरीद तनावुल फ़रमाया।[3]

2 ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने एक बकरी ज़ब्ह़ कर के उस का गोश्त पकाया और रोटियों का चूरा कर के सरीद बनाया और इस को बारगाहे नुबुव्वत में ले कर ह़ाज़िर हुए। हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم ने इस को तनावुल फ़रमाया, हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाने लगे कि खाओ मगर हड्डी मत तोड़ना, जब सब लोग खाने से फ़ारिग़ हो गए तो हुज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तमाम हड्डियों को एक बरतन में जम्अ़ फ़रमाया और उन हड्डियों पर अपना दस्ते मुबारक रख कर कुछ कलिमात पढ़े तो येह मोजिज़ा ज़ाहिर हुवा कि वोह बकरी (ज़िन्दा हो कर) कान झाड़ती हुई खड़ी हो गई।[4]

3 हज़रते इकराश رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में सरीद और चरबी का प्याला लाया गया तो हम खाने के लिए आगे बढ़े, मैं उस के किनारों से खाने लगा तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ इकराश एक जगह से खाओ क्यूंकि येह एक ही खाना है। फिर हमारे पास एक थाल लाया गया जिस में मुख़्तलिफ़ क़िस्म के छूहारे थे तो मैं अपने सामने से खाने लगा और रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का हाथ थाल में घूमने लगा फिर आप ने फ़रमाया : ऐ इकराश जहां से चाहो खाओ क्यूंकि येह एक त़रह़ का नहीं है।[5]

ह़दीसे पाक की शर्ह़

- नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का अपने सामने से खाना ह़ज़रते इकराश की तालीम के लिए था वरना हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हर त़रफ़ से खा सकते थे क्यूंकि आप अपने ख़ादिम के साथ खा रहे थे।
- इस ह़दीसे पाक से मालूम हुवा कि अगर फल, मिठाई भी एक क़िस्म की हो तो हर शख़्स अपने सामने से ही खाए, अगर चन्द क़िस्म की हो तो जहां से जो चाहे उठा ले मगर फिर भी दरमियान से न खाए बल्कि दूसरे किनारों से खा सकता है।
- ख़याल रहे कि अगर बरतन में अकेला आदमी ही खा रहा है तब भी अपने सामने से ही खाए कि येह ही सुन्नत है जब कि एक ही खाना हो।[6]
- ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सरजिस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि मैं ने नबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा और आप के साथ गोश्त रोटी खाई या फ़रमाया सरीद खाया।[7]

दूसरी क़िस्म 1 ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मह़बूब तरीन खाना रोटी का सरीद था और खजूर व मख्खन का सरीद था।[8] 2 ह़ज़रते सलमान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तीन चीज़ों में बरकत है, जमाअ़त, सरीद और सह़री में।[9] 3 ह़ज़रते वासिला बिन अस्क़अ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा ने एक दफ़्अ़ भूक की शिकायत की और मुझ से कहने लगे कि आप रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में जाइए ! और हमारे लिए खाना त़लब कीजिए, मैं ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से खाने का पूछा तो उन्हों ने रोटी के चन्द ख़ुश्क टुकड़े पेश किए। फिर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक बड़ा प्याला मंगवाया और रोटी के टुकड़े उस में डाल कर दस्ते मुबारक से सरीद बनाने लगे और देखते ही देखते प्याला सरीद से भर गया। फिर इरशाद फ़रमाया : ऐ वासिला ! जाओ और 10 अस्ह़ाब को ले आओ चुनान्चे, मैं गया और दस लोगों को बुला लाया फिर इसी त़रह़ मज़ीद तीन बार दस दस अफ़राद आए और सब ने पेट भर कर खाना खाया। जब कि प्याला जूं का तूं भरा हुवा था। फिर आपने इरशाद फ़रमाया : ऐ वासिला ! इसे आ़इशा के पास ले जाओ।[10]

सरीद के फ़वाइद जहां सरीद लज़्ज़त में अपनी मिसाल आप है वहीं सरीद के त़िब्बी फ़वाइद भी बहुत ज़ियादा हैं, आइए : चन्द फ़वाइद मुलाह़ज़ा कीजिए :

- आसानी से हज़्म हो जाता है।
- सरीद के टुकड़े पेट और मेदे के लिए बहुत मुफ़ीद हैं।
- जिस्म और आसाब को क़ुव्वत बख़्शता है। क्यूंकि सरीद में रोटी और गोश्त जैसे अज्ज़ा शामिल होते हैं। लिहाज़ा हमें चाहिए कि सरीद खाएं और अपने मुअ़ज़्ज़ज़ मेहमानों का भी सरीद से इकराम करें। सुन्नत पर भी अ़मल हो जाएगा और मज़्कूरा बाला फ़वाइद भी ह़ासिल होंगे।[11]

---

(1)مرقاۃ، 8/265 (2)مدارج النبوۃ، 2/8 (3)دیکھئے: ابن ماجہ، 4/28، حدیث: 3303 (4)المواہب اللدنیۃ وشرح الزرقانی، 7/66 (5)ابن ماجہ، 4/15، حدیث: 3274-ترمذی، 3/335، حدیث: 1855 ملخصاً (6)مراٰۃ المناجیح، 6/45 (7)دیکھئے: مسلم، ص982، حدیث: 6088 (8)ابوداؤد، 3/492، حدیث: 3783 (9)معجم کبیر، 6/251، حدیث: 6127 (10)دیکھئے: معجم الکبیر، 22/86، حدیث: 208
(11)مختلف طبّی ویب سائٹس۔

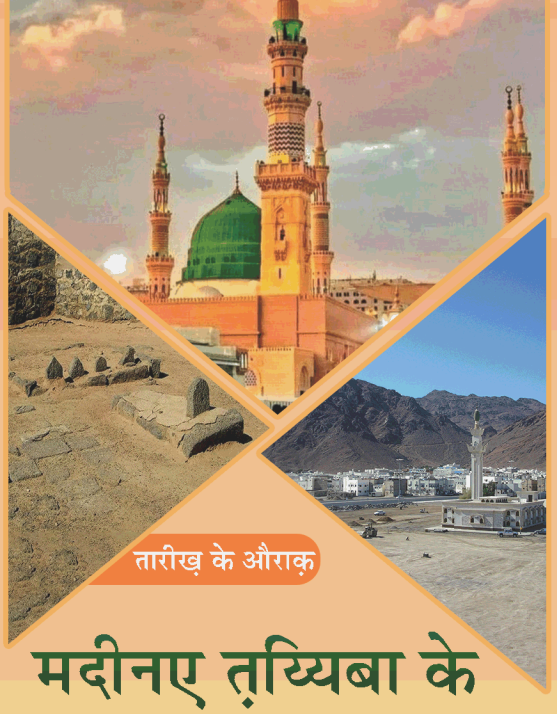

तारीख़ के औराक़

मदीनए त़य्यिबा के तारीख़ी व मुक़द्दस मक़ामात

क़ाइनात के अ़ज़ीम शहर मदीनए मुनव्वरा में ऐसे बहुत से मक़ामात हैं जो अपनी निस्बतों और तारीख़ी यादों के सबब बा बरकत और मुक़द्दस हो गए, अहले ईमान शुरूए इस्लाम से ही इन के साथ अपनी अ़क़ीदतों का इज़हार करते चले आ रहे हैं, बाज़ मुतबर्रक मक़ामात का तज़िकरा यहां किया जाता है।

जन्नतुल बक़ीअ़

येह मस्जिदे नबवी शरीफ़ के जवारे रह़मत में जुनूबे मशरिक़ी जानिब वाक़ेअ़ मदीनए मुनव्वरा का क़दीम और मश्हूर व मुबारक क़ब्रिस्तान है, बादे विसाल सह़ाबए किराम की तदफ़ीन के लिए ख़ास तौ़र पर येह जगह मुन्तख़ब की गई, रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मुझे इस जगह (बक़ीअ़ के इन्तिख़ाब) का हुक्म हुवा है।[1] अ़रबी में बक़ीअ़ दरख़्त वाले मैदान को कहते हैं इस मैदान में पहले ग़रक़द के दरख़्त थे इसी लिए इस जगह का नाम **"बक़ीउ़ल ग़रक़द"** हो गया।[2] अ़रब लोग उ़मूमन अपने क़ब्रिस्तानों को जन्नत कह कर पुकारते हैं इसी लिए **"जन्नतुल बक़ीअ़"** पुकारा जाने लगा।[3] यहां तक़रीबन 10 हज़ार सह़ाबए किराम, अजिल्ला अहले बैते अत़हार, बेशुमार ताबेईने किराम, तब्अ़ ताबेईन और औलियाए इ़ज़ाम और दीगर ख़ुश बख़्त मुसलमान मदफ़ून हैं।[4] चन्द मश्हूर नाम येह हैं : अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते इमामे ह़सन मुज्तबा, सय्यिदए काइनात ख़ातूने जन्नत फ़ातिमतुज़्ज़हरा, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द, ह़ज़रते अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब, ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़, उम्मुल मोमिनीन आ़इशा सिद्दीक़ा व दीगर उम्महातुल मोमिनीन, ह़ज़रते इब्राहीम बिन मुह़म्मद रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, ह़ज़रते अबू हुरैरा और ह़ज़रते ह़स्सान बिन साबित رضی اللہ عنہم اجمعین।[5] मुहाजिरीन में से सब से पहले ह़ज़रते उ़स्मान बिन मज़ऊ़न और अन्सार में से सब से पहले ह़ज़रते अस्अ़द बिन ज़ुरारा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़्न हुए।[6] ज़ाइरीने मदीना के लिए उ़लमाए किराम फ़रमाते हैं : क़ब्रिस्तान जन्नतुल बक़ीअ़ की ज़ियारत सुन्नत है रौज़ए मुनव्वरा की ज़ियारत कर के वहां जाए ख़ुसूसन जुम्आ़ के दिन।[7]

जबले उ़ह़ुद

येह एक जन्नती पहाड़ है जो मदीनए पाक के शुमाल में वाक़ेअ़ है, इस की बुलन्दी 3533 फ़ुट है, ग़ज़वए उ़ह़ुद इसी पहाड़ के दामन में पेश आया था। बहुत सी अह़ादीसे मुबारका में सवाब और गुनाह को बयान करने के लिए इस पहाड़ की मिसाल दी गई है, हुज़ूरे पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इस पहाड़ से मह़ब्बत है, इरशाद फ़रमाया : احد یحبنا و نحبه جبل من جبال الجنة तर्जमा : उ़ह़ुद जन्नती पहाड़ है जो हम से मह़ब्बत करता है और हम उस से मह़ब्बत करते हैं।[8] एक रोज़ नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़, ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आज़म और ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم उ़ह़ुद पहाड़ पर थे कि यकायक वोह हिलने लगा तो रसूले पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

اثبت أحد فإنما عليك نبی وصدیق و شهیدان

यानी ऐ उ़ह़ुद ! ठहर जा, तुझ पर एक नबी, एक सिद्दीक़ और दो शहीद ही तो हैं।[9]

मज़ारात शुहदाए उहुद

3 हिजरी में ग़ज़वए उहुद पेश आया, इस तारीख़ी जंग में 70 मुसलमान शहीद हुए, इन की शहादत के 46 साल बाद मैदाने उहुद से एक नहर की खुदाई के दौरान बाज़ शुहदाए उहुद की क़ब्रें खुल गईं। अहले मदीना और दूसरे लोगों ने देखा कि शुहदाए किराम के कफ़न सलामत और बदन तरो ताज़ा हैं और उन्हों ने अपने हाथ ज़ख़्मों पर रखे हुए हैं। जब ज़ख़्म से हाथ उठाया जाता तो ताज़ा ख़ून निकल कर बहने लगता। यूं मालूम होता था कि पुर सुकून नींद सो रहे हैं।[10] हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हर साल के शुरूअ में शुहदाए उहुद की क़ब्रों (मज़ारात) पर तशरीफ़ लाते और यूं सलाम फ़रमाते : اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَی الدَّارِ यानी सलामती हो तुम पर तुम्हारे सब्र का बदला तो पिछला घर क्या ही ख़ूब मिला।[11] इमामुल मुहद्दिसीन हज़रते शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लिखते हैं : जो शख़्स इन शुहदाए उहुद से गुज़रे और उन को सलाम करे येह क़ियामत तक उस पर सलाम भेजते रहते हैं। शुहदाए उहुद और ख़ास तौर पर मज़ारे अमीरे हम्ज़ा से बारहा सलाम के जवाब की आवाज़ सुनी गई है।[12]

मज़ार सय्यिदुश्शुहदा हज़रते हम्ज़ा رضی اللہ عنہ

जबले उहुद के दामन में शुहदाए उहुद के मज़ारात में हज़रते हम्ज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मज़ार फ़ाइज़ुल अन्वार ख़ुसूसी अहम्मिय्यत का हामिल है, आशिक़ाने रसूल बड़ी अक़ीदत व एहतिराम के साथ यहां हाज़िरी देते हैं और ख़ूब बरकतें पाते हैं। आप हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हक़ीक़ी चचा, रज़ाई भाई, बहुत बहादुर व दिलेर थे, असदुल्लाह, असदुर्रसूल, फ़ाइलुलल ख़ैरात, काशिफ़ुल कुरबात और सय्यिदुश्शुहदा आप के अल्क़ाबात हैं, आप भी ग़ज़वए उहुद में शहीद हुए। तबक़ाते इब्ने सअद में है कि मैदाने उहुद में नहर की खुदाई के दौरान इत्तिफ़ाक़ स बेलचा आप के पांव मुबारक में लग गया जिस की वजह से ज़ख़्म से ताज़ा ख़ून बह निकला।[13]

येह हैं शहरे महब्बत मदीनए तय्यिबा की कुछ ख़ुश्बूदार बातें और तज़्किरए ख़ैर वरना इस क फ़ज़ाइलो कमालात, ख़ुसूसिय्यात, ख़ूबियां, अज़मतें और रिफ़अतें बे शुमार हैं, इस शहर की अज़मत व रिफ़अत के क्या कहने जिस की शानो शौकत को ख़ालिक़े अर्ज़ो समा अल्लाह पाक बयान करे, जिस की फ़ज़ीलतें हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़बाने हक़ तर्जुमान से ज़ाहिर हों, जिस की महब्बत में दुन्या भर के आशिक़ाने रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तड़पते हों, जहां पहुंचने पर अहले महब्बत की आंखों से ख़ुशी के आंसू और जुदाई पर ग़म के आंसू रवां हो जाते हो, जिस के दरो दीवार और ज़र्रा ज़र्रा चूमने को दिल चाहता हो, जिस की ख़ाक को आंखों का सुर्मा बनाया जाता हो, जिस की चाहत व उल्फ़त में दिल धड़कते हों, जहां ज़िन्दगी बसर करने की तमन्ना और मौत की आरज़ू की जाती हैं, अल ग़रज़ येह मदीनए पाक ख़ालिक़ व मख़्लूक़ की महबूब तरीन जगहों में से एक है और वजह सिर्फ़ येह है कि येह अल्लाह के हबीब, ताजदारे काइनात हज़रत मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का शहरे मुबारक है, वहां आप तशरीफ़ फ़रमा हैं। आशिक़े रसूल अमीरे अहले सुन्नत मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ कहते हैं :

मदीना इस लिए अत्तार जानो दिल से है प्यारा
कि रहते हैं मेरे आक़ा मेरे सरवर मदीने में[14]

ख़ुलासा येह कि मदीनए मुनव्वरा गोया दोनों जहां का ताज है, ब क़ौले शाइर

वोह मदीना जो "कौनैन का ताज" है जिस का दीदार मोमिन की मेराज है
ज़िन्दगी में ख़ुदा हर मुसलमान को वोह मदीना दिखा दे तो क्या बात है

(1) مستدرک، 4/191، حدیث:4919 (2) مراٰۃ المناجیح، 2/525 (3) جستجوئے مدینہ، ص598 (4) جنتی زیور، ص390، عاشقان رسول کی 130 حکایات، ص262 (5) وفاء الوفا، 3/1411 وغیرہ (6) شرح ابوداؤد عینی، 5/272 (7) جنتی زیور، ص390 (8) معجم کبیر، 17/18، حدیث:19 (9) بخاری، 2/527، حدیث:3686 (10) سبل الہدیٰ والرشاد، 4/252- کتاب المغازی للواقدی، 1/267- دلائل النبوۃ للبیہقی، 3/291 (11) مصنف عبدالرزاق، 3/381، حدیث: 6745 (12) جذب القلوب، ص177 (13) طبقات ابن سعد، 3/7 (14) وسائل بخشش (مرمم)، ص283-

नए लिखारी

(New Writers)

नए लिखने वालों के इन्आ़म याफ़्ता मज़ामीन

ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام की क़ुरआनी नसीह़तें

अबू सोबान अ़ब्दुर्रह़मान अ़त्तारी
(दरजए दौरए ह़दीस जामिअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने मदीना)

नसीह़त का लुग़वी माना "अच्छी सलाह़, नेक मश्वरा" के हैं। इसी का एक दूसरा लफ़्ज़ है नसीह़त आमेज़ यानी इ़बरत दिलाने वाली बात।

(फ़ीरोज़ुल लुग़ात, स. 1430)

नसीह़त क़ौली भी होती है और फ़ेली भी। लोगों को अल्लाह व रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पसन्दीदा बातों की त़रफ़ बुलाने और नापसन्दीदा बातों से बचाने और दिल में नर्मी पैदा करने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ वज़ो नसीह़त भी है। वाज़ो नसीह़त दीनी, अख़्लाक़ी, रूह़ानी और मुआ़शरती ज़िन्दगी के लिए ऐसे ही ज़रूरी है जैसे त़बीअ़त ख़राब होने की सूरत में दवा ज़रूरी है। येही वजह है कि अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अपनी क़ौमों को वाज़ो नसीह़त फ़रमाते रहे, ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام ने भी अपनी क़ौम को मुख़्तलिफ़ मवाक़ेअ़ पर मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ में नसीह़तें फ़रमाईं जिन का ज़िक्र क़ुरआने पाक में कई मक़ामात पर किया गया है उन में से चन्द दर्जे ज़ैल हैं :

1 अल्लाह पाक से डरने की नसीह़त : ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام ने अपनी क़ौम को नसीह़त करते हुए फ़रमाया : ﴿فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِیْعُوْنِ(۵۰)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो। (پ3، اٰل عمران:50)

2 अल्लाह की इ़बादत और सीधे रास्ते की नसीह़त : क़ुरआने करीम में ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام की एक नसीह़त का ज़िक्र कुछ यूं मिलता है :

﴿اِنَّ اللّٰهَ رَبِّیْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِیْمٌ(۵۱)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : बेशक अल्लाह मेरा और तुम्हारा सब का रब है तो उसी की इ़बादत करो। येही सीधा रास्ता है। (پ3، اٰل عمران:51)

3 शिर्क की मज़म्मत करते हुए इस से बचने की नसीह़त : ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام ने अपनी क़ौम को नसीह़त फ़रमाई कि ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं अल्लाह पाक के साथ शिर्क करने वालों पर अल्लाह पाक ने जन्नत ह़राम और जहन्नम ह़लाल फ़रमा दी है और इसी त़रह़ ज़ालिमों का भी कोई मददगार नहीं जैसे इरशादे बारी तआ़ला है :

﴿وَقَالَ الْمَسِيْحُ يٰبَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّیْ وَرَبَّكُمْؕ اِنَّهٗ مَنْ یُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللّٰهُ عَلَیْهِ الْجَنَّةَ وَمَاْوٰىهُ النَّارُؕ وَمَا لِلظّٰلِمِیْنَ مِنْ اَنْصَارٍ(۷۲)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मसीह ने तो येह कहा था ऐ बनी इसराईल अल्लाह की बन्दगी करो जो मेरा रब और तुम्हारा रब बेशक जो अल्लाह का शरीक ठहराए तो अल्लाह ने उस पर जन्नत हराम कर दी और उस का ठिकाना दोज़ख़ है और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।

(پ6، المآئدۃ:72)

4 मुस्तहिक़्क़े इबादत सिर्फ़ अल्लाह पाक है : मुस्तहिक़्क़े इबादत वोही हो सकता है जो नफ़्अ़ नुक़्सान वग़ैरा हर चीज़ पर ज़ाती क़ुदरत व इख़्तियार रखता हो और जो ऐसा न हो वोह मुस्तहिक़्क़े इबादत नहीं हो सकता जैसा कि ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ السَّلَام का क़ौल क़ुरआने पाक में यूं बयान फ़रमाया गया है :

﴿قُلْ اَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا یَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّ لَا نَفْعًاؕ وَاللّٰهُ هُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ(۷۶)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ क्या अल्लाह के सिवा ऐसे को पूजते हो जो तुम्हारे नुक़्सान का मालिक न नफ़्अ़ का और अल्लाह ही सुनता जानता है।

(پ6، المآئدۃ:76)

अल्लाह पाक हमें अम्बियाए किराम عَلَیْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मुबारक नसीह़तों पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और इन के सदक़े नेकियां करने और गुनाहों से बचने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और हमें फ़ैज़ाने अम्बिया से माला माल फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दो चीज़ों के बयान से तरबियत फ़रमाना

अ़ली अक्बर
(दरजए ख़ामिसा जामिअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आज़म)

तरबियत का लुग़वी माना किसी को नश्वो नुमा कर के ह़द्दे कमाल तक पहुंचाना है। इन्सान को पस्ती से निकाल कर बुलन्दी पर गामज़न करने और इन्हें आगे बढ़ाने में जिन सिफ़ात की ज़रूरत हो उन की देख भाल कर के परवान चढ़ाने का नाम तरबियत है।

हमारे प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस दुन्या में तशरीफ़ लाए और अपने मुबारक फ़रामीन के ज़रीए मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ में पूरी दुन्या की इस्लाह़ फ़रमाई। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मुबारक अन्दाज़ येह भी था कि दो चीज़ों को बयान कर के इस्लाह़ फ़रमाते थे। यहां वोह 5 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ज़िक्र किए जा रहे हैं जिन में रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दो चीज़ों को बयान कर के तरबियत फ़रमाई है :

1 ह़सद नहीं मगर दो में : नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ह़सद नहीं मगर दो शख़्सों पर एक वोह जिसे अल्लाह पाक ने क़ुरआन सिखाया वोह रात और दिन के औक़ात में उस की तिलावत करता है, उस के पड़ोसी ने सुना तो कहने लगा : काश ! मुझे भी वैसा ही दिया जाता जो फ़ुलां शख़्स को दिया गया तो मैं भी उस की त़रह़ अ़मल करता। दूसरा वोह शख़्स कि जिसे अल्लाह पाक ने माल दिया वोह राहे ह़क़ में माल को ख़र्च करता है, किसी ने कहा : काश !मुझे भी वैसा ही दिया जाता जैसा फ़ुलां शख़्स को दिया गया तो मैं भी उसी की त़रह़ अ़मल करता। (بخاری، 3/410،حدیث:5026)

2 दो नापसन्दीदा चीज़ें : प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : दो चीज़ें ऐसी हैं जिन्हें इन्सान नापसन्द करता है। वोह मौत को नापसन्द करता है ह़ालां कि मौत मोमिन के लिए फ़ितने से बेहतर है और माल की कमी को नापसन्द करता है ह़ालांकि माल की कमी ह़िसाब को कम कर देगी। (मिरआतुल मनाजीह़, 7/72)

3 दो नेमतें : फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : दो नेमतें ऐसी हैं जिन के बारे में बहुत से लोग धोके में हैं, एक सेह़त और दूसरी फ़राग़त।

(بخاری،4/222،حدیث:6412)

4 अल्लाह पाक की पसन्दीदा दो ख़स्लतें : ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़बीलए अ़ब्दुल क़ैस के सरदार से फ़रमाया : तुझ में दो ख़स्लतें ऐसी हैं जिन्हें अल्लाह पाक पसन्द फ़रमाता है। बुर्दबारी और वक़ार।

(ترمذی،3/407،حدیث:2018)

5 दो कलिमे ज़बान पर हल्के मीज़ान पर भारी : आख़िरी नबी ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : दो कलिमे रह़मान को बहुत ज़ियादा मह़बूब हैं येह ज़बान पर बहुत ही हल्के और मीज़ाने अ़मल में बहुत ही भारी हैं। (वोह दो कलिमे येह हैं :)

سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ سُبْحَانَ اللّٰہِ الْعَظِیْم

(بخاری،4/600،حدیث:7563)

अल्लाह पाक की बारगाह में दुआ है कि हमें हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक फ़रामीन पर अमल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और हमें रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की सआदत नसीब फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मेहमान के हुक़ूक़

मुहम्मद अबू बक्र अ़त्तारी
(दरजए साबिआ़ जामिअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आज़म)

इस्लाम एक मुकम्मल ज़ाबिते ह़यात है जिस में अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने ज़िन्दगी गुज़ारने के तमाम तर मुआ़मलात में इन्सान की राहनुमाई फ़रमाई और जहां दीगर कसीर अह़काम बयान फ़रमाए वहीं मेहमान नवाज़ी को भी एक बुन्यादी वस्फ़ और आला ख़ुल्क़ के तौ़र पर बताया गया है और मेहमान की ताज़ीम, ख़िदमत और ज़ियाफ़त वग़ैरा का एहतिमाम मेज़बान पर इस की हैसिय्यत के मुताबिक़ लाज़िम क़रार दिया। जैल में इन्हीं हुक़ूक़ में से पांच हुक़ूक़ बयान किए गए हैं। मुलाह़ज़ा कीजिए :

1 ख़न्दा पेशानी के साथ इस्तिक़्बाल करना : मेहमान के हुक़ूक़ में से है कि उन का पुर तपाक इस्तिक़्बाल किया जाए। नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुख़्तलिफ़ क़बाइल से आने वाले वुफ़ूद के इस्तिक़्बाल और इन की मुलाक़ात का ख़ास तौ़र पर एहतिमाम फ़रमाया करते थे और हर वफ़्द के आने पर आप عَلَيْهِ السَّلَام निहायत ही उ़म्दा पोशाक ज़ेबे तन फ़रमा कर काशानए अक़्दस से निकलते और अपने ख़ुसूसी अस्ह़ाब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم को भी हुक्म देते थे कि बेहतरीन लिबास पहन कर आएं। (सिरातुल जिनान, 7 / 498)

2 इ़ज़्ज़तो एह़तिराम से पेश आना : मेहमान के हुक़ूक़ में येह भी शामिल है कि उन के साथ इ़ज़्ज़तो एह़तिराम वाला मुआ़मला किया जाए। जैसा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जो अल्लाह पाक और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिए कि मेहमान का एह़तिराम करे।

(بخاری، 4/136، حدیث:6136)

इस ह़दीसे मुबारका का मत़लब येह नहीं कि जो मेहमान की ख़िदमत न करे वोह काफ़िर है। मत़लब येह है कि मेहमान की ख़ातिर तवाज़ोअ़ करना ईमान का तक़ाज़ा और मोमिन की अ़लामत है।

(देखिए : मिरातुल मनाजीह़, 6/52)

3 अच्छा खाना खिलाना : मेहमान के बुन्यादी हुक़ूक़ में से एक येह भी है कि मेज़बान उन के लिए अपनी हैसिय्यत के मुताबिक़ उ़म्दा व लज़ीज़ खाने का एतिमाम करे। क़ुरआने पाक में जलीलुल क़द्र पैग़म्बर ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام का इसी (ज़ियाफ़त) के साथ वस्फ़ बयान किया गया है। चुनान्चे, जब आप عَلَيْهِ السَّلَام के पास फ़िरिश्ते ब सूरते इन्सान तशरीफ़ लाए तो आप ने बछड़े के भुने हुए गोश्त से उन की ज़ियाफ़त फ़रमाई। (सिरातुल जिनान, 4 /464)

4 मेहमान नवाज़ी में ख़ुद मश्ग़ूल हो और खाने में शामिल हो : बहारे शरीअ़त में है : मेज़बान को चाहिए कि मेहमान की ख़ातिर दारी में ख़ुद मश्ग़ूल हो, ख़ादीमों के ज़िम्मे इस को न छोड़े कि येह ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की सुन्नत है अगर मेहमान थोड़े हों तो मेज़बान उन के साथ खाने पर बैठ जाए कि येही तक़ाज़ाए मुरव्वत है और बहुत से मेहमान हों तो उन के साथ न बैठे बल्कि उन की ख़िदमत और खिलाने में मश्ग़ूल हो।

(बहारे शरीअ़त, 3 / 394)

5 रुख़्सत करने के लिए दरवाज़े तक छोड़ना : मेज़बान को चाहिए कि वोह अपने मेहमानों को रुख़्सत करने के लिए दरवाज़े तक छोड़ने आए। अल्लाह पाक के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया येह सुन्नत से है कि इन्सान अपने मेहमान के साथ घर के दरवाज़े तक जाए। (ابن ماجہ، 4/52، حدیث:3358)

मेहमान को दरवाज़े तक पहुंचाने में उस का एह़तिराम है, पड़ोसियों का इत्मीनान कि वोह जान लेंगे कि उन का दोस्त अ़ज़ीज़ आया है कोई अजनबी नहीं आया। इस में और बहुत ह़िक्मतें हैं : आने वाले की कभी मह़ब्बत में खड़ा हो जाना भी सुन्नत है।

(देखिए : मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 67)

दुआ है कि अल्लाह पाक हमें रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों पर अमल करते हुए हमेशा मेहमानों की ताज़ीम करते रहने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

आओ बच्चो ! हदीसे रसूल सुनते हैं

बड़ों की इज़्ज़त कीजिए

मक्की मदनी आक़ा, हज़रत मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : لَيْسَ مِنَّا مَنْ لَّمْ يَرْحَمْ صَغِيْرَنَا وَيُوَقِّرْ كَبِيْرَنَا यानी जो हमारे छोटों पर रहम न करे और हमारे बड़ों की इज़्ज़त न करे वोह हम में से नहीं। (ترمذی،3/369،حدیث:1926)

मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस तरह की अहादीस का मतलब बयान करते हुए फ़रमाते हैं : हमारी जमाअ़त से या हमारे तरीक़े वालों से या हमारे प्यारों से नहीं या हम उस से बेज़ार हैं वोह हमारे मक़्बूल लोगों में से नहीं, येह मतलब नहीं कि वोह हमारी उम्मत या हमारी मिल्लत से नहीं। (देखिए : मिरआतुल मनाजीह, 6 / 560)

प्यारे बच्चो ! हमारा प्यारा दीन, दीने इस्लाम हमारी हर पहलू पर तरबियत करता है और मुआ़शरे में लोगों के साथ हमारा अन्दाज़ व रवय्या कैसा होना चाहिए ? इस बारे में भी हमारी राहनुमाई करता है। हर इन्सान चाहता है कि उस के साथ अच्छा सुलूक किया जाए उस की इ़ज़्ज़त की जाए, उसे अच्छे अल्फ़ाज़ के साथ पुकारा जाए वग़ैरा वग़ैरा। लिहाज़ा आप को भी चाहिए कि जो आप से इ़ल्म या उ़म्र में बड़े हों उन की इ़ज़्ज़त करें, अच्छे अन्दाज़ व अल्फ़ाज़ के साथ उन को पुकारें और उन की बे अदबी न करें। और जो बच्चे उ़म्र में आप से छोटे हैं हदीसे पाक पर अ़मल करते हुए उन के साथ शफ़्क़त और प्यार व महब्बत से पेश आएं, बिला वजह उन को डराने, मारने और धमकाने से परहेज़ करें।

अल्लाह पाक हमें अहादीसे मुबारका पढ़ कर उन पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

हुरूफ़ मिलाइए !

ا	ز	ہ	ا	د	خ	ہ	ا	ر
ع	ف	ہ	ی	ف	ط	ص	م	د
ل	ز	د	ی	ا	ا	ق	ب	ع
م	ح	ی	ب	س	ت	ر	ر	ل
ہ	ع	ی	ب	و	ی	ا	ا	م
ر	ل	س	ت	غ	ف	ن	م	ا
ح	د	ی	ا	ع	د	و	ح	ق
ی	م	ا	ل	س	ا	ر	ق	ر
ر	ک	ذ	س	ر	م	ی	ع	ا
ر	ق	ا	ل	ع	د	ا	ل	س

सफ़रुल मुज़फ़्फ़र के महीने में इन्तिक़ाल करने वाले बुज़ुर्गों में एक नाम सुल्तान सलाहुद्दीन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का भी है। अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस्लामी बादशाहों में सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी जैसा कोई नहीं। (حسن المحاضرۃ،2/224) सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه कसरत से क़ुरआन की तिलावत करने और सुनने वाले, इ़ल्म और उ़लमा से महब्बत करने वाले, अल्लाह की रिज़ा की ख़ातिर अपना माल ख़र्च करने वाले और बहुत बड़े आ़शिक़े रसूल थे। उन की अच्छी आ़दतों की वजह से अल्लाह पाक ने उन को ऐसा मरतबा दिया कि उ़लमा फ़रमाते हैं : सलाहुद्दीन अय्यूबी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की क़ब्र के पास दुआ़ क़बूल होती है। (الانس الجلیل،1/542)

प्यारे बच्चो ! आप ने ऊपर से नीचे, दाएं से बाएं हुरूफ़ मिला कर पांच अल्फ़ाज़ तलाश करने हैं जैसे टेबल में लफ़्ज़े "**अय्यूबी**" तलाश कर के बताया गया है। तलाश किए जाने वाले 5 अल्फ़ाज़ येह हैं :

1 اسلام 2 قرآن 3 علم 4 علما 5 دُعا۔

दस्ते मुबारक की बरकत

सब से आख़िरी नबी, मुहम्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जामेउ़ल मोजिज़ात थे, वक़्तन फ़ वक़्तन आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ात से त़रह़ त़रह़ के हैरत अंगेज़ मोजिज़े ज़ाहिर हुवा करते थे । आइए ! नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का एक बा कमाल मोजिज़ा पढ़िए :

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : मैं उ़क़्बा बिन अबी मुईत़ की बकरियां चराया करता था ।

एक दिन रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के साथ मेरे पास से गुज़रे और फ़रमाया : ऐ लड़के ! क्या तुम्हारे पास दूध है ? मैं ने अ़र्ज़ की : जी हां, लेकिन मैं इस पर अमीन हूं । रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क्या तुम्हारे पास कोई ऐसी बकरी है जिस पर नर जानवर न आया हो (यानी जो अभी दूध न देने लगी हो) ? तो मैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास ऐसी बकरी ले आया, नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस के थनों पर हाथ फेरा तो उस के थनों में दूध उतर आया, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक बरतन में उस का दूध दोहा, ख़ुद भी पिया और ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को भी पिलाया, फिर बकरी के थनों से फ़रमाया कि सुकड़ जाओ तो बकरी के थन सुकड़ गए । मैं कुछ देर बाद रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास आया और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे भी येह सिखा दीजिए । हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे सर पर दस्ते शफ़्क़त फेरा और मुझे दुआ़ दी कि अल्लाह पाक तुम पर रह़मतें नाज़िल फ़रमाए, बेशक तुम समझदार लड़के हो ।

(مسند احمد، 6/82، حدیث:3598)

मोजिज़े से ह़ासिल होने वाले निकात :

याद रहे कि बकरी हमेशा दूध नहीं देती बल्कि मख़्सूस ह़ालात व अय्याम में उस के थनों में दूध उतरता है, उन अय्याम के इ़लावा उस के थन ख़ुश्क होते हैं, मगर इस वाक़िए़ में बिग़ैर दूध वाली बकरी के थन दूध से भर जाना नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक हाथों के लम्स (यानी छूने) का अ़ज़ीम मोजिज़ा है ।

- अगर हम किसी की चीज़ पर अमीन व मुह़ाफ़िज़ हों तो हमें अमानत का ह़क़ अदा करना चाहिए ।
- किसी काम को करने के लिए उस का बेहतर और सह़ीह़ पहलू इख़्तियार करना चाहिए ।
- या शैख़ अपनी अपनी देख के बजाए अपने साथ साथ दूसरों की ज़रूरत का भी एह़सास होना चाहिए ।
- खाने पीने और इस्तिमाल की चीज़ें ज़रूरत के वक़्त दूसरों के साथ शेर करनी चाहिएं मिल बांट कर खाने में बरकत होती है ।
- हमें चाहिए कि अगर किसी की चीज़ इस्तिमाल के लिए लें तो उसे सह़ीह़ ह़ालत में वापस करें ।
- बड़ों को चाहिए कि सारे काम छोटों से करवाने के बजाए अपनी हैसिय्यत व शान के मुत़ाबिक़ कुछ काम ख़ुद अपने हाथ से भी करें कि छोटों पर शफ़्क़त भी हो और उन की तरबिय्यत भी ।
- अगर हम छोटों की कोई बात पूरी न करना चाहें या किसी बात का जवाब देना मुनासिब न समझें तब भी हमें चाहिए कि उन्हें इस बात पर झिड़कने से गुरेज़ करें और नर्मी व शफ़्क़त के साथ बात को कोई अच्छा पहलू दे कर ख़त्म कर दें ।

बच्चों में स्क्रीन का बढ़ता हुवा रुज्हान

जदीद दौर की नित नई टेक्नोलोजी ने जहां इन्सान के लिए आसानियां पैदा कीं वहां इन्सानी ज़िन्दगी में मन्फ़ी असरात भी मुरत्तब किए। लेकिन यहां हम आप को टेक्नोलोजी के मन्फ़ी असरात के बारे में तो नहीं अलबत्ता अपने बच्चों को स्क्रीन के सह़र से निकालने के त़रीक़े ज़रूर बताएंगे।

आज वालिदैन और बच्चों के दरमियान बहुत गेप आ चुका है बच्चे मोबाइल और लेपटॉप पर इन्टरनेट की दुन्या से इस क़दर मानूस हो चुके हैं कि उन के पास वालिदैन के लिए वक़्त ही नहीं और वालिदैन ने भी ग़ैर ज़िम्मेदारी का सुबूत देते हुए उन्हें स्क्रीन के ह़वाले कर दिया है। चुनान्चे जब बच्चे हाथ से निकल गए तो सर पकड़ कर वालिदैन अब स्क्रीन से जान छुड़ाने के त़रीक़े तलाश कर रहे हैं।

इस मज़मून में मुख़्तलिफ़ टिप्स दी गई हैं जिन की मदद से आप ह़िक्मत और दानाई के साथ इस मस्अले से निकल सकते हैं। आइए वोह टिप्स जानते हैं :

ह़ुदूद मुक़र्रर करें (Set Limits)

दौरे ह़ाज़िर में स्क्रीन का इस्तिमाल तो एक ज़रूरत की शक्ल इख़्तियार कर चुका है। चुनान्चे अब आप बच्चों को सिरे से उस के इस्तिमाल से मन्अ़ तो नहीं कर सकते। लिहाज़ा इस का बेहतरीन ह़ल येह है कि आप कुछ ह़ुदूद व क़ुयूद क़ाइम करें बच्चों को बता दें कि बेटा येह येह आप इस्तिमाल कीजिए। इस के इलावा आप का काम नहीं। इन उसूलों को मुस्तक़िल त़ौर पर नाफ़िज़ करें और यक़ीनी बनाएं।

मिसाल बनें

बच्चे अक्सर बड़ों के रवय्ये की नक़्ल करते हैं इस लिए अपने स्क्रीन के इस्तिमाल का ख़याल रखें। अपने स्क्रीन के वक़्त को मह़दूद कर के पढ़ने, मशाग़िल या बाहर वक़्त गुज़ारने जैसी मुतबादल सर गर्मियों में मश्ग़ूल हो कर उन के लिए एक मिसाल बनें ताकि बच्चे

भी आप को देख कर डीजीटल डीवाइसिज़ के मुआ़मले में टाइम टेबल बना सकें।

एक जगह मुन्तख़ब कीजिए

अपने घर के हर कमरे में डीजीटल डीवाइसिज़ का इस्तिमाल हरगिज़ न करें। इस आ़दत से बच्चे भी स्क्रीन के इस्तिमाल में बेबाक होंगे और वोह भी हर जगह मोबाइल, लेपटोप के इस्तिमाल में झिजक महसूस नहीं करेंगे। लिहाज़ा इस के लिए घर में जगह मख़्सूस कर दें कि बच्चे जहां अपने डोक्यूमेन्टस और इन्टरनेट से मुतअ़ल्लिक़ काम कर सकें। इस का फ़ाइदा येह होगा कि बच्चे हर वक़्त मोबाइल लिए लिए फिरते नहीं रहेंगे। ख़ानदान के अफ़राद के साथ आमने सामने बात चीत को फ़रोग़ दीजिए उस वक़्त कोई स्क्रीन को न देखे।

मुतबादिल सर गर्मियां फ़राहम करें

स्क्रीन टाइम को तब्दील करने के लिए मुख़्तलिफ़ क़िस्म की मश्ग़ूल सर गर्मियां पेश करें, जैसे आर्टस और दस्तकारी, खेल, बोर्ड गेम्ज़ या खेल कूद। बच्चों की हौसला अफ़्ज़ाई करें कि वोह अपनी दिल चस्पियां और मशाग़िल तलाश करें ताकि वोह लुत्फ़ अन्दोज़ होने वाली सर गर्मियां तलाश करें।

औक़ात मुक़र्रर करें

दिन के दौरान मख़्सूस औक़ात क़ाइम करें। जब स्क्रीन की ह़द बन्द हो उस वक़्त बच्चे किसी भी तौ़र पर उसे इस्तिमाल न करें जैसे खाने के दौरान, सोने से पहले या ख़ानदानी सर गर्मियों के दौरान। उस वक़्त को अपने बच्चों से जोड़ने और ख़ानदानी रिश्तों को मज़बूत करने के लिए इस्तिमाल करें।

तालीमी मवाद फ़राहम करें

जब बच्चे स्क्रीन में मगन हों तो उन की हौसला अफ़्ज़ाई करें कि वोह तालीमी और उ़म्र के लिहाज़ से मोज़ूं मवाद के साथ मश्ग़ूल हों। ऐसी एप्स, गेम्ज़ और वीडियोज़ तलाश करें जो सीखने, तख़्लीक़ी सलाहिय्यतों और तन्क़ीदी सोच की महारत को फ़रोग़ देते हैं जिस में बच्चों की प्रोफ़ेशनल स्किल्ज़ को बढ़ाने के मवाक़ेअ़ हों।

खुले दिल से बात चीत करें

अपने बच्चों से स्क्रीन टाइम को दीगर सर गर्मियों के साथ मुतवाज़न करने की अहमिय्यत के बारे में बात करें। ज़रूरत से ज़ियादा स्क्रीन इस्तिमाल करने के मन्फ़ी असरात को समझने में उन की मदद करें, जैसे कि नज़र कमज़ोर होने, ज़ेहन पर बुरा असर और ऐसे दीगर नुक़्सानात से उन्हें आगाह करें।

स्क्रीन फ़्री बेड टाइम रूटीन क़ाइम करें

सोने के वक़्त का एक आराम देह मामूल बनाएं जिस में स्क्रीन शामिल न हो। बच्चों को सोने से पहले आराम करने और नींद के बेहतर मेयार को फ़रोग़ देने के लिए पढ़ने, तिलावत व नात सुनने, कहानी सुनाने, क्वीज़ मुक़ाबला जैसी सर गर्मियों की हौसला अफ़्ज़ाई करें।

निगरानी और जांच पड़ताल

अपने बच्चों के स्क्रीन के इस्तिमाल पर नज़र रखें और अगर ज़रूरी हो तो मुदाख़लत करें। स्क्रीन टाइम को ट्रेक करने और ना मुनासिब मवाद तक रसाई रोकने के लिए पेरन्टल कन्ट्रोल्ज़ और मोनीटरिंग एप्स का इस्तिमाल करें। इन हिक्मत अ़मलियों को मुस्तक़िल तौ़र पर नाफ़िज़ करने और एक मुआ़विन माहौल फ़राहम करने से, आप बच्चों को स्क्रीन के ग़ैर ज़रूरी इस्तिमाल से रोक सकते हैं।

हमें उम्मीद है कि वालिदैन इन टिप्स पर अ़मल कर के अपने बच्चों को स्क्रीन के बे जा इस्तिमाल से बचा सकते हैं अल्लाह पाक हमें अपनी औलाद की अच्छी तरबिय्यत करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और हमारी औलाद को नेक बनाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

उमूरे ख़ानादारी की तरबियत

हर मां चाहती है कि ज़माने के मसाइबो आलाम उस की औलाद तक न पहुंचें, वोह चाहती है कि उस की औलाद को हर आसाइश मिले बिल ख़ुसूस बेटी के मुआ़मले में मां बहुत ह़स्सास रहती है और उसे बेहतरीन तालीम दिलवाने की कोशिश करती है, स्कूल, कोलेज, मद्रसे से वापसी पर उस के लिए खाना तय्यार रखती है, किसी काम को हाथ नहीं लगाने देती, जब इम्तिह़ानात का सिलसिला होता है तो मां की ह़स्सासिय्यत मज़ीद बढ़ जाती है वोह अपनी बेटी के खाने पीने का जहां ख़याल रखती है वहीं उसे घर के हर काम से भी बरियुज़्ज़िम्मा कर देती है अपनी बेटी की थकावट का बहुत एह़सास करती है।

याद रखिए ! जहां मां अपनी बेटी को दुन्या के उतार चढ़ाओ सिखाती, मुआ़शरे में कैसे रहना है लोगों को कैसे Face करना है सिखाती है, वहीं ज़रूरत इस अम्र की भी है कि माएं अपनी बेटियों को प्यार महब्बत से उमूरे ख़ानादारी भी सिखाती रहें, क्यूंकि हमारे मुआ़शरे में अक्सर ऐसा ही होता है कि बेटी को तालीम तो सिखाई जाती और तालीम मुकम्मल होते ही उस का अच्छा और मुनासिब रिश्ता अगर आ जाए तो बिग़ैर किसी ताख़ीर के उस की शादी कर दी जाती है, और इस दौरान उस बेटी को इतना मौक़अ़ भी नहीं मिल पाता कि वोह घरेलू काम सीख सके क्यूंकि दौरे त़ालिबे इल्मी में तो उस बेटी की थकावट का एह़सास रखते हुए और बच्ची बच्ची कहते हुए उस को खाना पकाने, उमूरे ख़ानादारी वग़ैरा से दूर रखा जाता रहा, मगर फिर जब उस बेटी का अच्छा रिश्ता आते ही उस की शादी कर दी गई तो अब उस बेटी को खाना पकाना, उमूरे ख़ानादारी न आने के सबब सुसराल में शर्मिन्दगी का सामना करना पड़ता है।

इसी लिए ज़रूरी है कि बेटी की तालीमो तरबियत पर तवज्जोह देते हुए उसे शादी से पहले ही प्यार व महब्बत से घरदारी के काम सिखाना शुरूअ़ कर दिए जाएं कि शादी के बाद उसे किसी क़िस्म की परेशानी का सामना न हो, ऐसा भी रवय्या न रखा जाए कि सारा

फ़ोकस उमूरे ख़ानादारी की जानिब कर दिया जाए और बेटी को तालीमो तरबियत से ही महरूम रख दिया जाए और न ही ऐसी सख़्ती की जाए कि बेटी उन उमूरे ख़ानादारी से ही बेज़ार हो जाए और उन कामों से फ़रार के रास्ते ढून्डती रहे, तालीम भी दी जाए उस के लिए वक़्त भी दिया जाए और उसी उम्र में घरेलू काम काज भी महब्बत व हिक्मते अमली से सिखाए जाएं।

अपने घर का काम काज ख़ुद कर लेना औरत के लिए किसी शर्म का बाइस नहीं बल्कि घर की ख़ुशियों और इज़्ज़त का नुस्ख़ा है। ख़ुद रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस साहिबज़ादी हज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا जो कि ख़ातूने जन्नत हैं, उन का भी येही मामूल था कि वोह अपने घर का सारा काम काज ख़ुद अपने हाथों से किया करती थीं कुंवें से पानी भर कर और अपनी मुक़द्दस पीठ पर मश्क लाद कर पानी लाया करती थीं, ख़ुद ही चक्की चला कर आटा भी पीस लेती थीं इसी वजह से उन के मुबारक हाथों में कभी कभी छाले पड़ जाते थे इसी तरह मुसलमानों के पहले ख़लीफ़ा हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की साहिबज़ादी हज़रते अस्मा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के मुतअ़ल्लिक़ भी रिवायत है कि वोह अपने ग़रीब शौहर हज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के यहां अपने घर का सारा काम काज अपने हाथों से कर लिया करती थीं यहां तक कि ऊंट को खिलाने के लिए बाग़ों में से खजूरों की गुठलियां चुन चुन कर अपने सर पर लाती थीं और घोड़े के लिए घास चारा भी लाती थीं। (जन्नती ज़ेवर, स. 60)

लड़कियों को उमूरे ख़ानादारी में येह येह चीज़ें सिखानी चाहिएं : स्वेटर बुनना, ऊनी और सूती मोज़े बनाना, टोपियां और कपड़े सीना, हाथ से टांका लगाना वग़ैरा।

खाने में रोटी, हर क़िस्म की दाल, सब्ज़ियां, मुर्ग़ी, गोश्त, कलेजी, क़ीमा, पकोड़े, समोसे, पुलाव वग़ैरा आम रूटीन के लिए बनाना आता हो, और जब ख़ुसूसियत के साथ कुछ बनाना हो या किसी की दावत हो तो उस के लिए भी मुख़्तलिफ़ डिशिज़ बनाना आती हों जैसा कि बिरयानी, क़ोरमा, कड़ाई, कोफ़्ते, और दीगर मुरव्वजा खाने। और ऐसे खाने जो किसी ख़ानदान में ज़ौक़ो शौक़ से खाए जाते हों जैसा कि हिन्द में पंजाबी ज़बान से तअ़ल्लुक़ रखने वालों में साग, मकई की रोटी पसन्द की जाती है और शौक़ से खाई जाती है, इसी तरह दीगर ज़बानों से तअ़ल्लुक़ रखने वालियां अपने ख़ानदान की नौइय्यत के हिसाब से खाने पकाने के मुआमलात पर ग़ौर कर सकती हैं। ऐसे ही अचार, चटनी मुरब्बे वग़ैरा बनाना आता हो कि येह हर घर में ही शौक़ से खाए जाते हैं।

मशरूबात में मौसम को पेशे नज़र रखते हुए मशरूबात बनाने आते हों। जैसा कि गर्मियों में लस्सी, गुड़, सत्तू का शरबत, लीमूं पानी और आम केले वग़ैरा का शेक काफ़ी ज़ियादा इस्तिमाल किया जाता है।

बीमारी में घर में अचानक कोई हादिसा पेश आ जाए जैसा कि गर्म तेल से, आग से जल जाना वग़ैरा, किसी चीज़ से जिस्म का कोई हिस्सा कट जाए और ख़ून बहे, हाथ, पांव कमर वग़ैरा में मोच आ जाए, कोई बच्चा या बड़ा गिर जाए, तो फ़स्ट एड कैसे दिया जाए येह तरीक़े भी मां को अपनी बेटी को लाज़िमी सिखाने चाहिएं।

इसी तरह घर के तमाम बरतनों को धो मांझ कर किसी अलमारी या ताक़ पर उल्टा कर के रख देना और फिर दोबारा उस बरतन को इस्तिमाल करना हो तो फिर उस बरतन को बिग़ैर धोए स्तिमाल न करना। रोज़ाना झाड़ू पोछा करने के इलावा हफ़्ता या दस दिनों में एक दिन घर की मुकम्मल सफ़ाई के लिए मुक़र्रर करना कि उसी दिन रूटीन के कामों के साथ साथ पूरे मकान की सफ़ाई करे।

लड़कियां इन कामों और हुनरों को अगर सलीक़े से सीख लें तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ऊमूरे ख़ानादारी के हवाले से वोह परेशान न होंगी।

इस्लामी बहनों के शरई मसाइल

1 एलोवेरा (Aloe vera) खाना या उस का रस पीना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि एलोवेरा (Aloe vera) खाना या इस का रस पीना ह़लाल है ?

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

एलोवेरा (Aloe vera) जिसे ऊर्दू में क्वार गन्दल या घेकुवार कहते हैं, ज़मीन में उगने वाली सब्ज़ियों की एक क़िस्म है, जिस के पत्ते लम्बे, मोटे और नोकीले होते हैं और इन से लेसदार मादा निकलता है। इसे खाना या इस का रस पीना ह़लाल है कि

(अलिफ़) इन्दश्शरअ़ जिस चीज़ की मुमानअ़त क़ुरआनो सुन्नत से साबित हो और उस की ह़ुर्मत व मुमानअ़त पर दलीले शरई क़ाइम हो सिर्फ़ वोही ह़राम व ममनूअ़ है, बक़िय्या सब चीज़ें ह़लाल व मुबाह़ हैं और एलोवेरा के ह़राम या ममनूअ़ होने पर कोई दलीले शरई क़ाइम नहीं है लिहाज़ा क़ुरआनो ह़दीस में इस की ह़ुर्मत की दलील न होना ही इस की ह़िल्लत की दलील है।

(बा) नबातात के मुतअ़ल्लिक़ शरीअ़त का उसूल येह है कि ज़मीन से उगने वाली वोह नबातात जो नशाआवर, ज़हरीली और ज़रर देने वाली न हों उन का खाना, जाइज़ है। और एलोवेरा न तो नशाआवर है, न ज़हरीली और न ही ज़रर देने वाली है लिहाज़ा इस का खाना, जाइज़ है और अत़िब्बा ने इस के मुतअ़द्दद फ़वाइद भी बयान किए हैं।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 नापाकी की ह़ालत में आयत पर शीशा टेप लगा कर छूना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि अगर किसी रिसाले या किताब में क़ुरआनी आयात या इस के तर्जमे मौजूद हों तो क्या नापाकी की ह़ालत में इस पर शीशा टेप लगा कर उसे छू सकते हैं ?

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

क़वानीने शरइय्या की रू से ह़ुक्म येह है कि नापाकी की ह़ालत में क़ुरआने पाक की आयात या इन के तर्जमे को ह़ाइल किए बिग़ैर छूना नाजाइज़ो ह़राम है अगर्चे येह आयात मुस्ह़फ़ शरीफ़ में हों या मुस्ह़फ़ शरीफ़ के इ़लावा किसी और चीज़ मसलन दीवार, किताब या रिसाले वग़ैरा में। आयत पर शीशा टेप चिपका देने से येह टेप ह़ाइल नहीं बन सकेगी कि येह टेप आयत के साथ चिपक कर उस के ताबेअ़ हो जाती है और येह दोनों (आयत और टेप) शए वाह़िद की त़रह़ हो जाते हैं जब कि ह़ाइल के लिए ज़रूरी है कि दोनों (छूने वाले और आयत) में से किसी के भी ताबेअ़ न हो।

इस की नज़ीर फ़ुक़हाए किराम का बयान कर्दा येह मस्अला है कि क़ुरआने पाक को ऐसे ग़िलाफ़ के साथ छूना जाइज़ नहीं जो मुस्ह़फ़ शरीफ़ के साथ सिलाई कर दिया गया हो कि येह ग़िलाफ़ और मुस्ह़फ़ शरीफ़ शए वाह़िद की त़रह़ हो चुके हैं, जब सिलाई किया जाने वाला ग़िलाफ़ शए वाह़िद की त़रह़ हो चुका है तो आयते करीमा के साथ मुकम्मल त़ौर पर चिपक जाने वाली शिशा टेप तो बदरजए ऊला शए वाह़िद के ज़ुमरे में शुमार होगी।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

सफ़रुल मुज़फ़्फ़र के चन्द अहम वाक़िआत

तारीख़ / माह / सिन	नाम / वाक़िआ	मज़ीद मालूमात के लिए पढ़िए
7 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 661 हिजरी	यौमे उ़र्स मश्हूर वलियुल्लाह ह़ज़रते बहाउद्दीन ज़करिय्या मुल्तानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ	फ़ैज़ाने मदीना सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1439, 1440 हिजरी और "फ़ैज़ाने बहाउद्दीन ज़करिय्या मुल्तानी"
11 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1385 हिजरी	यौमे विसाल आला ह़ज़रत के पोते, ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद इब्राहीम रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ	फ़ैज़ाने मदीना सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1439 हिजरी और "134 ख़ुलफ़ाए आला ह़ज़रत"
14 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1165 हिजरी	यौमे उ़र्स सिन्ध के मश्हूर वली व सूफ़ी शाइर ह़ज़रत शाह अ़ब्दुल लत़ीफ़ भटाई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ	फ़ैज़ाने मदीना सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1440 हिजरी
17 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1398 हिजरी	अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद इल्यास क़ादिरी की **वालिदए मोह़तरमा** رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہَا का यौमे विसाल	फ़ैज़ाने मदीना सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1439 हिजरी और "तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत, सफ़ह़ा 15"
20 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 465 हिजरी	यौमे उ़र्स हुज़ूर दाता गन्ज बख़्श ह़ज़रत सय्यिद अ़ली बिन उ़स्मान हिजवेरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ	फ़ैज़ाने मदीना सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1439, 440 हिजरी और "फ़ैज़ाने दाता अ़ली हिजवेरी"
25 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1340 हिजरी	यौमे विसाल आला ह़ज़रत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत इमामे अहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान बरेल्वी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ	फ़ैज़ाने मदीना सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1439 ता 1445 हिजरी और "फ़ैज़ाने इमामे अहले सुन्नत"
28 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1034 हिजरी	यौमे विसाल ह़ज़रत मुजद्दिदे अल्फ़े सानी शैख़ अह़मद फ़ारूक़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ	फ़ैज़ाने मदीना सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1439 हिजरी और "तज़किरए मुजद्दिदे अल्फ़े सानी"
29 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1356 हिजरी	यौमे विसाल ताजदारे गोलड़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा पीर सय्यिद महर अ़ली शाह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ	फ़ैज़ाने मदीना सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1442 हिजरी और "फ़ैज़ाने पीर महर अ़ली शाह"
सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 04 हिजरी	शोहदाए बिअरे मऊ़ना (70 सह़ाबए किराम को बिअरे मऊ़ना के मक़ाम पर नज्द के कुफ़्फ़ार ने शहीद कर दिया)	फ़ैज़ाने मदीना सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1444 हिजरी और "सीरते मुस्त़फ़ा, सफ़ह़ा 394"
सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 07 हिजरी	फ़त्ह़े ख़ैबर : ज़मानए रिसालत में 1600 सह़ाबा ने 20 हज़ार से ज़ाइद कुफ़्फ़ार का मुक़ाबला किया, 15 सह़ाबा शहीद हुए।	फ़ैज़ाने मदीना सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1439 हिजरी और "सीरते मुस्त़फ़ा, सफ़ह़ा 380"

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

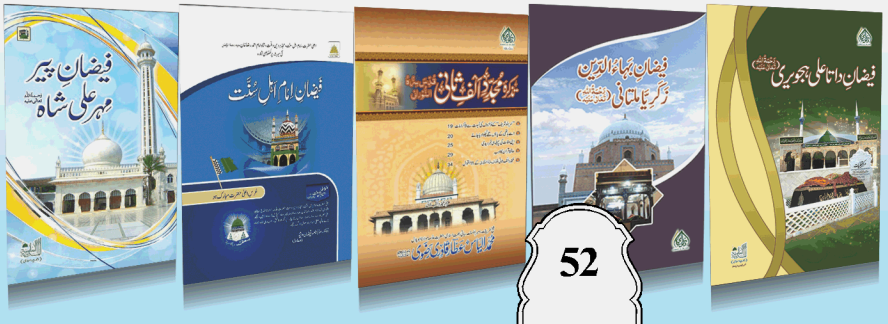

सफ़रुल मुज़फ़्फ़र की मुनासिबत से इन कुतुबो रसाइल का मुत़ालआ़ कीजिए।

नमाज़ के चन्द ज़रूरी मसाइल

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

ह़दीस शरीफ़ में है : जो शख़्स रुकूअ़ व सुजूद मुकम्मल नहीं करता नमाज़ उसे कहती है : "अल्लाह तुझे हलाक करे जिस त़रह़ तू ने मुझे ज़ाएअ़ किया, फिर उस नमाज़ को पुराने कपड़े की त़रह़ लपेट कर नमाज़ी के मुंह पर मार दिया जाता है।"(شعب الایمان،3/144،حدیث:3140ملتقطا) नीज़ एक रिवायत में है : बद तरीन चोर वोह है जो नमाज़ में चोरी करे। अ़र्ज़ की गई : नमाज़ का चोर कौन है ? फ़रमाया : वोह जो रुकूअ़ व सुजूद मुकम्मल न करे। (مسند احمد،8/386،حدیث:22705) आज कल नमाज़ में की जाने वाली उ़मूमी ग़लतियों (Common Mistakes) में से कुछ को मद्दे नज़र रखते हुए चन्द मदनी फूल पेशे ख़िदमत हैं :

❁ रुकूअ़ में झुकने की कम अज़ कम ह़द येह है कि हाथ बढ़ाए तो घुटनों तक पहुंच जाए जब कि मुकम्मल रुकूअ़ येह है कि पीठ सीधी बिछा दे। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 3, 1/513 मफ़हूमन) ❁ रुकूअ़ के लिए झुकना नमाज़ में फ़र्ज़ है और वहां कुछ ठहरना यानी इत़मीनान से रुकूअ़ करना वाजिब। (मिरआतुल मनाजीह़, 2/75) ❁ किसी नर्म चीज़ मसलन घास, रूई, क़ालीन वग़ैरा पर सजदा करने की सूरत में पेशानी और नाक की हड्डी को इतना दबाना ज़रूरी है कि दबाने से मज़ीद न दबे। अगर पेशानी इतनी न दबी तो नमाज़ ही न होगी जब कि नाक की हड्डी इतनी न दबी तो नमाज़ मकरूहे तह़रीमी होगी और उसे लौटाना वाजिब होगा। (आ़लमगीरी, 1/70) ❁ सजदे में पांव की एक उंगली का पेट ज़मीन पर लगना फ़र्ज़ है और हर पांव की अक्सर उंगलियों का पेट ज़मीन पर लगना वाजिब है। (फ़तावा रज़विय्या, 3/253 मुलख़्ख़सन) ❁ रुकूअ़ के बाद सीधा खड़ा होना और दो सजदों के दरमियान सीधा बैठना वाजिब है नीज़ इस दौरान कम अज़ कम एक बार سُبْحٰنَ اللّٰه कहने की मिक़्दार ठहरना वाजिब है। (बहारे शरीअ़त, 518 मुलख़्ख़सन, नमाज़ के अह़काम, स. 218) ❁ एक रुक्न में तीन मरतबा खुजाने से नमाज़ टूट जाती है, यानी एक बार खुजा कर हाथ हटाया फिर दूसरी बार खुजा कर हटाया अब तीसरी बार जैसे ही खुजाएगा नमाज़ टूट जाएगी और अगर एक बार हाथ रख कर चन्द बार ह़रकत दी तो एक ही मरतबा खुजाना कहा जाएगा। (बहारे शरीअ़त, 1/614 मुलख़्ख़सन) ❁ इमाम से पहले मुक़्तदी का रुकूअ़ व सुजूद वग़ैरा में चला जाना या इस से पहले सर उठाना (मकरूहे तह़रीमी है) (बहारे शरीअ़त, 1/629) ❁ नमाज़ में चेहरा फेर कर इधर उधर देखना मकरूहे तह़रीमी है। जब कि बिग़ैर चेहरा फेरे बिला ह़ाजत इधर उधर देखना मकरूहे तन्ज़ीही है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 3, 1/626 मुलख़्ख़सन) (नमाज़ के मसाइल तफ़्सीलन सीखने के लिए बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 3 और "नमाज़ के अह़काम" का मुत़ालआ़ फ़रमाइए)

मक्तबतुल मदीना की किताबें घर बैठे ह़ासिल करने के लिए इस नम्बर 9978626025 पर Call SMS WhatsApp करें

مکتبۃ المدینہ MAKTABA TUL MADINAH

दीने इस्लाम की ख़िदमत में आप भी दावते इस्लामी इन्डिया का साथ दीजिये और अपनी ज़कात, सदक़ाते वाजिबा व नाफ़िला और दीगर मदनी अ़त़िय्यात (Donation) के ज़रीए माली तआ़वुन कीजिये !

आप के चन्दे को किसी भी जाइज़, दीनी, इस्लाही (Reformatory), फ़लाही (Welfare) ख़ैर ख़्वाही और भलाई के काम में ख़र्च किया जा सकता है

PRINTER, PUBLISHER, EDITOR AND OWNER

HAMJANI SHABBIRBHAI RAJAKBHAI - BUTVALA'S CHAWL, NR. CENTRAL WARE HOUSE, DANILIMDA, AHMEDABAD - 380028. (GUJARAT)

PLACE OF PRINTING : MODERN ART PRINTERS - OPP : PATEL TEA STALL, DABGARWAD NAKA, DARIYAPUR, AHMEDABAD - 380001.

PLACE OF PUBLICATION : BUTVALA'S CHAWL, NR. CENTRAL WARE HOUSE, DANILIMDA, AHMEDABAD-380028. (GUJARAT) INDIA.